RNI No : MPHIN/2022/82783
कुल पृष्ठ : 52, मूल्य : 50 रुपए
वर्ष 02, अंक 11 मासिक पत्रिका
25 नवम्बर 2023

हमारा देश हमारा अभिमान

हर-हर महादेव

दिल्ली-एनसीआर में हवा के जरिये...

जहर अंदर कब तक खींचते रहेंगे लोग?

हमारा देश हमारा
अभिमान परिवार की ओर
से दीपोत्सव की
हार्दिक
शुभकामनाएं

हमारा देश
हमाराअभिमान

25 नवम्बर 2023

वरिष्ठ संरक्षक मंडल

- अनन्त श्री विभूषित श्रीमद जगद्गुरु श्री राम स्वरूपचार्य जी महाराज कामदगिरि पीठाधीश्वर चित्रकूट धाम
- श्री महामंडलेश्वर रामप्रिय दास
- श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर अनिरुद वन जी, श्री धूमेस्वर धाम
- श्री डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा
- डॉ. श्रीमती शालिनी कौशिक
- श्री नागेंद्रनाथ सुरेंद्र नाथ चौबे

संरक्षक मंडल

- श्री लोकेश चतुर्वेदी
- श्री डॉ. दिनेश उपाध्याय
- श्री अरविंद जैन
- श्री प्रदीप कुमार शर्मा
- श्री शिवदयाल धाकड़
- श्री अरुण कांत शर्मा
- श्री महेश पुरोहित
- श्री विनोद भारद्वाज, अधिवक्ता ग्वालियर हाईकोर्ट,
- श्री मनोज भारद्वाज
- श्री अनिल जैन
- श्री निर्मल वासवानी
- श्री विद्याभूषण शर्मा
- श्रीमती अर्चना बाजपेयी
- एडवोकेट श्रीमती रिचा पांडेय (सुप्रीम कोर्ट)
- श्री के.एल.दलवानी
- श्री राकेश कुमार सगर
- श्री जयराज कुबेर
- श्री अभिनव पल्लव
- श्री बृजेश श्रीवास्तव
- श्री दीपक कुमार शुक्ला
- श्रीमति निवेदिता गुप्ता
- श्री विनोद कुमार बांगडे
- श्री विनायक शर्मा
- कमांडों कमल किशोर (पूर्व सांसद)

संपादक : मनोज चतुर्वेदी

पंकज दीक्षित
प्रमुख परामर्शदाता

कानूनी सलाहकार
- एडवोकेट अनिल शुक्ला शासकीय अधिवक्ता, ग्वालियर हाईकोर्ट
- एडवोकेट एस.के. पाठक, ग्वालियर
- दीपेंद्र कुमार पाण्डेय, एडवोकेट, उच्च न्यायालय

विशेष संवाददाता
- रवि परिहार • रविकांत शर्मा

ब्यूरो : अविनाश (उज्जैन संभाग)

छिंदवाड़ा ब्यूरो : जितेंद्र चौरे

मुम्बई ब्यूरो (महाराष्ट्र)
सचिंदर शर्मा (फ़िल्म डायरेक्टर)

सलाहकार

- डॉ सुनील शर्मा, नेत्र रोग विशेषज्ञ
- श्री डॉ. मुकेश चतुर्वेदी
- डॉ. दिनेश प्रसाद (हड्डी रोग सर्जन)
- श्री अनिल दुबे
- श्री विकास चतुर्वेदी
- श्री सुरेश शर्मा
- श्री नारायणदास गुप्ता
- श्री पीयूष श्रीवास्तव
- पंडित श्री चंद्रशेखर शास्त्री
- श्री बृज मोहन आर्य
- श्री विवेक शर्मा
- श्री अशोक कुमार वर्मा
- श्री आनंद कुमार
- श्रीमती रितु मुदगल
- श्री कुंज बिहारी शर्मा
- सुश्री पूजा मावई
- श्री संदीप कुमार पांडेय
- श्री मनोज सिंह
- प्रदीप यादव
- निरंजन शर्मा
- विनीत गोयल
- डॉ. सुधीर राजौरिया, हड्डी रोग विशेषज्ञ
- आशीष त्रिवेदी
- डॉक्टर अशोक राजौरिया हेमाटोलाजिस्ट और बोन मैरो ट्रांसप्लांट एक्सपर्ट
- डॉक्टर कमल कटारिया
- यशवंत गोयल
- दीपक भार्गव
- अमित जैन इंदौर
- सुरजीत परमार
- संजू जादौन
- डॉक्टर हिमांशु डेंटिस्ट

ब्यूरो राजस्थान
सुभाष सोरल (फ़िल्म निर्माता) कोटा

ब्रजेश जैन साक्षात्कार व्यवस्थापक और विज्ञापन संवाददाता इंदौर

संवाददाता : संदीप पाटिल, इंदौर

मार्केटिंग प्रमुख : शैलेन्द्र जैन

मार्केटिंग मैनेजर
• सुनील • हरशूल

डिजाइन : मनोज पंवार

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक मनोज कुमार चतुर्वेदी द्वारा कंचन ऑफसेट डी-1/63, सेक्टर-4, विनय नगर ग्वालियर- फोन नं. 0751-2481433, (म. प्र.) से मुद्रित एवं शिव कॉलोनी गली नं. 4 , रेलवे स्टेशन के पीछे, तहसील डबरा, जिला ग्वालियर, (मध्यप्रदेश) प्रकाशित। संपादक-मनोज कुमार चतुर्वेदी । (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र ग्वालियर रहेगा।)

विवरणिका

संपादकीय	.....	02
शुभाशीष	.....	03
कवर स्टोरी	.....	04-05
प्रदेश	.....	06-07
प्रदेश	.....	08-09
प्रदेश	.....	10
अध्ययन	.....	12
देश	.....	13
इन्दौर	.....	16
हमारा ग्वालियर	.....	17
प्रदेश	.....	18
इतिहास	.....	19
देश	.....	20-21
देश	.....	22
प्रदेश	.....	23
गौरव	.....	27
नवरात्र विशेष	.....	24-25
देश	.....	28-29
राजस्थान	.....	33
देश	.....	34-35
देश-विदेश	.....	37
फेस्टिव सीजन	.....	38
खेल	.....	39
सेहत	.....	42-43
धर्म	.....	44-45
ग्लैमर	.....	46-47-48

48
प्रभाष करेंगे अनुष्का से शादी

संपादकीय

बढ़ते कैंसर रोगी... प्रदूषण काल में बढ़े कैंसर को रोकने की चुनौती..?

भारत में कैंसर रोगियों के आंकड़ों में बीते कुछ बर्षों में तेजी से उछाल आया है। जबकि, एक वक्त ऐसा भी था। जब, मात्र कुछ ही लाख कैंसर रोगी पूरे देश में होते हैं। अब ये आंकड़ा कोई एकाध लाख तक नहीं, बल्कि कई लाखों में जा पहुंचा है। आमजन में अक्सर ऐसी धारणाएं रही हैं कि कैंसर मुख्यतः तंबाकू, खैनी-गुटखा या शराब के सेवन से ही होता है। पर, कैंसर अब इन वजहों तक ही सीमित नहीं रहा? इस खतनाक बीमारी ने बड़ा विस्तार ले लिया है। कैंसर अब प्रदूषण के चलते भी विशाल मात्रा में होने लगा है। वायु प्रदूषण से सिर्फ अस्थमा, हृदय संबंधी डिजीज, स्किन एलर्जी या आंखों की बीमारियां ही नहीं होती, बल्कि जानलेवा कैंसर भी होले लगा है। इसलिए यहां जरुरी हो जाता है कि वायु प्रदूषण से फैलने वाले कैंसर के प्रति ज्यादा से ज्यादा देशवासियों को जागरुकता किया जाए और प्रत्येक हंथकंड़ों को अपनाकर घरों-घरों तक जागरुकता फैलानी चाहिए। इस काम में सरकारों के साथ-साथ आमजन को भी भागीदारी निभानी होगी। धुंध, प्रदूषित काले बादल व प्रदूषण की मोटी चादर इस वक्त कई शहरों पर चढ़ी हुई है जिसमें दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र सबसे अव्वल स्थान पर है जहां का एक्यूआई लेबर गंभीर स्थिति को भी छलांग लगा चुका है। दिल्ली के अलावा देश के बाकी महानगरों का भी हाल ज्यादा अच्छा नहीं है, वहां भी लोगों को सांस लेना दूभर हो रहा है। अस्पतालों में मरीजों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है। बहरहाल, कैंसर अब नए-नए रुप में उभर रहा है जिसमें दूषित वायु प्रदूषण अहम भूमिका में है। हेल्थ एक्सपर्ट्स की मानें तो विषाक्त और दमघोंटू प्रदूषण कई तरीके से कैंसर को जन्म दे रहा है। रिपोर्टस् बताती हैं कि प्रदूषण जब शरीर में घुसता है, तो वो सबसे पहले अंदरुनी कोशिकाओं यानी डीएनए पर प्रहार करके उन्हें डैमेज करता है जो आगे चलकर कैंसर का प्रमुख कारण बनता है।

मनोज चतुर्वेदी
संपादक

शुभाशीष

देश को पुनः विश्व गुरु बनाने के संकल्प को सिद्ध करने के पथ पर आरएसएस

भारत के प्रत्येक कुटुंब में भारतीय जीवन मूल्यों एवं सांस्कृतिक मूल्यों को हमें अपनी आगे आने वाली पीढ़ी को सौंपने का गम्भीर प्रयास करना चाहिए। प्रत्येक भारतीय परिवार को अपने जीवन में दो कार्य आवश्यक रुप से करने चाहिए। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों के बीच चल रही रस्साकशी, रुस-यूक्रेन के बीच पिछले लम्बे समय से लगातार चल रहे युद्ध एवं पिछले एक माह से भी अधिक समय से पूर्व प्रारम्भ हुए हमास इजराइल युद्ध के बीच राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी मंडल की बैठक दिनांक 5 नवम्बर 2023, रविवार, को प्रातः 9 बजे भुज, गुजरात में प्रारम्भ हुई। बैठक का शुभारम्भ परम पूज्य सर संघचालक डॉक्टर मोहन जी भागवत और सर कार्यवाह श्री दत्तात्रेय जी होसबाले ने भारत माता के चित्र के समक्ष पुष्पांजलि अर्पित करके किया। बैठक में देश भर से संघ की दृष्टि से 45 प्रांतों एवं 11 क्षेत्रों के माननीय संघचालक, कार्यवाह, प्रचारक, अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य तथा कुछ विविध संगठनों के अखिल भारतीय संगठन मंत्रियों सहित लगभग 382 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उक्त बैठक में संघ शताब्दी की दृष्टि से कार्य विस्तार के लिए बनी योजना की समीक्षा एवं संघ प्रशिक्षण अभ्यास क्रम विषयों पर विस्तार से चर्चा सम्पन्न हुई। साथ ही, परम पूज्य सर संघचालक डॉक्टर मोहन जी भागवत के विजया दशमी उदबोधन में चर्चा में आए कुछ मुख्य विषयों जैसे प्रकृति विरुद्ध जीवन शैली, जलवायु परिवर्तन का विश्व पर प्रभाव, सुरक्षा, स्व आधारित युगानुकुल नीति आदि विषयों पर भी विस्तार से चर्चा की गई। सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, गौ सेवा, ग्राम विकास व अन्य गतिविधियों में चल रहे प्रयासों के बारे में भी प्रतिनिधियों से जानकारी ली गई। यह बैठक 7 नवम्बर 2023 को सायंकाल 6 बजे सम्पन्न हुई। विश्व के कई देशों, विकसित देशों सहित, में सामाजिक तानाबाना ध्वस्त हो चुका है। अमेरिका सहित विश्व के कई देशों में आज “सिंगल पेरेंट” की अवधारणा जोर पकड़ती जा रही है।

डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा
संरक्षक

दिल्ली-एनसीआर में हवा के जरिये...

जहर अंदर कब तक खींचते रहेंगे लोग?

पराली के प्रदूषण से ''दीपावली'' के गौरवपूर्ण सांस्कृतिक अस्तित्व एवं अस्मिता को धुंधलाने की बजाय पराली का स्थायी हल निकाला जाना चाहिए। पराली के प्रदूषण को पटाखों के प्रदूषण के नाम पर ढकने की कुचेष्टा से बचना चाहिए।

इस वर्ष फिर से दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में पराली एवं वायु प्रदूषण से उत्पन्न दमघोटू माहौल का संकट जीवन का संकट बनता जा रहा हैं। दिल्ली-एनसीआर में हवा की क्वालिटी बेहद खराब यानी जानलेवा बनती जा रही है। अभी सर्दी शुरु भी नहीं हुई है, इस मौसम में ऐसा दूसरी बार हुआ है। हालांकि तात्कालिक वजहों से कभी-कभार राहत भले मिल जाए, लेकिन दिल्ली--एनसीआर ही नहीं, उत्तर भारत के बड़े इलाके में रहने वाले जनजीवन के लिए यह एक स्थायी समस्या एवं जीवन संकट बनती जा रही है, जो बच्चों, बुजुर्गों और सांस की बीमारियों से पीड़ित लोगों के लिए बेहद खतरनाक एवं जानलेवा साबित हो रही है। सरकारें भले ही इस मुद्दे को लेकर गंभीर नजर आने लगती हैं, भले ही इस जटिल से जटिलतर होती समस्या के समाधान का पूरा एक्शन प्लान तैयार भी है लेकिन इसके प्रभावी परिणाम देखने को नहीं मिलना, कहीं-ना-कहीं सरकार की नाकामी को ही दर्शा रहा है। दिल्ली और पंजाब सरकार ने अनेक लुभावने तर्क एवं तथ्य दिये, सरकारें जो भी तर्क दें, पर हकीकत यही है कि लोगों का दम घुट रहा है। अगर वे सचमुच इससे पार पाने को लेकर गंभीर हैं, तो वह व्यावहारिक धरातल पर दिखना चाहिए।

वायु की गुणवत्ता का खराब होना एवं प्रदूषण का ऐसा विकराल जाल है जिसमें मनुष्य सहित सारे जीव-जंतु फंसकर छटपटा रहे हैं, जीवन सांसों पर छाये संकट से जूझ रहे हैं। अस्पतालों के बाहर लम्बी कतारें देखने को मिलने लगी हैं। सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड के अनुसार लोगों को अगले कुछ दिनों तक खराब वायु में कमी आने की उम्मीद नहीं है। मौसम विभाग के अनुसार, अगर वायु गुणवत्ता शून्य से 50 के बीच रहे तो इसे 'अच्छा' माना जाता है। अगर एक्यूआई 51 से 100 के बीच रहे तो इसे 'संतोषजनक' और 101 से 200 के बीच एक्यूआई को 'मध्यम' माना जाता है। अगर एक्यूआई 201 से ऊपर चला जाए और 300 तक रहे तो इसे 'खराब', 301 से 400 के बीच रहे तो 'बहुत खराब' और अगर 400 से ऊपर पहुंच जाए तो इसे 'गंभीर' माना जाता है। दिल्ली-एनसीआर में 22 अक्टूबर को एक्यूआई 313 यानी बहुत खराब स्तर पर गया था। उसके बाद से हवा की गति धीमी होने और तापमान में गिरावट के कारण वायु गुणवत्ता 'बहुत खराब' श्रेणी में बनी हुई है। यह समस्या साल-दर-साल गंभीर होती जा रही है।

इस गंभीर होती समस्या से पार पाने के लिए दिल्ली सरकार ने कई उपाय आजमाए, प्रदूषण पर नियंत्रण के लिये निर्देश जारी किये गये मगर वे कारगर साबित नहीं हो पा रहे। दिल्ली-एनसीआर में जगह-जगह जल छिड़काव करती सरकारी गाड़ियां भी दिखने लगी हैं, जो हवा में धूल की मात्रा कम करती हैं। मगर इन कदमों का स्वरूप ही बताता है कि सरकार समस्या के लक्षणों को कम करने में जुटी है लेकिन अभी तक समस्या को सुलझाने या इसकी गंभीरता को कम करने में कोई खास सफलता नहीं मिली है। इसके एक प्रमुख कारण के रूप में पंजाब और आसपास के राज्यों में पराली जलाने के चलन को कई साल पहले चिह्नित किया जा चुका है। मगर उस मोर्चे पर राजनीतिक कारणों से खास प्रगति के संकेत नहीं मिल रहे हैं। प्रदूषण जानलेवा स्तर तक खतरनाक हो गया है। प्रश्न है कि पिछले कुछ सालों से लगातार इस महासंकट से जूझ रही दिल्ली-एनसीआर को कोई स्थायी समाधान की रोशनी क्यों नहीं मिलती? सरकारें एवं राजनेता एक दूसरे पर जिम्मेदारी ठहराने की बजाय समाधान के लिये तत्पर क्यों नहीं होते? इस विषम एवं ज्वलंत समस्या से मुक्ति के लिये हर राजनीतिक दल एवं सरकारों को संवेदनशील एवं अन्तर्दृष्टि-सम्पन्न बनना होगा। क्या हमें किसी चाणक्य के पैदा होने तक इन्तजार करना पड़ेगा, जो जड़ों में मठ्ठा डाल सके।...नहीं, अब तो प्रत्येक राजनीतिक मन को चाणक्य बनना होगा। तभी विकराल होती वायु प्रदूषण की समस्या से मुक्ति मिलेगी।

बीते हफ्ते की ही बात की जाए तो पंजाब में बुधवार को पराली जलाने की 398, गुरुवार को 589 और शुक्रवार को 766 घटनाएं दर्ज की गईं। वैसे सरकारें इसे कम करने का अपने ढंग से प्रयास कर रही हैं। पंजाब के मोगा समेत कई इलाकों में फायर फाइटर्स की टीमें तैनात की गई हैं जो पराली जलने की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंच कर उसे रोकने का काम करती हैं। यूपी में कहा गया है कि पराली जलाते पाए जाने वाले किसानों को किसान सम्मान निधि जैसी योजनाओं का फायदा नहीं दिया जाएगा। लेकिन यहां भी मामला सख्ती के जरिए किसानों को पराली जलाने से रोकने का ही है, जबकि जरूरत उन्हें ऐसे बेहतर विकल्प मुहैया कराने के है जिससे वे खुद इससे मुंह मोड़ने लग जाएं। पराली से खाद बनाकर खेती में उपयोग करने या अन्य उपायों से थर्मल पावर प्लांट और अन्य उद्योगों में ईंधन के तौर पर पराली का इस्तेमाल बढ़ाने जैसे कई सुझावों पर चर्चा होती रही है, लेकिन साफ है वे विकल्प किसानों तक अभी पहुंचाएं नहीं जा सके हैं।

वायु की गुणवत्ता को बढ़ाने एवं प्रदूषण कम करने और दिल्ली सहित देश के अन्य महानगरों-नगरों को रहने लायक बनाने की जिम्मेदारी केवल सरकारों की नहीं है, बल्कि हम सबकी है। हालांकि लोगों को सिर्फ एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभानी है, एंटीडस्ट अभियान भी निरन्तर चलाया जाना चाहिए। लोगों को खुद भी पूरी सतर्कता बरतनी होगी। लोगों को खुली जगह में कूड़ा नहीं फेंकना चाहिए और न ही उसे जलाया जाए। वाहनों का प्रदूषण लेवल चैक करना चाहिए। कोशिश करें कि हम निजी वाहनों का इस्तेमाल कम से कम करें और सार्वजनिक वाहनों का उपयोग करें। आम जनता की जिंदगी से खिलवाड़ करने वाली पटाखे जलाने की भौतिकतावादी मानसिकता को भी विराम देना जरूरी है। क्योंकि पटाखे जलाने से न केवल बुजुर्गों बल्कि बच्चों के जीवन पर खतरनाक प्रभाव पड़ने और अनेक रोगों के पनपने की संभावनाएं हैं। प्रदूषण मुक्त पर्यावरण की वैश्विक अभिधारणा को मूर्त रूप देने के लिये इको फ्रेंडली दीपावली मनाने की दिशा में सार्थक पहल करनी होगी, एक सकारात्मक वातावरण बनाना होगा। पराली ही तरह पटाखों उत्पन्न प्रदूषण खतरनाक हैं। पराली-पटाखे आज एक राजनीतिक प्रदूषण बन चुका है। इस प्रदूषण से ठीक उसी प्रकार लड़ना होगा जैसे एक नन्हा-सा दीपक गहन अंधेरे से लड़ता है। छोटी औकात, पर अंधेरे को पास नहीं आने देता। क्षण-क्षण अग्नि-परीक्षा देता है। पर हां! अग्नि परीक्षा से कोई अपने शरीर पर फूस लपेट कर नहीं निकल सकता। दिल्ली एवं पंजाब में एक ही दल ही सरकारें है, दूसरों पर आरोप लगाने की बजाय क्यों नहीं आम आदमी पार्टी की सरकार समाधान देती।

पराली के प्रदूषण से "दीपावली" के गौरवपूर्ण सांस्कृतिक अस्तित्व एवं अस्मिता को धुंधलाने की बजाय पराली का स्थायी हल निकाला जाना चाहिए। पराली के प्रदूषण को पटाखों के प्रदूषण के नाम पर ढकने की कुचेष्टा से बचना चाहिए। ''दीपावली'' हमारी संस्कृति है, सभ्यता है, आपसी प्रेम है, इतिहास है, विरासत है और दीपों की कतारों का आश्चर्य है। पराली से दीपावली के आसपास होने वाले प्रदूषण को पटाखे का प्रदूषण कहना, अतिश्योक्तिपूर्ण विडम्बना एवं समस्या से मुंह फैरने की पलायनवादी मानसिकता है। वास्तव में यह सरकारों का गैर जिम्मेदाराना व्यवहार है, जिसने सबको जहरीले वायुमंडल में रहने को विवश किया है। सर्दियों के मौसम में हवा में घातक धातुएं होती हैं, जिससे सांस लेने में दिक्कत आती है। हवा में कैडमियम और आर्सेनिक की मात्रा में वृद्धि से कैंसर, गुर्दे की समस्या और उच्च रक्तचाप, मधुमेह और हृदय रोगों का खतरा बढ़ जाता है। इसमें पराली के प्रदूषण से घातकता कई गुणा बढ़ जाती है। पटाखों का प्रदूषण उससे भी घातक है। 300 से अधिक एक्यूआई वाले शहरों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में रहने वाले सांस के रूप में जहर खींचने को क्यों विवश है, इसके कारणों पर इतनी बार चर्चा हो चुकी है कि उन्हें दोहराने की आवश्यकता नहीं।

प्रदेश में फिर खिलेगा

भाजपा नेतृत्व चुनाव के जीतने को लेकर हुआ आश्वस्त, कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर, जानें क्या है वजह

मध्य प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर सत्ता विरोधी लहर का साया मंडरा रहा है, जो हाल ही में संपन्न विधानसभा चुनाव में एक बड़ी चुनौती पेश कर रही है। प्रारंभ में पार्टी के शीर्ष नेता मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व वाली मध्य प्रदेश सरकार के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर के संभावित प्रभाव से भली-भांति परिचित थे और असहज दिखे। हालाँकि, वरिष्ठ पदाधिकारियों ने मामले का संज्ञान लिया और सुनिश्चित किया कि भाजपा विधानसभा चुनाव में अच्छा प्रदर्शन करे।

बीजेपी के शीर्ष सूत्रों ने मध्य प्रदेश में चुनावी लड़ाई की जटिल प्रकृति को स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि पार्टी ने दिखावटी कदम उठाने के बजाय मतदाताओं को शामिल करने के लिए रणनीतिक दृष्टिकोण अपनाने का लक्ष्य रखा है।

भाजपा के एक प्रमुख पदाधिकारी ने खुलासा किया कि शुरुआत में, मध्य प्रदेश में कैडर को निराशा का सामना करना पड़ा, साथ ही जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं में थकान की भावना घर कर गई। हालाँकि, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह सहित नेतृत्व ने उनका मनोबल बढ़ाने में भूमिका निभाई।

भाजपा के एक प्रमुख पदाधिकारी ने खुलासा किया कि शुरुआत में, मध्य प्रदेश में कैडर निराश लग रहा था, जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं में उदासीनता की भावना थी। हालाँकि, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पार्टी की भावना को फिर से मजबूत करने के लिए कदम उठाया।

मध्य प्रदेश भाजपा पदाधिकारी ने कहा 'पीएम मोदी और अमित शाह ने चुनौतियों का अनुमान लगाया और जमीनी स्थिति का आकलन करने के लिए तुरंत केंद्रीय चुनाव समिति (सीईसी) की बैठक बुलाई। उन्होंने अपने प्रतिस्पर्धियों से एक महीने पहले उम्मीदवारों की पहली सूची भी जारी की, जिससे कमजोर कैडर में नई ऊर्जा का संचार हुआ।

सूत्रों ने आगे बताया कि पीएम मोदी और अमित शाह ने जमीनी मुद्दों को संबोधित किया और राज्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) को एकजुट किया। सूत्रों ने कहा, 'आरएसएस के प्रयासों ने मध्य प्रदेश में भाजपा की नींव को मजबूत करने में योगदान दिया, जिससे स्थानीय पार्टी कार्यकर्ताओं में नई जान आ गई। इस प्रयास ने भाजपा को और अधिक प्रतिस्पर्धी स्थिति में ला दिया।'

एक अन्य उच्च पदस्थ सूत्र ने इंडिया टुडे को बताया कि भाजपा नेतृत्व ने राज्य में चुनाव होने तक सक्रिय बने रहने की अनिवार्यता को समझा। सूत्र ने बताया, 'इस दूरदर्शिता का असर जल्दी टिकट वितरण में हुआ, खासकर उन सीटों पर जहां भगवा पार्टी को जीत की कम संभावना का सामना करना पड़ा।'

इसके अतिरिक्त, भाजपा ने रणनीतिक रूप से कई केंद्रीय मंत्रियों और सांसदों को चुनावी मैदान में उतारा, जिससे राज्य नेतृत्व में लचीलेपन का संकेत मिला। वरिष्ठ

कमल !

शीर्ष सूत्रों ने मध्य प्रदेश में चुनावी लड़ाई की जटिल प्रकृति को स्वीकार किया

नेताओं, केंद्रीय मंत्रियों और विधायकों को मैदान में उतारने का उद्देश्य यह संदेश देना था कि राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में शिवराज सिंह चौहान की भूमिका तय नहीं है।

सूत्रों ने कहा, ''जमीनी स्तर पर सत्ता समझौते के प्रचार से लेकर सितारों से सजी रैलियों और रोड शो से भाजपा को लोगों का विश्वास वापस हासिल करने में मदद मिली और पार्टी को ऐसी स्थिति में पहुंचा दिया, जिससे आत्मविश्वास से भरी कांग्रेस परेशान हो गई।'' शुक्रवार (17 नवंबर) को एक ही चरण में सभी 230 विधानसभा क्षेत्रों के लिए मतदान हुआ। 1956 में इसकी स्थापना के बाद से मध्य प्रदेश के इतिहास में इस बार मतदान सबसे अधिक था। इसने 2018 के विधानसभा चुनावों के 75.63 प्रतिशत मतदान को भी 0.59 प्रतिशत से पीछे छोड़ दिया। गौरतलब है कि 2003 के बाद से भारतीय जनता पार्टी ने मध्य प्रदेश में तीन बार विधानसभा चुनाव जीता है, जबकि कांग्रेस केवल एक बार ही विजयी हो सकी है।

मप्र मतगणना

भाजपा और कांग्रेस ने मतगणना से पहले प्रशिक्षण सत्र आयोजित किये...

कमलनाथ ने उनसे कहा कि यदि उन्हें मतगणना के दौरान कोई विसंगति नजर आये तो उसका कानूनी समाधान पाने के लिए संबंधित अधिकारियों को सूचित करें। सत्तारूढ़ भाजपा ने वीडियो लिंक के माध्यम से प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वी डी शर्मा ने संवाददाताओं को बताया कि मतगणना एजेंट को प्रशिक्षण देने के लिए वर्चुअल कार्यशाला आयोजित की गयी। उन्होंने बताया कि 29 और 30 नवंबर को विधानसभा स्तर पर मतगणना एजेंट के लिए कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी।

हाल में हुए मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के बाद अब तीन दिसंबर को होने जा रही मतगणना से छह दिन पहले सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और विपक्षी कांग्रेस ने अपने उम्मीदवारों और मतगणना एजेंट के लिए रविवार को अलग-अलग प्रशिक्षण सत्र आयोजित किये। विपक्षी कांग्रेस ने भोपाल में प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया जबकि भाजपा डिजिटल माध्यम से अपने उम्मीदवारों से जुड़ी। मध्य प्रदेश की 230 विधानसभा सीटों के लिए मतदान 17 नवंबर को एक चरण में हुआ था। कांग्रेस के एक प्रवक्ता ने कहा, '' भोपाल में दो पालियों में 230 प्रत्याशियों के लिए प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया गया।'' उनके अनुसार रेवा, शहडोल, जबलपुर और ग्वालियर चंबल संभागों की सीटों के उम्मीदवारों और मतगणना एजेंट ने 11 बजे शुरू हुए पहले सत्र में हिस्सा लिया।

इंदौर, उज्जैन, नर्मदापुरम, भोपाल और सागर संभागों के प्रत्याशियों एवं मतगणना एजेंट के लिए ढाई बजे दूसरा सत्र आयोजित किया गया। प्रवक्ता के अनुसार, इन सत्रों में उम्मीदवारों को मतपत्र, इलेक्ट्रोनिक वोटिंग मशीन गणना, एवं संबंधित प्रकिया के बारे में बताया गया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने डिजिटल माध्यम से पार्टी उम्मीदवारों एवं एजेंट को संबोधित किया और उन्हें बताया कि वे बिना किसी डर एवं दबाव के काम करें।

कमलनाथ ने उनसे कहा कि यदि उन्हें मतगणना के दौरान कोई विसंगति नजर आये तो उसका कानूनी समाधान पाने के लिए संबंधित अधिकारियों को सूचित करें। सत्तारूढ़ भाजपा ने वीडियो लिंक के माध्यम से प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वी डी शर्मा ने संवाददाताओं को बताया कि मतगणना एजेंट को प्रशिक्षण देने के लिए वर्चुअल कार्यशाला आयोजित की गयी। उन्होंने बताया कि 29 और 30 नवंबर को विधानसभा स्तर पर मतगणना एजेंट के लिए कार्यशालाएं आयोजित की जाएंगी।

'तीसरा विकल्प' बनने में जुटे दल बिगाड़ सकते हैं भाजपा-कांग्रेस का समीकरण

आप कुल 70 सीटों पर चुनाव लड़ रही है और इसकी प्रदेश अध्यक्ष रानी अग्रवाल सिंगरौली सीट से उम्मीदवार हैं। जदयू ने 10 विधानसभा सीटों पर उम्मीदवार उतारे हैं। 'सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटीज' में सह-निदेशक संजय कुमार ने कहा, ''इस बार भी कोई दल तीसरा विकल्प बनने की स्थिति में नहीं है। हालांकि बसपा और सपा मजबूती से चुनाव लड़ते दिख रहे हैं। पिछले चुनावों के अनुभवों को भी देखें तो बसपा और सपा ने नुकसान कांग्रेस का ही किया है और इसका फायदा भाजपा को मिला है। अब किसने किसकी नैया डुबोई, और कौन पार लगा, ये सब तीन दिसंबर को स्पष्ट हो जाएगा।

मध्य प्रदेश की दो ध्रुवीय राजनीति में 'तीसरा विकल्प' बनने के प्रयासों में जुटी बहुजन समाज पार्टी (बसपा) इस बार के विधानसभा चुनाव में दो दर्जन से अधिक सीटों पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और कांग्रेस, दोनों का ही खेल बिगाड़ती दिख रही है। समाजवादी पार्टी (सपा) सहित 'इंडिया' गठबंधन के कुछ घटक दलों में भी अपनी 'छाप छोड़ने' की छटपटाहट है जोउनका 'अपना' ही नुकसान करती दिख रही है। बसपा ने इस चुनाव में आदिवासी बहुल क्षेत्रों, खासकर महाकौशल की राजनीति में प्रभाव रखने वाली गोंडवाना गणतंत्र पार्टी (गोंगपा) के साथ गठबंधन किया है। बसपा 183 सीटों पर तो गोंगपा 45 से अधिक सीटों पर ताल ठोंक रही है। सपा, आम आदमी पार्टी, जनता दल यूनाइटेड (जदयू) और कुछ क्षेत्रीय पार्टियां भी चुनाव मैदान में हैं।

हालांकि बसपा और सपा के अलावा किसी अन्य दल का कोई ऐसा प्रभाव नहीं है जिससे चुनावी नतीजों में कोई बड़ा अंतर आए। प्रदेश के ग्वालियर-चंबल और उत्तर प्रदेश की सीमा से लगे विंध्य और बुंदेलखंड के क्षेत्रों में बसपा ने हमेशा जबकि सपा ने कुछ चुनावों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। बसपा ने सबसे कम सात प्रतिशत और सबसे अधिक 11 प्रतिशत मत हासिल किए हैं। 1993 और 1998 के चुनावों में उसके 11 उम्मीदवार विधायक बने थे। दोनों ही बार कांग्रेस की सरकार बनी थी। 2003 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 173 सीटें जीतकर कांग्रेस को जब सत्ता से बेदखल किया था तब बसपा को 10.6 प्रतिशत मत मिले थे। हालांकि उसके दो ही उम्मीदवार विधानसभा पहुंच सके थे। पिछले चुनाव में भी बसपा को दो ही सीट मिली थी और उसका मत प्रतिशत गिरकर 6.42 पर आ गया था।

इस चुनाव में कांग्रेस 114 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनी और बसपा के दो, सपा के एक तथा कुछ निर्दलीयों की मदद से कांग्रेस ने सरकार बनाई। सपा ने इस राज्य में सबसे अच्छा प्रदर्शन 2003 के चुनाव में किया था, जब उसके सात विधायक विधानसभा पहुंचे थे। उसे 5.26 प्रतिशत वोट मिले थे। यह इस बात के संकेत हैं कि बसपा और सपा के वोट बैंक का बढ़ना या घटना, चुनावी नतीजे को प्रभावित करता है। बसपा और सपा सहित अन्य दलों ने इस चुनाव में बागियों पर दांव खेला है। लिहाजा कई सीटों पर मुकाबला त्रिकोणीय हो गया है। ये उम्मीदवार कुछ सीटों पर भाजपा का तो कुछ पर कांग्रेस का खेल बिगाड़ रहे हैं। विंध्य की सतना, नागौद, चित्रकूट और रैगांव सीट पर बसपा के उम्मीदवार मजबूती से चुनाव लड़ रहे हैं।

सतना में जहां भाजपा के बागी व बसपा के उम्मीदवार रत्नाकर चतुर्वेदी 'शिवा' ने भाजपा सांसद गणेश सिंह के लिए मुश्किलें खड़ी की है वहीं बगल की नागौद सीट पर कांग्रेस के बागी और बसपा उम्मीदवार बने यादवेंद्र सिंह अपनी ही पूर्व पार्टी के लिए परेशानी का सबब बने हुए हैं। इसी प्रकार चित्रकूट सीट पर भाजपा के बागी सुभाष शर्मा 'डॉली' हाथी पर सवार हो गए हैं और भाजपा के उम्मीदवार व पूर्व विधायक सुरेंद्र सिंह गहरवार और कांग्रेस के मौजूदा विधायक नीलांशु चतुर्वेदी की राह कठिन करते नजर आ रहे हैं। जिले की एकमात्र सुरक्षित रैगांव सीट पर बसपा के देवराज अहिरवार मैदान में हैं। मैहर से भाजपा विधायक नारायण त्रिपाठी का टिकट कटने के बाद वे विंध्य जनता पार्टी बनाकर कांग्रेस-भाजपा प्रत्याशियों को टक्कर दे रहे हैं। उन्होंने विंध्य क्षेत्र की 29 सीटों पर उम्मीदवार उतारे हैं।

रीवा की त्योंथर विधानसभा सीट पर भाजपा के बागी देवेंद्र सिंह हाथी के साथ मिलकर 'कमल' का खेल बिगाड़ रहे हैं। भाजपा ने यहां से पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्रीनिवास तिवारी के पोते सिद्धार्थ तिवारी राज को उम्मीदवार बनाया है। 2018 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने विंध्य क्षेत्र की कुल 30 सीटों में से 24 पर जीत दर्ज की थी, जबकि कांग्रेस सिर्फ छह सीट जीत पाई थी। क्षेत्र के लोग बताते हैं कि जब भी इस क्षेत्र में बसपा और सपा ने मजबूती से चुनाव लड़ा है तो उसका फायदा भाजपा को मिला है। बुंदेलखंड और ग्वालियर-चंबल क्षेत्र की भी कई सीटों पर बसपा ने भाजपा और कांग्रेस के बागियों को मैदान में उतारकर मुकाबले को दिलचस्प बना दिया है।

भिंड जिले की लहार विधानसभा सीट से भाजपा के बागी रसाल सिंह बसपा के टिकट पर मैदान में हैं तो अटेर से मुन्ना सिंह भदौरिया साइकिल की सवारी कर रहे हैं। इसी प्रकार भिंड विधानसभा सीट से भाजपा के पूर्व विधायक संजीव सिंह कुशवाह बसपा के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं। मुरैना सीट से भाजपा के बागी राकेश रुस्तम सिंह बसपा से चुनाव मैदान में हैं जबकि सुमावली सीट से कांग्रेस के बागी कुलदीप सिकरवार और दिमनी से बलवीर दंडोतिया बसपा के टिकट पर मैदान में डटे हैं। शिवपुरी की पोहरी सीट से कांग्रेस के बागी प्रद्युमन वर्मा बसपा से चुनाव लड़ रहे हैं। इस चुनाव में सबकी नजर ग्वालियर की दिमनी सीट पर है जहां भाजपा ने केंद्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर को उतारा है लेकिन बसपा के पूर्व विधायक बलवीर सिंह उन्हें कड़ी टक्कर देते नजर आ रहे हैं।

छोटी सी उम्र में लाखों की नौकरी छोड़कर राजनीति में आजमायी किस्मत

कौन हैं प्रदेश के सबसे युवा प्रत्याशी प्रखर प्रताप सिंह

मध्य प्रदेश चुनाव लड़ने वाले सबसे युवा उम्मीदवार आम आदमी पार्टी के प्रखर प्रताप सिंह हैं। 25 साल की उम्र में अमेरिका से लौटे इस आर्किटेक्ट का मुकाबला रीवा जिले के गुढ़ क्षेत्र में कांग्रेस के कपिध्वज सिंह और भाजपा के नागेंद्र सिंह से है।

मध्य प्रदेश चुनाव लड़ने वाले सबसे युवा उम्मीदवार आम आदमी पार्टी के प्रखर प्रताप सिंह हैं। 25 साल की उम्र में अमेरिका से लौटे इस आर्किटेक्ट का मुकाबला रीवा जिले के गुढ़ क्षेत्र में कांग्रेस के कपिध्वज सिंह और भाजपा के नागेंद्र सिंह से है। बहुप्रतीक्षित पांच राज्यों का विधानसभा चुनाव अपने दूसरे चरण में प्रवेश कर गया है क्योंकि मध्य प्रदेश में आज 230 सीटों के लिए मतदान हो रहा है। राज्य के 2,533 उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला 5.9 करोड़ से अधिक मतदाता करेंगे। मध्य प्रदेश में चुनावी कहानी पर कांग्रेस और बीजेपी का नियंत्रण होने के बावजूद, आम आदमी पार्टी (आप) ने 66 उम्मीदवारों को मैदान में उतारकर अपनी एंट्री की है। इस साल के सबसे कम उम्र के उम्मीदवार प्रखर प्रताप सिंह हैं, जो रीवा जिले के गुढ़ क्षेत्र से 25 वर्षीय AAP दावेदार हैं। वह मौजूदा विधायक भाजपा के नागेंद्र सिंह और कांग्रेस के कपिध्वज सिंह के खिलाफ मैदान में हैं।

कौन हैं प्रखर प्रताप सिंह? : प्रखर प्रताप सिंह रीवा जिले के रायपुर कर्चुलियान के रहने वाले हैं। सिंह ने संयुक्त राज्य अमेरिका जाने से पहले अपनी प्रारंभिक शिक्षा के लिए देहरादून के दून स्कूल में पढ़ाई की, जहाँ उन्होंने वास्तुकला में स्नातक और स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल की। उन्होंने वहां दो साल से अधिक समय तक एक करोड़ रुपये के वार्षिक वेतन वाली नौकरी भी की। भारत लौटने के बाद सिंह ने गुढ़ विधानसभा सीट से चुनाव लड़कर राजनीति में अपना करियर बनाने का फैसला किया। आप में शामिल होने का उनका निर्णय व्यक्तिगत है, भले ही उनके कांग्रेस और भाजपा दोनों से पारिवारिक संबंध हैं। यह कदम इतना अडिग था कि इससे उनके पिता के साथ थोड़े समय के लिए अनबन हो गई, जिससे पता चलता है कि यह कितनी गहरी पकड़ थी।

इंडियन एक्सप्रेस को दिए इंटरव्यू में उन्होंने कहा, ''मेरे परिवार के सदस्य बीजेपी और कांग्रेस पार्टियों से जुड़े रहते थे. मैंने निर्णय लेने से पहले उनसे सलाह भी नहीं ली, जिसके कारण मेरे पिता ने तीन दिनों के लिए मुझसे बात करना बंद कर दिया। उन्होंने खुलासा किया कि उनका परिवार कई पीढ़ियों से जन सेवा (सामाजिक कार्य) में लगा हुआ है। उनके पिता और दादा रीवा में प्रसिद्ध और अत्यधिक सम्मानित हैं। राज्य में सबसे कम उम्र के उम्मीदवार होने के बारे में बोलते हुए उन्होंने अखबार से कहा, ''मैंने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया है और न ही मुझे लगता है कि इससे कोई फर्क पड़ता है. मेरी उम्र में, सब कुछ अपने चरम पर है - आपका जज्बा (जुनून), प्रतिबद्धता और ऊर्जा सभी उच्च हैं, जबकि आप अपने आस-पास की हर चीज को समझ भी सकते हैं क्योंकि आपका दिमाग पूरी तरह से विकसित हो चुका है। इसलिए अगर इसे सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए तो यह अच्छा है।

प्रखर प्रताप सिंह AAP में क्यों शामिल हुए?

पंजाब और दिल्ली में पार्टी की उपलब्धियों से सिंह आप की ओर आकर्षित हुए। उनका राजनीतिक दर्शन भी पार्टी के प्रगतिशील रवैये से मेल खाता है। इसके अलावा, वह क्षेत्र में उपस्थिति की कमी और खराब नेतृत्व के लिए देश के प्रमुख राजनीतिक दलों की आलोचना करते हैं। उन्होंने इंडियन एक्सप्रेस से कहा, ''आप ने मुझे स्वीकार कर लिया है और अपने टिकट पर लड़ने का मौका दिया है। लेकिन मैंने खुद को कभी भी भाजपा या कांग्रेस में शामिल होते नहीं देखा क्योंकि वे बहुत बड़े हैं, भले ही उनकी विचारधारा कुछ भी हो। उन्होंने आगे कहा कि जब 2013 में AAP लॉन्च हुई थी, तो हर कोई इस पर संदेह करता था। लेकिन उन्होंने (अरविंद केजरीवाल) दिल्ली में तीन बार ऐसा किया (सरकार बनाई), पंजाब में भी, और अब अन्य हिस्सों में जमीन बना रहे हैं। मेरी हमारे राष्ट्रीय महासचिव-संगठन संदीप पाठक के साथ बैठक हुई, जिन्होंने बताया कि शिक्षित लोग होने के नाते, हम कभी-कभी प्रतिस्पर्धी एजेंडे के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं और अपने एजेंडे से दूर भागते हैं। इसने मुझे चुनाव लड़ने का मन बनाने के लिए आश्वस्त किया। कई आप नेताओं को जेल में डालने और अरविंद केजरीवाल को प्रवर्तन निदेशालय द्वारा समन भेजे जाने से संबंधित सवालों के जवाब में सिंह ने जोर देकर कहा कि भाजपा का 'डैमेज कंट्रोल' का लक्ष्य 'आप को किसी भी तरह रोकना' है। उन्हें यह भी यकीन है कि भयंकर राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और पार्टी में शामिल होने से जुड़ी कठिनाइयों के बावजूद आप की बदलाव की योजना 'अजेय' है। आप अब एक दृष्टि है। आप किसी दृष्टि को ख़त्म नहीं कर सकते। शो को चलाने के लिए हमेशा लोग मौजूद रहेंगे।

प्रखर प्रताप सिंह का चुनाव संबंधी फोकस क्या है?

सिंह का अभियान स्थानीय चिंताओं पर केंद्रित है, जैसे गुढ़ में पर्याप्त स्कूलों, अस्पतालों और पीने के पानी की कमी। मतदाताओं तक पहुंचने के लिए अपने परिवार के स्थानीय संपर्कों, सार्वजनिक समारोहों और विज्ञापन का उपयोग करना उनके कुछ तरीके हैं। राजनीतिक आदर्श के विपरीत, उनका लक्ष्य व्यक्तियों की चिंताओं को संबोधित करके उनकी जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करना है।

प्रदेश में में बेरोजगारी और भ्रष्टाचार बड़ा मुद्दा...

किसानों और महिलाओं को भी साधने की हुई है कोशिश....

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान बुधनी सीट से भाजपा के उम्मीदवार हैं, जिस पर वे 2006 से काबिज हैं। इस सीट पर उनका मुकाबला कांग्रेस के उम्मीदवार रामायण अभिनेता विक्रम मस्तल से होगा। 2018 के चुनावों में, चौहान ने पूर्व राज्य कांग्रेस अध्यक्ष अरुण यादव को 58,000 से अधिक वोटों से हराया था। कांग्रेस नेता और उसके सीएम चेहरे कमल नाथ छिंदवाड़ा सीट से भाजपा के विवेक बंटी साहू के खिलाफ लड़ रहे हैं।

मध्य प्रदेश में 230 विधानसभा सीटों पर विधायक चुनने के लिए शुक्रवार को मतदान हो रहा है। मुख्य लड़ाई सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और कांग्रेस के बीच है। हालांकि समाजवादी पार्टी (सपा), बहुजन समाज पार्टी (बसपा) और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) जैसी अन्य पार्टियां भी मैदान में हैं। हिंदी पट्टी राज्य में लगभग 5.6 करोड़ मतदाता 2,000 से अधिक उम्मीदवारों का भविष्य तय करेंगे। मध्य प्रदेश सहित पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव को लोकसभा चुनाव से पहले का सेमीफाइनल माना जा रहा है। कुल 2,534 उम्मीदवारों में से 472 ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले घोषित किए हैं। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स के अनुसार, उनमें से लगभग 291 गंभीर आरोपों का सामना कर रहे हैं।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान बुधनी सीट से भाजपा के उम्मीदवार हैं, जिस पर वे 2006 से काबिज हैं। इस सीट पर उनका मुकाबला कांग्रेस के उम्मीदवार रामायण अभिनेता विक्रम मस्तल से होगा। 2018 के चुनावों में, चौहान ने पूर्व राज्य कांग्रेस अध्यक्ष अरुण यादव को 58,000 से अधिक वोटों से हराया था। कांग्रेस नेता और उसके सीएम चेहरे कमल नाथ छिंदवाड़ा सीट से भाजपा के विवेक बंटी साहू के खिलाफ लड़ रहे हैं। पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह के बेटे और मौजूदा विधायक जयवर्धन सिंह को कांग्रेस ने राघौगढ़ से टिकट दिया है। उनका मुकाबला भाजपा के हिरेंद्र सिंह बंटी बन्ना से होगा। गोविंद सिंह भिंड जिले की लहार सीट से कांग्रेस के उम्मीदवार हैं। सात बार के विधायक के खिलाफ बीजेपी ने अंबरीश शर्मा को मैदान में उतारा है।

भगवा पार्टी ने इस बार एमपी चुनाव में तीन केंद्रीय मंत्रियों सहित कई दिग्गजों को टिकट दिया है। केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर मुरैना की दिमनी सीट से, राज्य मंत्री (MoS) प्रह्लाद सिंह पटेल नरसिंगपुर से, और MoS फग्गन सिंह कुलस्ते निवास से चुनाव लड़ेंगे - जो कि ST के लिए आरक्षित सीट है। कांग्रेस ने दिमनी से रवींद्र सिंह तोमर, नरसिंगपुर से लाखन सिंह पटेल और निवास एसटी सीट से चैन सिंह वरकड़े को मैदान में उतारा है। भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय इंदौर विधानसभा क्रमांक 1 सीट से कांग्रेस के संजय शुक्ला के खिलाफ चुनाव लड़ रहे हैं। मध्य प्रदेश के गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा दतिया सीट से भाजपा के उम्मीदवार हैं, उनका मुकाबला कांग्रेस के राजेंद्र भारती से है।

महत्वपूर्ण मुद्दे : मध्य प्रदेश की अगली सरकार के लिए मतदाताओं के मतदान के दौरान कई मुद्दों के केंद्र में रहने की संभावना है। मध्य प्रदेश के सबसे लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहने वाले शिवराज सिंह चौहान को सत्ता विरोधी लहर का सामना करना पड़ रहा है, शायद यही एक कारण है कि उनकी पार्टी ने उन्हें सीएम चेहरे के रूप में पेश करना बंद कर दिया है। चौहान अपनी कल्याणकारी योजनाओं का समर्थन करके अपने खिलाफ सत्ता-विरोधी कारक को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं, जिसमें लोकप्रिय लाडली बहना योजना - वंचित महिलाओं के लिए मासिक वित्तीय सहायता भी शामिल है। वहीं, सत्ता में आने पर कृषि ऋण माफी का कांग्रेस का वादा भी किसानों को पसंद आया है। महिलाओं के खिलाफ अपराध को लेकर कांग्रेस ने राज्य में सत्तारूढ़ बीजेपी सरकार पर निशाना साधा है।

एमपी में दोनों प्रमुख पार्टियां हिंदुत्व कार्ड खेल रही हैं, बीजेपी सनातन धर्म विवाद पर कांग्रेस को घेरने की कोशिश कर रही है। भगवा पार्टी ने धार्मिक पर्यटन सर्किटों के विकास पर भी प्रकाश डाला है, जिसमें उज्जैन का महाकाल लोक गलियारा और ओंकारेश्वर में आदि शंकराचार्य की प्रतिमा शामिल है। रिपोर्ट में कहा गया है कि कांग्रेस के कमल नाथ खुद को हनुमान भक्त के रूप में पेश करके 'नरम' हिंदुत्व का अनुसरण कर रहे हैं, जिसमें उनके निर्वाचन क्षेत्र छिंदवाड़ा में देवता की एक विशाल मूर्ति भी शामिल है। भाजपा उन आदिवासियों को लुभाने की कोशिश कर रही है जो राज्य की आबादी का 21 प्रतिशत से अधिक हैं। एसटी के लिए आरक्षित 47 विधानसभा सीटों में से, भगवा पार्टी ने केवल 16 सीटें जीती थीं, जबकि कांग्रेस ने 2018 में 30 सीटें जीती थीं। ग्रैंड ओल्ड पार्टी राज्य में आदिवासियों के खिलाफ अत्याचार को रेखांकित करके भाजपा पर हमला कर रही है।

बेरोजगारी और भ्रष्टाचार बड़ा मुद्दा : बेरोजगारी एक प्रमुख चुनावी मुद्दा होने की उम्मीद है क्योंकि लाखों युवा राज्य चुनावों में मतदान कर रहे हैं। चौहान ने अपनी पार्टी के सत्ता में लौटने पर प्रत्येक परिवार को एक नौकरी देने की कसम खाई है। प्रियंका गांधी वाड्रा ने जून में अपने जबलपुर भाषण में दावा किया था कि भाजपा सरकार ने पिछले तीन वर्षों में मप्र में केवल 21 सरकारी नौकरियां दीं, कम आंकड़े पर आश्चर्य व्यक्त किया। कांग्रेस ने भी कथित भ्रष्टाचार को लेकर भाजपा पर निशाना साधा और चौहान सरकार को ''50 प्रतिशत कमीशन'' करार दिया। अंग्रेजी दैनिक के अनुसार, कमल नाथ ने अपने प्रचार भाषणों में आरोप लगाया है कि 'भ्रष्टाचार की कोई सीमा नहीं है'। भगवा पार्टी ने केंद्र में कांग्रेस के शासन को लाकर इस कथा का प्रतिकार किया है, जिस पर कोयला और 2जी स्पेक्ट्रम आदि में घोटालों के आरोप थे।

प्रियंका गांधी चुनाव के दौरान मनोरंजन के लिए प्रदेश आती हैं : चौहान

चौहान ने युवाओं के बेहतर भविष्य, समाज के कल्याण और प्रदेश की प्रगति के लिए मतदान करने की अपील की। कांग्रेस ने चौहान को टक्कर देने के लिए बुधनी सीट से टीवी अभिनेता विक्रम मस्ताल को मैदान में उतारा है। अपनी पार्टी के कार्यकर्ताओं पर कथित हमलों के बारे में पूछे गए एक अन्य सवाल के जवाब में चौहान ने कहा कि वे (कांग्रेस नेता) हार को भांपकर बौखला गए हैं और उन्होंने भाजपा कार्यकर्ताओं और उनके घरों पर हमला करने की कोशिश की। उन्होंने आरोप लगाया, ''वे दारू और बकरियां बांट रहे हैं और हम पर (भाजपा) आरोप लगा रहे हैं। उन्होंने कहा, ''वो (कांग्रेस नेता) जानते हैं कि वो हार रहे हैं। इसलिए हार की भूमिका बनाना उन्होंने शुरू कर दिया है।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा द्वारा चुनाव प्रचार के दौरान फिल्मी चरित्रों से उनकी तुलना करने की आलोचना करते हुए शुक्रवार को कहा कि वह मध्य प्रदेश में मनोरंजन और लोकतंत्र एवं लोगों का अपमान करने आती हैं। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में मतदान के लिए जाने से पहले चौहान ने सीहोर जिले के जैत में अपने पैतृक आवास पर पीटीआई-से कहा, ''कांग्रेस तो गंभीर है ही नहीं। मैं प्रियंका गांधी से सवाल करना चाहता हूं कि क्या फिल्मों में एक्टिंग करना यहां मुद्दा है?, क्या जय और वीरू चुनाव का मुद्दा है?, क्या मोदी जी (प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी) के नाम पर फिल्म बन जाए ये मुद्दा है? अरे मजाक बना दिया चुनाव का। ये लोकतंत्र का अपमान है, जनता का अपमान है।'' राज्य की सभी 230 विधानसभा सीटों के लिए आज सुबह सात बजे मतदान चल रहा है।

चौहान ने चुनाव प्रचार के दौरान प्रियंका की टिप्पणियों का जिक्र करते हुए कहा, ''वो (प्रियंका गांधी) गंभीर है ही नहीं। वो चुनाव को, लोकतंत्र को, जनता को मनोरंजन समझती हैं, इसलिए मनोरंजन करने आईं हैं। ये तो उनकी सोच का घटियापन है। गंभीर मुद्दों पर बात करो ना। मुख्यमंत्री एक्टिंग करने जाएं, इस पर चुनाव लड़ोगे क्या?'' दतिया विधानसभा क्षेत्र में हाल ही में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए प्रियंका ने चौहान पर कटाक्ष करते हुए उन्हें विश्व प्रसिद्ध अभिनेता करार दिया था और कहा था कि वह बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन को मात दे सकते हैं। लेकिन जब भी कोई काम के बारे में बात करता है तो वह असरानी (कॉमेडियन) की तरह व्यवहार करने लगते हैं। प्रियंका ने यह भी आरोप लगाया था कि प्रधानमंत्री मोदी इस बात को दोहराते रहते हैं कि ''उन्होंने (विपक्ष) मुझे इतनी गालियां दीं।''

मध्यभारत प्रान्त के 25 लाख से अधिक परिवारों को देंगे श्रीराम लला के प्राणप्रतिष्ठा का निमंत्रण

हम भगवान श्रीराम के 14 वर्ष बाद अयोध्या लौटने की खुशी में दिवाली मनाते हैं किन्तु, आगामी 22 जनवरी को तो वह दूसरी दीपावली होगी जब रामजी 500 वर्षों के बाद, भारत की स्वतंत्रता के अमृत वेला में अपने जन्म-स्थान पर लौटेंगे। इसलिए यह आवश्यक है कि विश्व का समस्त हिन्दू समाज इस प्राण प्रतिष्ठा समारोह में प्रत्यक्ष शामिल हो।

श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के आह्वान पर अयोध्या में आगामी जनवरी में होने वाले राम लला के प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम के निमित्त मध्यभारत प्रान्त के 25 लाख से अधिक परिवारों को निमंत्रण देंगे। 5 नवंबर को श्री राम मंदिर में पूजित अक्षत (पीले चावल) कलश संगठन की दृष्टि से बने हमारे मध्यभारत प्रान्त आ चुके हैं। इन पूजित अक्षत कलश का जिला सह वितरण कार्यक्रम गुफा मंदिर ,लालघाटी भोपाल मैं रखा गया जिसमे पूज्य साध्वी महामंडलेश्वर प्रज्ञा भारती दीदी , महंत श्री रामदास त्यागी जी महाराज, महंत श्री अनिलानंद जी महाराज ,महामंडलेश्वर राम भूषण दास जी महाराज ,महंत श्री राधा मोहन दास जी महाराज, महंत श्री रविन्द्र दास जी महाराज , श्री सुदेश शांडिल्य जी महाराज ,विहिप केंद्रीय उपाध्यक्ष श्री हुकुमचंद सावला, संघ के प्रांत संघचालक श्री अशोक जी पांडे , विहिप प्रांत अध्यक्ष श्री पीतांबर राजदेव , प्रान्त कार्याध्यक्ष श्री के एल शर्मा , प्रान्त मंत्री श्री राजेश जैन एवम संघ परिवार के अन्य संगठनों के प्रमुख पदाधिकारी, समाज के गणमान्य नागरिक के साथ संगठन के 32 जिलों के प्रतिनिधि पूजित अक्षत कलश अपने जिलों मैं ले जाने के लिये उपस्थित रहे।

तीर्थ क्षेत्र न्यास के आह्वान पर इस अक्षत निमंत्रण को लेकर, विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता अन्य हिंदू संगठनों के साथ मिलकर, 1 जनवरी से 15 जनवरी के बीच, प्रान्त के नगर ग्रामों में, हिंदू परिवारों तक जाएंगे। हम भगवान श्रीराम के 14 वर्ष बाद अयोध्या लौटने की खुशी में दिवाली मनाते हैं किन्तु, आगामी 22 जनवरी को तो वह दूसरी दीपावली होगी जब रामजी 500 वर्षों के बाद, भारत की स्वतंत्रता के अमृत वेला में अपने जन्म-स्थान पर लौटेंगे। इसलिए यह आवश्यक है कि विश्व का समस्त हिन्दू समाज इस प्राण प्रतिष्ठा समारोह में प्रत्यक्ष शामिल हो। सब रामभक्तों को तो उसी दिन अयोध्या नहीं बुलाया जा सकता।

इसलिए विहिप का आह्वान है कि प्रान्त भर के हिंदू अपने मुहल्ले या गांव के मंदिर को ही अयोध्या मानकर वहां एकत्र हों। वहाँ की परंपरानुसार पूजा-पाठ, आराधना व अनुष्ठान करें, पूज्य संतों द्वारा दिए गए विजय महा-मंत्र – "श्रीराम जय राम जय जय राम" का जाप करें तथा अयोध्या के भव्य-दिव्य कार्यक्रम के सीधे प्रसारण को साक्षात देखें, आरती में अपना स्वर मिलाएं, प्रसाद बांटें और इस ऐतिहासिक कार्यक्रम के प्रत्यक्षदर्शी बनकर आनंद मनाएं। विहिप ने देश को 45 भागों में बांटकर प्रत्येक भाग के लिए 27 जनवरी से 22 फरवरी के बीच में उस भाग के लिए निश्चित दिन अयोध्या पधारने का निवेदन किया है। इसी क्रम मे मध्यभारत प्रान्त से दिनांक 17 फरबरी को लगभग 2500 लोगों के दर्शनों की व्यवस्था की गई है। विहिप का आह्वान है कि 22 जनवरी की पुण्य रात्रि को प्रत्येक हिंदू परिवार कम से कम 5 दीपक अवश्य जलाए और उसके बाद किसी भी दिवस को सपरिवार, इष्ट-मित्रों सहित अयोध्या दर्शन हेतु पधारें। विश्व हिंदू परिषद को विश्वास है कि रामजी का यह मंदिर विश्व में हिंदुओं में समरसता, एकत्व व आत्मगौरव का संचार करेगा और भारत को परम वैभव की ओर ले जाने के लिए एक राष्ट्र मंदिर बन कर उभरेगा।

चुनौतियों का करना पड़ेगा सामना; इस महीने से कम होगा असर

WMO : अप्रैल 2024 तक जारी रहेगा अल-नीनो का प्रभाव...

डब्ल्यूएमओ के महासचिव प्रोफेसर पेटेरी तालास ने बताया कि वैश्विक तापमान पर अल नीओ का प्रभाव आम तौर पर इसके बनने के अगले साल में होता है। इस मामले में 2024 में इस साल की तुलना में अगला साल और भी अधिक गर्म हो सकता है।

अगले साल भी अल-नीनो की स्थितियां जारी रहेंगी। विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने अल-नीनो को लेकर नया अपडेट जारी किया है। विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने कहा है कि अल नीओ की घटनाएं कम से कम अप्रैल 2024 तक जारी रहने की उम्मीद है। अल-नीनो मौसम के मिजाज को प्रभावित करेगी। इससे जमीन और समुद्र के तापमान में और बढ़ोतरी होगी। डब्ल्यूएमओ ने इस संदर्भ में जारी एक बयान में बताया कि इस साल जुलाई-अगस्त के दौरान अल नीओ की शुरुआत हुई थी। सितंबर तक इसका प्रभाव मध्यम तीव्रता तक पहुंच गया था। इसमें यह भी कहा गया है कि नवंबर 2023 से जनवरी 2024 के बीच इसके चरम पर पहुंचने की संभावना है। इतना ही नहीं, डब्ल्यूएमओ ने कहा कि 90 प्रतिशत संभावना इस बात की भी है कि आगामी उत्तरी गोलार्ध की सर्दियों और दक्षिणी गोलार्ध में गर्मी के दौरान अल-नीनो की स्थितियां बनी रहेंगी। विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) ने अपने बयान में कहा कि अल-नीनो के ऐतिहासिक पैटर्न और अभी के इसके प्रभाव के आधार पर अनुमान लगाया गया है कि आगामी उत्तरी वसंत के दौरान अल नीओ का प्रभाव धीरे-धीरे कम हो जाएगी।

डब्ल्यूएमओ के महासचिव प्रोफेसर पेटेरी तालास ने बताया कि जून के बाद से जमीनी और समुद्री तापमान में रिकॉर्ड बढ़ोतरी के परिणामस्वरूप साल 2023 अब सबसे गर्म साल होने की राह पर है। उन्होंने कहा कि वैश्विक तापमान पर अल नीओ का प्रभाव आम तौर पर इसके बनने के अगले साल में होता है। इस मामले में 2024 में इस साल की तुलना में अगला साल और भी अधिक गर्म हो सकता है। इसके परिणामस्वरूप कुछ क्षेत्रों में गर्मी की लहरें, सूखा, जंगल की आग, भारी बारिश और बाढ़ जैसी चरम घटनाएं बढ़ेंगी। इससे पहले, भारत मौसम विज्ञान विभाग ने इस महीने की शुरुआत में कहा था कि अल-नीनो की स्थितियां अगले साल दक्षिण-पश्चिम मानसून के मौसम को प्रभावित नहीं करेंगी। अल नीओ की तीव्र स्थिति के बीच, भारत में इस वर्ष दक्षिण-पश्चिम मानसून के मौसम के दौरान औसत से कम संचयी वर्षा दर्ज की गई।

क्या है अल नीनो?

अल नीनो सदर्न ऑसिलेशन (ईएनएसओ) का एक हिस्सा है, जो मौसम और समुद्र से संबंधित एक प्राकृतिक जलवायु घटना को बताता है। ईएनएसओ के दो चरण होते हैं- अल नीनो और ला नीना। अल नीनो का अर्थ स्पेनिश भाषा में 'छोटा लड़का' है और यह एक गर्म चरण है। वहीं, ला नीना का मतलब 'छोटी लड़की' होता है जो ठंड का चरण है। प्रशांत महासागर में पेरू के निकट समुद्री तट के गर्म होने की घटना अल-नीनो कहलाती है। आसान भाषा में समझे तो समुद्र का तापमान और वायुमंडलीय परिस्थितियों में जो बदलाव आते हैं उस समुद्री घटना को अल नीनो का नाम दिया गया है। इस बदलाव के कारण समुद्र की सतह का तापमान सामान्य से 4-5 डिग्री ज्यादा हो जाता है।

अल नीनो भारत में मानसून को कैसे प्रभावित करता है?

वैश्विक परिदृश्य में देखें तो अल नीनो घटनाओं के दौरान, दक्षिण पूर्व एशिया, ऑस्ट्रेलिया और मध्य अफ्रीका जैसी जगहों पर शुष्क मौसम का अनुभव होता है। वहीं भारत में यह देखा गया है कि अल नीनो वर्षों के दौरान मानसून कमजोर हो जाता है। अल नीनो मौसम की घटनाएं पिछले 70 वर्षों में 15 बार हुई हैं, जिनमें से भारत में सामान्य या सामान्य से अधिक बारिश केवल छह बार हुई है। पिछले चार अल नीनो वर्षों में, भारत ने लगातार सूखे की स्थिति और वर्षा में भारी कमी का सामना किया है। मॉनसून की बारिश कमजोर, मध्यम या मजबूत अल नीनो घटनाओं के आधार पर भी अलग-अलग हो सकती है। 1997 में, एक मजबूत अल नीनो के कारण भारत में सामान्य वर्षा का 102 प्रतिशत रिकॉर्ड किया था।

विश्व की सुंदरतम नगरी बनने और वैश्विक पटन पर छाने के लिए तैयार है अयोध्या...

अयोध्या में विकास की गति को और तीव्र करने के लिए नौ नवंबर 2023 को अयोध्या में रामलला के दरबार में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में कैबिनेट की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई जिसने एक नया इतिहास रचा।

500 वर्षों के अथक संघर्ष के पश्चात नौ नवंबर 2020 को माननीय उच्चतम न्यायलय द्वारा अयोध्या पर राम मंदिर के पक्ष में ऐतिहासिक निर्णय देने के बाद, श्रीराम जन्मभूमि पर श्री रामलला के भव्य–दिव्य मंदिर का निर्माण कार्य तीव्र गति से सम्पूर्णता की दिशा में अग्रसर है। मंदिर के भूतल का लगभग 95 प्रतिशत का कार्य पूर्ण हो चुका है तथा आगामी 22 जनवरी 2024 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कर कमलों से भव्य प्राण प्रतिष्ठा समारोह का आयोजन होना भी सुनिश्चित हो गया है।

कुछ वर्ष पूर्व तक जो अयोध्या नगरी हिन्दुओं के संघर्ष की धरती थी जो आगामी 22 जनवरी 2024 को सर्व संतोषकारिणी नगरी बनने जा रही है। लंबे संघर्ष के बाद प्रभु श्रीराम लला अपने जन्मभूमि आवास में पधार रहे हैं और प्रत्येक सनातनी यह सोचकर हर्षित और प्रफुल्लित हो रहा है कि अयोध्या में श्रीरामलला के विराजमान हो जाने के बाद उनके सभी दुखों व चिंता का निवारण हो जाएगा। उत्तर प्रदेश ही नहीं संपूर्ण भारत में आनंद की बयार बह रही है और हो भी क्यों न हम सबके श्रीराम अपने घर आ रहे हैं। यही कारण है कि अब उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में प्रदेश सरकार अयोध्या को अखिल विश्व की सुंदरतम नगरी बनाने के लिए अथक प्रयास कर रही है। एक समय था जब रामभक्त अयोध्या दर्शन करने जाते अवश्य थे किंतु हनुमानगढ़ी और कनक भवन के दर्शनों तक सीमित रह जाते थे और बहुत कम श्रद्धालु श्री रामजन्मभूमि के दर्शन करने के लिए जाते थे क्योंकि तम्बू में बैठे भगवान तक पहुंचना सरल नहीं था किन्तु उच्चतम न्यायालय का निर्णय आने के बाद परिवर्तन आया और 22 जनवरी 2024 के बाद परिस्थितियां पूरी तरह से बदलने जा रही हैं क्योंकि अब रामभक्तों व श्रद्धालुओं की प्रतीक्षा पूर्ण और धैर्य समाप्त हो रहा है।

भव्य श्रीरामलला मंदिर के उद्घाटन के पश्चात श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ने वाली है, अयोध्या में उनके भव्य स्वागत, रहने-ठहरने व दिव्य दर्शन सुलभ करने के लिए व्यापक प्रबंध किये जा रहे हैं। अयोध्या व उसके आसपास के समस्त क्षेत्र को इस प्रकार से निर्मित किया जा रहा है कि श्रद्धालुओं को त्रेतायुग के समय का आभास हो और उस परिकल्पना को साकार करने के लिए मुख्यंमत्री योगी आदित्यनाथ जब से प्रदेश के मुख्यमंत्री बने हैं तभी से जुटे हैं। विगत कई वर्षों से अयोध्या में भव्य दीपोत्सव का आयेजन किया जा रहा है जिसमें प्रभु श्रीराम माता सीता और भाई लक्ष्मण के साथ उसी प्रकार पुष्पक विमान से उतरते हैं जिस प्रकार वह त्रेता युग में उतरे थे। अयोध्या त्रेतायुग में जिस प्रकार प्रफुल्लित व हर्षित हुई थी आगामी 22 जनवरी 2024 को अयोध्या व उसके आसपास के वातावरण को उसी प्रकार राममय करने की अभूतपूर्व तैयारी चल रही है।

इसी परिप्रेक्ष्य में अयोध्या को विश्व की सुंदरतम नगरी बनाने के लिए हर संभव व्यापक अभियान चलाया जा रहा है। 22 जनवरी के बाद देश व विदेशों से लाखों की संख्या में रामभक्त अयोध्या पहुंचने वाले हैं इस बात को ध्यान में रखते हुए और अयोध्या को विश्व स्तर की धार्मिक नगरी के रूप में विकसित करने के लिए करीब 3 हजार करोड़ रुपए लागत की विभिन्न अवस्थापना परियोजनाओं पर काम चल रहा है। अयोध्या में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के नाम पर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा बन रहा है और संभावना व्यक्त की जा रही है कि आगामी दिसंबर माह में उड़ानें भी प्रारंभ हो जायेंगी। वंदे भारत ट्रेन लखनऊ से अयोध्या के बीच चली है और करीब आधा दर्जन अन्य रेल गाड़ियाँ अयोध्या से होकर जाने लगी हैं। अयोध्या से रामेश्वरम तक सीधी रेलगाड़ी चलाई गई है।

अयोध्या का बदलाव दिखाने के लिए रेलवे स्टेशन को भव्य बनाया जा रहा है। पर्यटन विभाग अयोध्या को जोड़ने वाले सुल्तानपुर, बस्ती, गोंडा, अंबेडकरनगर और रायबरेली हाईवे पर बड़े द्वारों का निर्माण कर रहा है। अयोध्या व आसपास के जिलों व कस्बों में भारी संख्या में होटलों आदि का निर्माण कार्य चल रहा है। तीर्थ यात्रियों को आकर्षित करने के लिए कई योजनाएं- अयोध्या में बाहर आने वाले तीर्थयात्री केवल अयोध्या मंदिर दर्शन तक ही सीमित न रह जाएं इसलिए तीर्थाटन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाओं पर भी कार्य चल रहा है। पंचकोसी, चौदह कोसी तथा चौरासी कोसी परिक्रमा मार्ग पर स्थित धार्मिक स्थलों का भी सुंदरीकरण किया जा रहा है। सरयू नदी में विहार के साथ मंदिरों के दर्शन के लिए क्रूज सेवा और रोमांचक वाटर स्पोर्टस सेवा भी प्रारंभ हो गई है। साथ ही अभी कई और योजनाएं प्रारंभ होने वाली हैं।

भविष्य की दृष्टि से अयोध्या का दिव्य एवं नव्य विकास करने के लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ संकल्पवान हैं। मुख्यमंत्री का दायित्व सँभालने के साथ से ही वे अयोध्या पर विशेष ध्यान दे रहे हैं और प्रायः अयोध्या आकर सांधु-संतों का आशीर्वाद के लेने के साथ ही साथ विकास हेतु उनका परामर्श भी लेते हैं। 2017 में पहली बार मुख्यमंत्री बनने के बाद योगी जी अपने प्रथम कार्यकाल में 46 बार अयोध्या पहुंचे और इस कार्यकाल में भी उनका आगमन निरंतर हो रहा है। वो अयोध्या सम्बन्धी प्रत्येक कार्य पर स्वयं दृष्टि रखते हैं। योगी जी के नेतृत्व में अयोध्या में हर वर्ष दीपोत्सव का आयोजन होने से अयोध्या को एक नयी पहचान मिली है। हर वर्ष दीपों की संख्या गिनीज़ बुक में अपना ही रिकॉर्ड तोड़ती है। 22 जनवरी 2024 को प्राण प्रतिष्ठा के पूर्व इस बार भी अयोध्या में अयोजित भव्य दीपोत्सव ने एक नया रिकॉर्ड बना दिया है और अयोध्या की अनुपम छटा बिखर रही है।

अयोध्या में विकास की गति को और तीव्र करने के लिए नौ नवंबर 2023 को अयोध्या में रामलला के दरबार में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में कैबिनेट की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई जिसने एक नया इतिहास रचा। कैबिनेट बैठक के पूर्व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व प्रदेश सरकार के सभी मंत्री रामलला के दरबार पहुंचे और उनके प्रति अपनी आस्था प्रकट की। कैबिनेट ने हनुमानगढ़ी में भी हनुमान जी के दर्शन किये और पूजा की। हनुमानगढ़ी में महंत धर्मदास, महंत संतरामदस आदि ने सभी अभिनंदन किया और उसके बाद मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि अप सभी के आशीर्वाद से अयोध्या विश्व की सबसे सुंदरतम नगरी बनेगी।

तमिलनाडु में आवारा कुत्तों की बढ़ती संख्या और हमलों को लेकर नसबंदी किये जाने के खिलाफ पेटा (पशु अधिकार संगठन) की याचिका हो या केरल और बॉम्बे हाई कोर्ट के आदेश के खिलाफ दायर याचिकाएं भी सुप्रीम कोर्ट में लंबित हैं।

कुत्तों के हमले से उद्योगपति की मौत के बाद तो...

सरकारों की आंखें खुल जानी चाहिए

वाघ बकरी चाय समूह के कार्यकारी निदेशक पराग देसाई का आवारा कुत्तों के हमले के दौरान सिर में लगी गंभीर चोट से अहमदाबाद के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। 49 वर्षीय देसाई पर उनके घर के बाहर मौजूद आवारा कुत्तों ने हमला कर दिया था। यह घटना बताती है कि देश में आवारा पशुओं के नियंत्रण और लचर सरकारी मशीनरी की अनदेखी की हालत क्या है। इससे आम आदमी ही नहीं बल्कि उद्योगपति तक पीड़ित हैं। हर रोज कुत्तों के काटने की सैंकड़ों घटनाएं होने के बावजूद केंद्र, राज्यों की सरकारें और स्थानीय निकाय दशकों पुरानी इस समस्या के निदान में विफल रहे हैं। यदि यही हादसा किसी विदेशी पर्यटक के साथ होता तो भारत की विश्व में कितनी किरकिरी होती। इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि विदेशी पर्यटक कभी आवारा कुत्तों के निशाने पर नहीं आ सकते। विधायिका ही नहीं न्यायपालिका भी इस मुद्दे का कोई ठोस समाधान नहीं कर सकी है।

इस मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट की नजर पिछले दिनों तब गई जब सुनवाई के दौरान एक वकील के हाथ में पट्टी बंधी देख कर मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड ने पूछ लिया। चीफ जस्टिस के साथ बैठे दूसरे जज जस्टिस पी.एस. नरसिम्हा ने कहा कि आवारा कुत्तों को लेकर इस तरह की समस्या एक गंभीर समस्या है। कोर्ट में मौजूद सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने इसे गंभीर समस्या बताते हुए कहा कि आए दिन कुत्तों के काटने के मामले सामने आ रहे हैं। यहां तक कि छोटे और अबोध बच्चों के मौत की खबरें भी काफी विचलित करती हैं। सॉलिसिटर जनरल की चिंता से सहमति जताते हुए चीफ जस्टिस चंद्रचूड ने कहा था कि दो साल पहले मेरा लॉ क्लर्क गाड़ी पार्क कर रहा था तभी आवारा कुत्तों ने उसे घेर लिया था और उस पर हमला कर दिया था। अदालत में दूसरे सीनियर एडवोकेट विजय हंसरिया ने भी चीफ जस्टिस से अनुरोध किया कि इस गंभीर समस्या पर अदालत को स्वतः संज्ञान लेना चाहिए। हंसारिया ने कहा कि इस मामले पर देश के अलग-अलग हाईकोर्ट के अलग-अलग फैसले के चलते एक भ्रम की स्थिति बनी हुई है। इसलिए सुप्रीम कोर्ट को स्वतः संज्ञान लेकर एक आदेश पारित करना चाहिए। सॉलिसिटर जनरल और हंसारिया की मांग पर चीफ जस्टिस ने कहा कि वो इस पर विचार करेंगे। हालांकि पहले भी आवारा कुत्तों के आतंक पर देश के दूसरे राज्यों की कई याचिकाएं सालों से सुप्रीम कोर्ट में लंबित हैं।

तमिलनाडु में आवारा कुत्तों की बढ़ती संख्या और हमलों को लेकर नसबंदी किये जाने के खिलाफ पेटा (पशु अधिकार संगठन) की याचिका हो या केरल और बॉम्बे हाई कोर्ट के आदेश के खिलाफ दायर याचिकाएं भी सुप्रीम कोर्ट में लंबित हैं। सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका केरल के कन्नूर की जिला पंचायत की ओर से भी दायर की गई, जिसमे इंसान के लिए खतरनाक हो चुके कुत्तों को उन्हें इन्जेक्शन देकर मार दिए जाने की मांग की गई। दिल्ली हाईकोर्ट के 2021 में आए एक ऐतिहासिक फैसले में आवारा कुत्तों को भोजन के अधिकार की गारंटी दी गई है। साथ ही इसमें चेतावनी भी दी गई है कि इस अधिकार को सुनिश्चित करने में सावधानी बरती जानी चाहिए। इससे बाकी नागरिकों के अधिकारों का हनन नहीं होना चाहिए। जी-20 के आयोजन के दौरान एमसीडी की ओर से सडकों से आवारा कुत्तों को हटाए जाने का मामला दिल्ली हाईकोर्ट में भी उठा। एक जनहित याचिका दाखिल कर आरोप लगाया गया कि कुत्तों को एमसीडी ने अवैध तरीके से पकड़ रखा है। याचिका पर एमसीडी ने दिल्ली हाई कोर्ट में दलील देते हुए कहा है था कि स्ट्रीट डॉग्स को सिर्फ जी-20 इवेंट की वजह से पकड़ा गया था और अब उन्हें उसी इलाके में छोड़ा जा रहा है, जहां से उन्हें पकड़ा गया था। इन कुत्तों को बगैर नसबंदी के छोड़ा गया। अब यह समस्या देश की राजधानी का भी सिरदर्द बन चुकी है।

आवारा कुत्तों और बिल्लियों की संख्या को लेकर दि स्टेट ऑफ पेट होमलेसनेस इंडेक्स डाटा फॉर इंडिया की ओर से जारी एक रिपोर्ट में कहा गया कि देश में आवारा कुत्तों की संख्या लगभग 6.2 करोड़ है, वहीं ऐसी बिल्लियों की संख्या करीब 91 लाख है। करीब 88 लाख कुत्ते और बिल्लियां शेल्टर होम में हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि देश में आवारा पशुओं की बढ़ती संख्या से भारत के ऑल पेट्स वांटेड स्कोर में भी गिरावट दर्ज की गई है। 10 अंकों के मानक पर इस समय भारत का स्कोर 2.4 है। रिपोर्ट में यह दावा भी किया गया है कि भारत में 85 फीसदी कुत्ते और बिल्लियां बेघर हैं। रिपोर्ट के अनुसार लगभग 68 फीसदी लोगों का कहना है कि वह हर सप्ताह कम से कम एक आवारा बिल्ली देखते हैं और लगभग 77 फीसदी लोगों ने कहा कि उन्हें आवारा कुत्ते आसानी से देखने को मिल जाते हैं।

भारत की 61 फीसदी जनसंख्या दूरी, प्रतिष्ठा या सुविधाओं जैसे व्यावहारिक कारणों के चलते आवारा कुत्तों के काटने के बाद भी पशु चिकित्सक के पास नहीं जाती है। यह दुनियाभर के औसत 31 फीसदी से कहीं ज्यादा है। पीपल्स फॉर एनिमल्स के अनुसार देश में हर 100 लोगों पर आवारा कुत्तों की संख्या कम से कम तीन है। भारत के अलावा दुनिया के बाकी देशों की बात करें तो रिपोर्ट बताती है कि चीन में बेघर कुत्ते और बिल्लियों की संख्या लगभग 7.5 करोड़ है। वहीं, जर्मनी में यह आंकड़ा 20.6 लाख, मैक्सिको में 74 लाख, रूस में 41 लाख, दक्षिण अफ्रीका में 41 लाख और ब्रिटेन में 11 लाख है। रिपोर्ट में इस मामले को लेकर भारत की स्थिति को चिंताजनक बताया गया है। दूसरी तरह विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि कुत्तों के काटने की वजह से होने वाली रेबीज बीमारी से मौत के मामले में भारत की भागीदारी 36 प्रतिशत है। समस्या के इतने गंभीर होने के बावजूद जिम्मेदार देश का सरकारी तंत्र गफलत में है।

आवारा कुत्तों को 1960 के पशु क्रूरता निवारण अधिनियम की धारा-38 के तहत संरक्षित किया जाता है। इसका मतलब है कि किसी कुत्ते की उपेक्षा करना या उसका दुरुपयोग करना अवैध है। ऐसा करने वाले व्यक्ति के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी। आवारा कुत्ते आज बड़े शहरों में आवारा कुत्ते बहुत बड़े विवाद की वजह हैं। आवारा कुत्तों की वजह से जिंदगी दूभर हो चुकी है। ऐसी घटनाएं आए दिन होती हैं, जिसकी वजह से सैर पर जाने वालों में खौफ रहता है। बच्चों के खेलने के दौरान भी कुत्तों के हमलों का खतरा बना रहता है। दूसरी तरफ ऐक्टिविस्ट की जमात है, जो यह माने बैठे हैं कि यह जानवर बिना छेड़े कुछ कर ही नहीं सकते! सिक्किम में आवारा कुत्तों के खिलाफ एक कार्यक्रम चलाया गया, जो कि बड़े पैमाने पर नसबंदी और वार्षिक एंटी-रेबीज टीकाकरण कार्यक्रम था। इसके चलते सिक्किम में बहुत कम रेबीज केस हैं। मौजूदा नियमों में ऐसे भी परिवर्तन होना चाहिए कि न सिर्फ आवारा कुत्तों की आबादी कम करने पर जोर हो, बल्कि सड़कों को कुत्तों से मुक्त करने का लक्ष्य तैयार किया जाना चाहिए। डॉग लवर्स को भी जिम्मेदार बनाना होगा। देश में विकराल होती जा रही आवारा कुत्तों की समस्या का यदि शीघ्र निदान नहीं किया गया तो यह भी हो सकता है कि किसी दिन विदेशी पर्यटक के शिकार बनने पर भारत को विश्व में शर्मिंदगी का सामना करना पड़े। ऐसी नौबत आए, इससे पहले सरकारी और स्वायत्तशाषी निकायों को इस समस्या का कोई ठोस और स्थायी समाधान निकालना चाहिए।

इधर, इन्दौर शहर में भी बढ़ा आवारा कुत्तों का आतंक...

देश के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर में लगातार आवारा कुत्तों के काटने की घटनाएं बढ़ती जा रही है और साथ ही इन कुत्तों की जनसंख्या में भी लगातार इजाफा हो रहा है ! इंदौर की सबसे पॉश कॉलोनी कहीं जाने वाली महालक्ष्मी नगर ,श्रीनगर ,साकेत नगर हो या कोई और ,आवारा कुत्तों का आतंक लगातार बढ़ता जा रहा है! बेशक निगम द्वारा डॉग रूल्स के तहत कुत्तों को पकड़ कर नसबंदी कराई जाती है लेकिन यह प्रक्रिया भी इतनी सरल नहीं है क्यों कि जब-जब निगम की टीम इस कार्य को अंजाम देने के लिए फील्ड पर आती है क्षेत्र के डॉग लवर्स इसका विरोध दर्ज कर प्रक्रिया को होने नहीं देते ! अभी हाल ही में वाघ बकरी चाय के मालिक की मौत कुत्तों के हमले से ही हुई थी !

आवारा कुत्तों की जनसंख्या का कोई आंकड़ा किसी के पास नहीं है ! जिम्मेदारों का कहना है कि इस तरह का कोई आंकड़ा न कभी मिला है ना कभी मिल सकता है ! अगर इसकी जनसंख्या का आंकड़ा लेने की कोशिश की जाए तो यह बहुत जटिल और महंगी प्रक्रिया है ! वित्तीय तंग हाली से जूझ रही निगम के लिए आज यह संभव भी नहीं है !

नाम नहीं छापने की शर्त पर एक पशु प्रेमी का कहना है की कुत्तों को खाना देने के पीछे पशु प्रेम तो है ही एक अंधविश्वास भी जुड़ा है जिसके चलते लोग कुत्ते को जहां चाहे वहां टोस्ट या खाने की चीज डाल देते हैं ! बेशक ऐसा करने से शहर में गन्दगी की समस्या भी होती हे लेकिन पशु प्रेम में लोग स्वछता भी भूल रहे हैं !

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का अनुमान है कि वैश्विक स्तर पर प्रति वर्ष लगभग 59,000 लोग रेबीज से मरते हैं, और मनुष्यों में रेबीज के अधिकांश मामले कुत्ते के काटने का परिणाम होते हैं। पूरे एशिया में सरकारें नियमित रूप से सड़क पर रहने वाले कुत्तों को आश्रय देकर उनके प्रबंधन के लिए कई तरीकों का सहारा लेती हैं।'

भूटान पुरे विश्व में नंबर 1

14 साल के कुत्ते जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम के बाद, भूटान ने खुद को दुनिया का पहला देश घोषित किया है जिसने अपने पूरे आवारा कुत्तों की आबादी को पूरी तरह से स्टरलाइज और टीकाकरण किया है। एक वैश्विक पशु दान, ह्यूमेन सोसाइटी इंटरनेशनल (एचएसआई), जिसने कार्यक्रम को लागू करने में मदद की, ने यह घोषणा की हे ।

...क्यों काटते हैं कुत्ते, और क्या है इलाज

निगम द्वारा कुत्तों के वैक्सीनेशन के लिए दो कंपनियों को ठेके दिए गए हैं जिन्हें इन कुत्तों को पड़कर एंटी रेबीज वैक्सीनेशन और एंटी एंजायटी का डोज लगाया जाता है उसके बाद तीन से चार दिन ऑब्जर्वेशन में रखने के बाद उन्हें उसी जगह पर छोड़ दिया जाता है जिस जगह से उन्हें उठाया गया है ! कुत्तों के काटने की समस्या तभी होती है जब कुत्ते भूखे होते हैं या उन्हें डराया जाता है ! ऐसा करने पर कुत्ते आमजन को काटने भी लगते हैं ! अक्सर देखा गया है की सुबह मॉर्निंग वॉक पर जाने वाले और छोटे बच्चों कोसाथ में घूमने वाले पालक गण हाथ में डंडा रखकर चलते हैं और सुरक्षा की दृष्टि से कुत्तों को पास में आने नहीं देते , जैसे ही कुत्ते पास में आते हैं उन्हें डरा दिया जाता है जो स्वाभाविक भी हे ! कार्यवाही तो की जाती हे लेकिन डॉग लवर्स कई बार कार्यवाही होने नहीं देते जिसके कारण कई परेशानियों भी आती हैं !

गीत-नगरी ग्वालियर... शहर को यूनेस्को से मिली विश्व मान्यता

इस शहर की जिम्मेदारियों को और बढ़ा दिया है

ग्वालियर की संगीत परंपरा ग्वालियर का ख्याल, ध्रुपद तो गत पांच शताब्दी से संगीत परिवेश को अनुनादित कर रहा था। राजा मानसिंह की द्वारा ध्रुपद को संस्कृत से लोक-भाषा ब्रज-भाषा के रूप में रूपांतरित कर जन-जन तक स्वीकार करा दिया गया।

नए भारत के हुँकार के रूप में साहित्य संगीत की नगरी ग्वालियर को यूनेस्को द्वारा 'सिटी आफ म्यूजिक' के रूप में स्वीकारना भारत की महान सांस्कृतिक परंपराओं की गालव तपोस्थली की भी स्वीकारोक्ति है। ग्वालियर संगीत की 500 वर्षों की विरासत को समेटे अपने संगीतमय स्वरूप को आधिकारिक रूप से मान्य किए जाने से प्रफुल्लित है। तथ्यात्मक रूप से ग्वालियर अपनी संगीत परंपरा के लिए मध्यकाल से ही विख्यात रहा है। यूनेस्को द्वारा इसको सिटी आफ जॉय सिटी आफ म्यूजिक के रूप में स्वीकारने के लिए पूर्व से ही पर्याप्त आधार थे लेकिन विलंब से ही से ही विश्व पटल पर सत्य की स्वीकारोक्ति हुई है। मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग ने इसका प्रस्ताव यूनेस्को को भेजा था और इस प्रस्ताव को स्वीकारने का आधार ग्वालियर की संगीत परंपरा, स्मारक समूह, विश्वविद्यालय, संस्थान, संगीत के राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय आयोजन जैसे मजबूत आधार रहे हैं। यही कारण है ग्वालियर के दावे को नकारना संभव नहीं हो सका।

ग्वालियर की संगीत परंपरा ग्वालियर का ख्याल, ध्रुपद तो गत पांच शताब्दी से संगीत परिवेश को अनुनादित कर रहा था। राजा मानसिंह की द्वारा ध्रुपद को संस्कृत से लोक-भाषा ब्रज-भाषा के रूप में रूपांतरित कर जन-जन तक स्वीकार करा दिया गया। बैजू बावरा, जो विख्यात संगीतज्ञ तानसेन के समकालीन थे, उन्होंने बिना दरबारी हुए भी ख्याति प्राप्त की। राजा मानसिंह, बैजू बावरा के अतिरिक्त संगीत सम्राट तानसेन उस्ताद हरसू हद्दू खान जिन्होंने ग्वालियर घराने के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। उस्ताद हाफिज अली खान जिन्होंने प्रसिद्ध बंगश घराने के सरोद वादक, कृष्ण राव शंकर पंडित, राजा भैया पूछ वाले जैसी विभूतियों की परंपरा ग्वालियर में अनवरत देखने को मिलती है, वैसी अन्य जगह कम ही मिलती है। ग्वालियर का संगीत विश्वविद्यालय, ग्वालियर का संगीत महाविद्यालय, ग्वालियर ग्वालियर का तानसेन संगीत-समारोह, ग्वालियर का सरोद-घर, ग्वालियर का बैजा-ताल का रंगमंच ग्वालियर का मोहम्मद गौस का मकबरा, मान-मंदिर, गूजरी महल, ग्वालियर को संगीत नगरी का ताज पहनाने के लिए समर्थ है। अकबर दरबार के प्रसिद्ध संगीतज्ञ तानसेन जिनके गाये दीपक राग से दीपक जल जाते थे, राग मल्हार से वर्षा होने लगती थी।

ग्वालियर कला का वह मकरंद है जिसकी सुगंध रूपी विभूतियाँ कला क्षेत्र को सुरभित करती ही रहती हैं। ग्वालियर का संगीत अपने मानकों के साथ-साथ अपनी विरासत के लिए भी प्रसिद्ध है। भारत अपने गौरव के स्थान को प्राप्त कर रहा है। 21वीं शताब्दी विश्व में मानव मूल्यों की स्थापना करते हुए भारत की है। जिसमें कला और मानवता के मूल्य विश्व पटल पर भारत का विश्व-दर्शन करने वाले हैं। 1000 साल के संघर्ष-काल के बाद जगा हुआ भारत तब और अधिक प्रफुल्लित होता है जब एक नवंबर को मध्य प्रदेश के स्थापना दिवस पर ग्वालियर को विश्व संस्था द्वारा सिटी आफ म्यूजिक के रूप में स्वीकार किया जाता है। अब ग्वालियर की जिम्मेदारी और महत्व दोनों बढ़ गए हैं। हमें अपनी विश्व-व्यापी ख्याति को न केवल सहेजना है गौरवान्वित करना है, बल्कि उसको और समृद्धि करना है। आने वाले समय में विश्व पर्यटन के केंद्र के रूप में ग्वालियर विश्व मानचित्र पर और अधिक सम्मोहन के साथ में अपने स्वरूप को प्रस्तुत करेगा। यह अवसर हम सब की प्रसन्नता के साथ-साथ जिम्मेदारियों का भी है। हम अपने गौरव के साथ-साथ भारत उदय साधनाष-यज्ञ में अपने आप को सचेष्ट रखें। यही समय की मांग है और यही हमारी प्रसन्नता का विजयी उद्घोष भी। स्वर्णिम-भविष्य हमारी प्रतीक्षा कर रहा है।

कांग्रेस-भाजपा के बीच तीन राज्यों में सीधा मुकाबला

कौन लगाएगा जीत का 'सिक्सर'

लंबे समय तक ऐसा लगता रहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत एवं सचिन पायलट के बीच अंदरूनी कलह का फायदा उठाकर भाजपा राजस्थान में भी वही कहानी दोहराने वाली है। पर लगता है कि गांधी परिवार और केंद्रीय कांग्रेस नेतृत्व, दोनों ने अपनी पिछली गलतियों से कड़वा सबक सीखा है। मिलनसार एवं राजनीतिक रूप से चतुर मल्लिकार्जुन खरगे जैसे पुराने योद्धा को पार्टी अध्यक्ष बनाने से बड़ा फर्क आया है।

इस महीने शुरू होने जा रहे देश के पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों ने लोकसभा चुनाव से पहले सत्तारूढ़ भाजपा और हाल ही कांग्रेस के नेतृत्व में गठित विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' के बीच एक प्रकार से सेमी फाइनल का महत्व हासिल कर लिया है। तीन राज्यों-छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और राजस्थान में तो दो राष्ट्रीय पार्टियों भाजपा और कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला है, जबकि तेलंगाना और मिजोरम में कांग्रेस को सत्तारूढ़ क्षेत्रीय दलों का मुकाबला करना पड़ेगा। अगर कांग्रेस इन राज्यों में बेहतर प्रदर्शन करती है, तो लोकसभा चुनाव से पहले भाजपा पर दबाव बढ़ेगा। लिहाजा ये चुनाव प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए परीक्षा हैं कि वह कांग्रेस मुक्त भारत का अपना वादा पूरा कर पाने में सक्षम हो पाते हैं या नहीं।

पांच साल पहले हुए विधानसभा चुनावों में कांग्रेस तेलंगाना और मिजोरम में बुरी तरह हार गई थी, जबकि छत्तीसगढ़ में उसे जबर्दस्त जीत मिली थी, और मध्य प्रदेश एवं राजस्थान में उसने कुछ सीटों के अंतर से जीत हासिल कर तीन राज्यों में भाजपा को सत्ता से बेदखल कर दिया था। मगर मुश्किल से एक साल बाद ही बड़ी संख्या में विधायकों के साथ ज्योतिरादित्य सिंधिया के दलबदल के कारण भाजपा मध्य प्रदेश में सत्ता वापस हासिल करने में कामयाब रही।

लंबे समय तक ऐसा लगता रहा कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत एवं सचिन पायलट के बीच अंदरूनी कलह का फायदा उठाकर भाजपा राजस्थान में भी वही कहानी दोहराने वाली है। पर लगता है कि गांधी परिवार और केंद्रीय कांग्रेस नेतृत्व, दोनों ने अपनी पिछली गलतियों से कड़वा सबक सीखा है। मिलनसार एवं राजनीतिक रूप से चतुर मल्लिकार्जुन खरगे जैसे पुराने योद्धा को पार्टी अध्यक्ष बनाने से बड़ा फर्क आया है। कांग्रेस के दोनों क्षेत्रीय क्षत्रपों एवं अन्य विपक्षी नेताओं से निपटने में बेहद प्रभावी खरगे अब तक बिना किसी रुकावट के विधानसभा चुनावों के मौजूदा दौर में राजनीतिक सफर तय करने में कामयाब रहे हैं। गांधी परिवार ने उन्हें ऐसा करने का अधिकार दिया है।

भाजपा की अपनी समस्याएं हैं, जिन्हें उसे हल करना है। ये समस्याएं मुख्यतः केंद्रीय नेतृत्व द्वारा छत्तीसगढ़ में रमन सिंह, मध्य प्रदेश में शिवराज सिंह चौहान और राजस्थान में वसुंधरा राजे सिंधिया जैसे क्षेत्रीय क्षत्रपों को चुनाव अभियान का नेतृत्व देने के प्रति अनिच्छा से उपजी हैं। गौर करना चाहिए कि ऐसी ही रणनीति के कारण कर्नाटक एवं हिमाचल प्रदेश में भाजपा को सत्ता गंवानी पड़ी थी। इसलिए संकेत हैं कि अंतिम समय में केंद्रीय नेतृत्व ने इन तीनों नेताओं की नाराजगी दूर करने के प्रयास किए।

दरअसल, 2018 में छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव हारने के बाद भाजपा हाई कमान ने तीन बार के मुख्यमंत्री रमन सिंह को न सिर्फ हाशिये पर डाल दिया था, बल्कि इस बार अंतिम क्षण तक यह निश्चित नहीं था कि उन्हें टिकट मिलेगा या नहीं। लेकिन अंततः उन्हें टिकट दे दिया गया। इसके बावजूद भाजपा उन्हें मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में पेश नहीं कर रही, जबकि कांग्रेस भूपेश बघेल के नेतृत्व में ही चुनाव लड़ने जा रही है।

इसी तरह, मध्य प्रदेश में लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे शिवराज सिंह चौहान भाजपा की जीत होने पर भी मुख्यमंत्री बनाए जाने को लेकर आश्वस्त नहीं हैं। एक बार फिर पार्टी का केंद्रीय नेतृत्व इस दुविधा में फंसा है कि चुनाव में पार्टी की संभावनाओं को नुकसान पहुंचाए बिना चौहान का कद कैसे छोटा किया जाए। ज्योतिरादित्य सिंधिया के घटते प्रभाव ने इसे और जटिल बना दिया है, जिनके पूर्व वफादार अब फिर से कांग्रेस में लौट रहे हैं। राजस्थान में भाजपा के लिए राह तुलनात्मक रूप से आसान होनी चाहिए, जहां मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को सत्ता विरोधी रुझान और नाराज प्रतिद्वंद्वी सचिन पायलट, दोनों का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन भाजपा यहां भी दुविधा में है कि राजनीतिक नुकसान उठाए बिना प्रभावी पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया को कैसे कमजोर किया जाए। पिछले महीने एक समय ऐसा लगा था कि भाजपा नेतृत्व वसुंधरा राजे के वफादारों को टिकट नहीं देने जा रहा। लेकिन राजे के तेवर को देखते हुए केंद्रीय नेतृत्व ने अपना रुख बदला और अंतिम क्षण में उनके वफादारों को इस उम्मीद में टिकट दिया कि इससे वह आश्वस्त होंगी।

चिपको आंदोलन के 50 साल

महिलाओं की प्रत्यक्ष भागीदारी की गवाह रही है अनूठी मुहिम

दिसंबर, 1973 का अंतिम सप्ताह भागम-भाग भरा था। यह चिपको आंदोलन में महिलाओं की पहली प्रत्यक्ष हिस्सेदारी थी। 29 दिसंबर को गोपेश्वर से श्यामादेवी, जिन्होंने दशौली ग्राम स्वराज्य संघ (दग्रास्वसं) भवन स्थापना के लिए जमीन दी थी, अन्य महिलाओं के साथ फाटा पहुंचीं। 30 दिसंबर, 1973 को श्यामा देवी, इन्द्रा, जेठुली, जयंती तथा पार्वती के नेतृत्व में रामपुर में ग्रामीण महिलाओं का पहला जुलूस निकला। श्यामा देवी की अध्यक्षता में सभा हुई और पेड़ों की सुरक्षा का प्रण दोहराया गया। शिशुपाल कुंवर तथा अनुसूया प्रसाद लगातार साथ थे। महिलाएं सफलता मिलने के बाद ही अपने घर वापस लौटीं। यह अगले साल रेणी में होने वाले प्रतिरोध का पूर्व संकेत था। लेकिन महिलाओं के लिए यह नई बात नहीं थी। कुछ ही साल पहले शराबबंदी आंदोलन में वे हिस्सेदारी कर चुकी थीं। चमोली में सक्रियता ज्यादा थी। वहां की महिलाएं टिहरी और गिरफ्तारी के बाद सहारनपुर जेल गईं। ग्रामीणों और कार्यकताओं की सावधानी, सक्रियता और सुसंगठन से मैखंडा जंगल के ज्यादा पेड़ बच गए।

मंडल के बाद चिपको का दूसरा प्रतिरोध भी सफल रहा। यह कार्यकताओं की मेहनत और ग्रामीणों की समझ की बदौलत हुआ। चिपको के पहले प्रतिरोधों में ग्रामीणों के साथ चंडीप्रसाद भट्ट, आनन्दसिंह बिष्ट, शिशुपाल कुंवर, मुरारीलाल, केदारसिंह रावत, श्यामादेवी आदि का प्रत्यक्ष योगदान रहा। सुंदरलाल बहुगुणा 25 अक्तूबर से चार महीने की पदयात्रा पर निकल चुके थे। अभी जंगल की लड़ाई को उत्तरकाशी, नैनीताल और अन्य जगहों तक जाना था। फाटा की जीत से आंदोलन को ज्यादा गहराई और विस्तार मिला। सरकार ने चिपको आंदोलन के प्रतिनिधि को लखनऊ में बुलाकर उन्हें नई वन नीति हेतु सुझाव देने को कहा। दूसरी ओर, उनके इलाके में कटान-छपान जारी रखा। न सरकारी नीति बदली और न आंदोलनकारी ही। फाटा में चार पेड़ों का कटान हुआ, पर अगली नीलामी के लिए छपान जारी था। तभी रेणी तथा अन्य जंगलों की नीलामी की सूचना मिली। उधर उत्तराखंड के सात जिलों की 23 लीसा इकाइयां बंद थीं।

1,800 क्विंटल लीसे का नीलाम 150-155 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से हुआ। लेकिन यह स्थानीय इकाइयों को 180 रुपये प्रति क्विंटल की दर पर मिला। पर अभी तो लीसा नहीं, रेणी की नीलामी महत्वपूर्ण थी। नवंबर, 1973 के प्रारंभ में गोविंद सिंह, चंडीप्रसाद, हयातसिंह, वासवानंद तथा जगतसिंह केरणी आदि जोशीमठ-रेणी के बीच के गांवों की यात्रा कर चुके थे। दिसंबर, 1973 में गोविन्द सिंह, हयातसिंह, वासवानंद आदि गांवों में जाते रहे। गोविंद सिंह ने तब 'आ गया है लाल निशान, लूटने वालो हो सावधान' नारे वाला 'चिपको आंदोलन का शुभारंभ' पर्चा निकाला। इसमें पहाड़ों को उपनिवेश बनाने और यहां की संपदा की लूट के विरोध के साथ संगठित होकर वनाधिकार प्राप्त करने का आग्रह था। फाटा से रेणी प्रतिकार के लिए ऊर्जा मिली। इलाके में कार्य जारी था।

चंडीप्रसाद ने सर्वोदय मंडल के निर्णयानुसार देहरादून जाना उचित समझा, जहां जंगलों की नीलामी होने वाली थी। हालांकि, चंडीप्रसाद शहरों में नीलामी के विरोध से असहमत थे। चिपको आंदोलन का पर्चा बनाकर वह देहरादून पहुंचे। उन्हें सीमा पता थी, पर संदेश ज्यादा लोगों तक जा सकता था। यह नीलामी के प्रतीकात्मक विरोध की शुरुआत थी। पर्चे में जंगलों का विनाश रोकने, नीलामी-ठेकेदारी प्रथा बंद करने, हक-हकूक बढ़ाने, श्रम समितियां बनाने, कच्चा माल बाहर न भेजने, वनवासियों को कच्चा माल-तकनीक-पूंजी मुहैया कराने हेतु चिपको आंदोलन को सफल बनाने की अपील थी। पर्चे के अंत में मार्मिक वाक्य थे: 'यह तिलाड़ी का संदेश है, बेलाकूची (वह गांव, जो 1970 की बाढ़ में बहा) की बाढ़ में डूबने वालों का क्रंदन है और जंगल की अंधाधुंध कटाई से हर साल आने वाली बाढ़ों से तबाह होने वालों की पुकार है।' दो जनवरी, 1974 को चंडीप्रसाद ने वन अधिकारियों से मानवीय, सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिक दृष्टिकोण से नीलामी रोकने को कहा। रात को उन्होंने विद्यार्थी बृ. सिं. मनु निश्चिंत तथा लक्ष्मी प्रसाद नौटियाल के सहयोग से टाउन हॉल के आसपास कुछ पोस्टर चिपकाए। दोनों ने कहा कि नीलामी पर रोक लगाई जाए। पर सहमति नहीं बनी। गोपेश्वर से आए पर्चे के अनुसार पोस्टर बने और लगे।

तीन जनवरी, 1974 को चंडीप्रसाद देहरादून के टाउन हॉल के द्वार पर खड़े हो गए। पिछली शाम भी ठेकेदारों और मुंशियों से बात करने का प्रयास किया और बताया कि रेणी में चिपको आंदोलन चलेगा। ठेकेदार-मुंशी उनका मजाक उड़ाते रहे। वे उनको सिर्फ पोस्टर का इशारा करते। ठेकेदार-मुंशी उत्सुकता से पोस्टर पढ़ते और फिर व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ भीतर जाते। टाउन हॉल के भीतर नीलामी होती रही। रेणी का जंगल चार लाख 71 हजार रुपये में नीलाम हो गया। नीलामी के बाद सभी बाहर आ रहे थे, तो चंडीप्रसाद हॉल के भीतर गए और रेणी के ठेकेदार के मुंशी से मिले।

उन्होंने कहा कि अपने ठेकेदार को बता देना कि जब वे रेणी जंगल काटने आएंगे, तो उन्हें चिपको आंदोलन का मुकाबला करना पड़ेगा। ठेकेदार-मुंशियों की स्मृति में उस दिन 'चिपको' शब्द अटक गया। देहरादून से चंडीप्रसाद गोपेश्वर आए। दग्रास्वसं में मंत्री शिशुपाल सिंह, दयालसिंह, चक्रधर, दानसिंह, विश्वंभर रदत्त, सोबनसिंह तथा हयातसिंह से बातचीत की। साथियों को रेणी नीलामी की खबर भेजी। गोपेश्वर में अनेक विचार-विमर्श हुए। फरवरी, 1974 में फिर एक बार क्षेत्र की यात्रा गोविंद सिंह ने पुराने अंदाज में की। इस बार उनके साथ हयातसिंह, सुदर्शन कठैत, कामरेड सुदामा आदि थे। लाटा में उनकी सभा में ग्राम प्रधान जगतसिंह और महिला मंगल दल की अध्यक्षा मंगुलीदेवी सहित तमाम ग्रामीण उपस्थित हुए। अगले दिन रेणी में सभा हुई। 12 मार्च, 1974 को चंडीप्रसाद ने मुख्यमंत्री को पत्र भेजा। मुख्यमंत्री से वार्ता, नई जंगलात नीति बनाने के बाबत विमर्श होने के बावजूद सरकार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जोशीमठ-रेणी के इलाके में कार्यकर्ता आ-जा रहे थे। गोविंद सिंह का प्रधानों और आम जनता से सीधा संपर्क था। पिछले साल वे समस्त प्रधानों की ओर से पर्चा बांट चुके थे। पर्चे लगातार बांटे और पढ़े जा रहे थे। जनवरी तथा फरवरी 1974 में हर ओर तैयारी होती रही। जनता-आंदोलनकारी, ठेकेदार, जंगलात विभाग तथा लखनऊ की सरकार अपनी-अपनी तरह से इस तैयारी में जुटे थे। सब अपनी-अपनी रणनीति बनाने में संलग्न थे। पर्वतीय विकास निगम ने चंपावत और तिलवाड़ा में दो लीसा इकाइयां 15 फरवरी, 1974 से शुरू कीं। चमोली के गांवों में घोषणा पहुंच चुकी थी कि रेणी कटान के विरुद्ध 15 मार्च, 1974 को जोशीमठ में प्रदर्शन होगा।

दुनिया में बढ़ी भारत की धमकी...

पीएम बोले, इनोवेशन में युवाओं के बढ़ते उत्साह का संकेत...

रिपोर्ट के मुताबिक, भारत ने लगातार 11 साल में आवेदनों में जैसी वृद्धि की है, वैसी सबसे ज्यादा आवेदन कर रहे 10 देशों में से किसी ने नहीं की है। भारत के बाद सबसे ज्यादा 6.1 फीसदी वृद्धि स्विट्जरलैंड ने की।

भारतीय नागरिकों ने साल 2022 में पेटेंट के लिए 31.6 फीसदी अधिक आवेदन किए हैं। विश्व बौद्धिक संपदा संकेतक रिपोर्ट 2023 ने यह खुलासा किया है। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पेटेंट आवेदनों में वृद्धि को देश के युवाओं में इनोवेशन के लिए बढ़ते उत्साह का संकेत बताया है। उन्होंने इसे आने वाले समय के लिए बेहद सकारात्मक संदेश भी बताया। रिपोर्ट के मुताबिक, भारत ने लगातार 11 साल में आवेदनों में जैसी वृद्धि की है, वैसी सबसे ज्यादा आवेदन कर रहे 10 देशों में से किसी ने नहीं की है। भारत के बाद सबसे ज्यादा 6.1 फीसदी वृद्धि स्विट्जरलैंड ने की। चीन से 3.1 फीसदी बढ़त जरूरी हुई, लेकिन लगातार दूसरे साल इसकी वृद्धि दर में कमी आई है। यहां से 2021 में बढ़त 6.8 फीसदी थी।

हम सातवें स्थान पर

चीन 15,84,664
अमेरिका 5,05,539
जापान 4,05,361
दक्षिण कोरिया 2,72,315
जर्मनी 1,55,896
फ्रांस 65,275
भारत 55,718
यूके 53,536
स्विट्जरलैंड 49,077
नीदरलैंड 32,053

महिलाएं अब भी पीछे

पेटेंट आवेदकों की सूची में चीन से 47.9 फीसदी महिलाएं हैं तो तुर्किये व फ्रांस से 34 फीसदी के करीब। वहीं, भारत से यह संख्या केवल 23 फीसदी रही। भारत में किसी आवेदन पर पेटेंट कार्यालय की ओर से पहली बार कार्यवाही शुरू करने से अंतिम निर्णय लेने तक में औसतन 51 महीने लग रहे हैं। यह समय सबसे ज्यादा 56 महीने ले रहे मेक्सिको के बाद दूसरा सर्वाधिक है। हमारे मुकाबले चीन में महज 16.5 महीने और अमेरिका में 23.1 महीने में यह काम हो रहा है। यह दर्शाता है कि भारत को प्रक्रिया में तेजी लाने की जरूरत है। बौद्धिक संपदा के बाकी क्षेत्रों में भी आगे, ट्रेड मार्क पांचवें स्थान पर, दुनिया में 1.18 करोड़ ट्रेडमार्क आवेदन आए। इनमें सबसे ज्यादा 77 लाख चीन के थे। इसके बाद अमेरिका से 9.45 लाख, तुर्किये से 4.82 लाख, जर्मनी से 4.79 लाख और पांचवें स्थान पर भारत से 4.67 लाख आवेदन हुए। भारत में स्वास्थ्य, टेक्सटाइल और कृषि क्षेत्रों से सर्वाधिक ट्रेडमार्क आवेदन किए गए। औद्योगिक डिजाइन तीसरी सबसे तेज वृद्धि, 2022 में 11 लाख औद्योगिक डिजाइन आवेदन पूरी दुनिया से हुए। इनमें 2.1 फीसदी गिरावट आई, लेकिन भारत सहित कई देशों से आवेदन बढ़े। सबसे ज्यादा 31.4 फीसदी आवेदन तुर्किये से बढ़े। इसके बाद ब्राजील से 11.3 फीसदी तो तीसरे स्थान पर भारत से 9.5 फीसदी वृद्धि हुई। जीआई टैग भारत के महज 429, चीन के पास 9,571, किसी उत्पाद या वस्तु को क्षेत्र विशेष की पहचान देने वाले भौगोलिक संकेत यानी जीआई टैग भारत के पास महज 429 हैं। वहीं, चीन के पास 9,571 जीआई टैग हो चुके हैं।

जाति गणना

नतीजों के बाद सरकार करेगी मंथन, ओबीसी नेताओं के फीडबैक का हो रहा इंतजार

जाति गणना के संदर्भ में भविष्य में अहम फैसला करने संबंधी संदेश बीते हफ्ते छत्तीसगढ़ में गृह मंत्री अमित शाह के बयान से मिला। छत्तीसगढ़ में शाह ने कहा कि भाजपा ने कभी इसका विरोध नहीं किया है। लोकसभा चुनाव में जाति के सवाल को सबसे बड़ा मुद्दा बनाने के विपक्ष के दांव से सतर्क मोदी सरकार आगामी जनगणना में जाति की गिनती कराने के संबंध में पांच राज्यों के चुनावी नतीजे आने के बाद मंथन करेगी। अंतिम निर्णय से पहले भाजपा के ओबीसी नेताओं के बिहार जाति गणना के जमीनी स्तर पर प्रभाव संबंधी फीडबैक का इंतजार है।

भाजपा नेतृत्व खासतौर से जाति राजनीति की पहचान माने जाने वाले बिहार और उत्तर प्रदेश से फीडबैक का इंतजार कर रहा है। इस संदर्भ में बीते 2 नवंबर को हुई ओबीसी नेताओं की बैठक में उपस्थित बिहार के वरिष्ठ नेता ने कहा कि बिहार में जाति गणना का जमीनी स्तर पर व्यापक प्रभाव है। बैठक में भी तय हुआ था कि इसके प्रभाव का आकलन कर ही कोई निर्णय किया जाएगा। जाति जनगणना के बाद नीतीश सरकार ने जिस तरह आरक्षण का दायरा बढ़ाने का फैसला किया है, उससे लोकसभा चुनाव में जाति का सवाल सबसे अहम हो जाएगा। जाति गणना के संदर्भ में भविष्य में अहम फैसला करने संबंधी संदेश बीते हफ्ते छत्तीसगढ़ में गृह मंत्री अमित शाह के बयान से मिला। छत्तीसगढ़ में शाह ने कहा कि भाजपा ने कभी इसका विरोध नहीं किया है। इसके अलावा सामाजिक न्याय की राजनीति करने वाले राजग के सभी सहयोगी दल और इनके नेता खुल कर जाति गणना की मांग कर रहे हैं। इस संदर्भ में पार्टी नेतृत्व की खास निगाहें बिहार और यूपी पर है। इन दोनों राज्यों में लोकसभा की 120 सीटें हैं और राजनीति में जाति का प्रभाव सबसे ज्यादा है। जाति राजनीति की काट के लिए पार्टी ने दोनों ही राज्यों में सामाजिक न्याय की राजनीति करने वाले कई दलों को जोड़ा है। ओबीसी से जुड़ी उपलब्धियों के व्यापक प्रचार प्रचार, सामाजिक (जाति) सम्मेलन की व्यापक योजना तैयार की है। बिहार में जातीय समीकरण साधने के लिए भाजपा ने चिराग पासवान को अपनी पार्टी का भाजपा में विलय का फिर से प्रस्ताव दिया है। विलय के एवज में उन्हें केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल करने और बाद में राज्य में पार्टी का चेहरा बनाने का वादा किया गया है।

...भारत के प्रयासों से मिली मोटे अनाज को अंतरराष्ट्रीय पहचान

हरित क्रांति समय की मांग थी और आज भी है। पर अब समूची दुनिया में रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से होने वाले दुष्परिणामों और नित नई बीमारियों से त्रस्त होने के कारण विकल्प तलाशा जाने लगा है और मोटे अनाज को दुनिया के देश बेहतर विकल्प और आशा के रूप में देख रहे हैं।

मोटा अनाज यानि श्रीअन्न आज दुनिया की पसंद बनता जा रहा है। दूरगामी सोच का ही परिणाम है कि आज समूची दुनिया 2023 को अंतरराष्ट्रीय मिलेट ईयर के रूप में मना रही है। मोटे अनाज के महत्व और पोषकता को देखते हुए ही इसे श्रीअन्न कहकर पुकारा गया। देखा जाए तो जब 2018 में भारत ने मोटे अनाज को पोषक अनाज घोषित करने के लिए विश्वव्यापी अभियान चलाया तब पूरी तरह से आश्वस्त नहीं थे कि संयुक्त राष्ट्र संघ मोटे अनाज के महत्व को समझते हुए 2023 को इंटरनेशनल मिलेट ईयर घोषित कर देगा। यह भी लगभग असंभव लगता था कि दुनिया के देश इतनी जल्दी मोटे अनाज के प्रति जागरूक होंगे। दरअसल हमारे खान-पान के चलते लोग एक के बाद एक बीमारियों से दो चार होने लगे हैं, ऐसे में मोटा अनाज एक बेहतर विकल्प के रूप में उभरा है। पर जिस तरह से अभियान चलाकर मोटे अनाज को प्रमोट किया गया है उससे देश-विदेश में मोटे अनाज का गुणगान होने लगा है। मोटापा, डायबिटीज, विटामिन्स की कमी, बढ़ती हार्ट डिजिजेज, एनिमिया, पाचन संबंधी दिक्कत और कैल्शियम की कमी या यों कहें कि अच्छा खाने के बाद भी खोखले होते शरीर के कारण केमिकल्स पर आधारित दवाओं से अलग हटकर अब लोग मोटे अनाज में विकल्प खोजने लगे हैं। खरीफ की प्रमुख फसल बाजरा का तो इस साल और अधिक उत्पादन होने जा रहा है। किसान इससे उत्साहित है तो स्टार्टअप्स और खाद्य प्रसंस्करण इकाईयां बेहद उत्साहित हैं।

दरअसल गई शताब्दी के छठें-सातवें दशक तक हमारे यहां खासतौर से गांवों का मुख्य भोजन मोटा अनाज ही रहा है। 1960 के दशक में खाद्यान्न संकट के विकल्प के रूप में हरित क्रांति का दौर आरंभ हुआ और ऐसे में खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाना पहली प्राथमिकता बनी और इसके लिए गेहूं को प्रमुख विकल्प माना गया। इसके बाद एक ओर गेहूं के आयात, गेहूं के उत्पादन बढ़ाने और उत्पादन बढ़ाने के नाम पर रासायनिक उर्वरकों का दौर शुरू हुआ। रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रचार तंत्र को एग्रेसिव किया गया और आज हमारे कृषि वैज्ञानिकों, नीति नियंताओं और अन्नदाता की मेहनत से देश खाद्यान्न को लेकर आत्मनिर्भर बन गया है। कोरोना त्रासदी से लेकर अब तक जरूरतमंद लोगों तक निःशुल्क खाद्यान्न की उपलब्धता बड़ा सहारा बनी है। हरित क्रांति समय की मांग थी और आज भी है। पर अब समूची दुनिया में रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से होने वाले दुष्परिणामों और नित नई बीमारियों से त्रस्त होने के कारण विकल्प तलाशा जाने लगा है और मोटे अनाज को दुनिया के देश बेहतर विकल्प और आशा के रूप में देख रहे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि एक समय था जब मोटा अनाज प्रमुख भोजन होता था। आज भी दुनिया में कुल उत्पादित मोटे अनाज में हमारे देश की भागीदारी 41 प्रतिशत है। राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश आदि प्रमुख राज्य हैं। आज मोटे अनाज के निर्यात में भी भारत प्रमुख देश है। हमारे देश से बीते साल 2.69 करोड़ डॉलर का मोटा अनाज अमेरिका को निर्यात किया गया है। मोटे रूप से 13 प्रकार के अनाज को मोटे अनाज के रूप में माना जाता है। इनमें से प्रमुख रूप से 8 अनाजों- बाजरा, रागी, कुटकी, संवा, ज्वार, कंगनी, चेना और कोंदों को माना जाता है। कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय के वर्ष 2023-24 के पहले अनुमान के अनुसार खरीफ पोषक मोटे अनाजों का उत्पादन 351.37 लाख टन अनुमानित है जोकि 350.91 लाख टन औसत मोटे अनाजों की तुलना में थोड़ा-सा अधिक है। वर्ष 2023-24 के दौरान श्री अन्न का उत्पादन 126.55 लाख मीट्रिक टन अनुमानित है।

मोटे अनाज को प्रमोट करने के विश्वव्यापी प्रयास आरंभ हो गए हैं। युवा एंटरप्रोन्योर स्टार्टअप्स के माध्यम से आगे आ रहे हैं। लोगों को मिलेट रेसिपी भाने भी लगी है। लोग इनके महत्व को समझने लगे हैं। पुरानी पीढ़ी के लोगों को याद होगा कि राजस्थान में तो खासतौर से एक समय था जब घर पर मेहमान आने पर ही गेहूं की चपाती बनती थी। धीरे-धीरे मोटे अनाज का उत्पादन और उपयोग दोनों ही प्रभावित हुए। यह सब तो तब रहा जब कि बाजरा आदि मोटे अनाज के खेती में कम पानी और कम लागत आती है तो दूसरी और मोटा अनाज प्राकृतिक स्वास्थ्यवर्द्धक तत्वों से भरपूर रहे हैं और इनकी उपयोगिता को आज वैज्ञानिक सिद्ध कर रहे हैं। मौसम के अनुसार खेती होने से फसलों के तासीर भी पैदावार पक कर बाजार में आने के बाद उसके उपयोग से तय होती रही है। मोटा अनाज खासतौर से बाजरा खरीफ की प्रमुख फसल है। अब आसानी से समझा जा सकता है कि खरीफ की फसल पक कर तैयार हो जाती है तो उस समय तक सर्दी का मौसम आरंभ हो जाता है।

अदालत ने कहा- पराली जलाना तुरंत रोकें, लोगों को मरने नहीं दे सकते

...अगर हमारा बुलडोजर चलेगा तो रुकेगा नहीं

दिल्ली-एनसीआर में दमघोंटू हवा से आठवें दिन भी हालात बदतर होने पर सुप्रीम कोर्ट ने दोटूक कहा कि हर हाल में पराली जलाना तत्काल बंद हो, लोगों को यूं मरने नहीं दे सकते। शीर्ष अदालत ने खासतौर पर पंजाब से कहा, राजनीति बंद कर जरूरी कदम उठाएं। साथ ही, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और दिल्ली सरकारों को एक-दूसरे पर दोष मढ़ने से बचने और पराली जलाने पर तत्काल अंकुश लगाने का निर्देश दिया। शीर्ष अदालत ने कहा, यदि हमने अपना बुलडोजर चलाना शुरू किया, तो फिर रुकेंगे नहीं। जस्टिस संजय किशन कौल और जस्टिस सुधांशु धूलिया की पीठ ने कहा, दिल्लीवासी साल-दर-साल स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे हैं क्योंकि हम इसका समाधान नहीं ढूंढ़ पा रहे हैं। इस पर तत्काल ध्यान देने व अदालती निगरानी की जरूरत है, भले ही मामले में सुधार हो या नहीं। जस्टिस कौल ने बताया, उन्होंने खुद पंजाब में सड़क के दोनों ओर पराली जलते देखी है। उन्होंने कहा, यह पूरी तरह से लोगों के स्वास्थ्य की हत्या है। हम पंजाब सरकार और दिल्ली से सटे अन्य सभी राज्यों, हरियाणा, राजस्थान व यूपी को यह सुनिश्चित करने का निर्देश देते हैं कि पराली जलाना तुरंत बंद किया जाए। पीठ पर्यावरणविद् एमसी मेहता की वायु प्रदूषण को लेकर 1985 में दायर याचिका पर विचार कर रही है। जनहित याचिका की सुनवाई के दौरान पराली जलाने का मुद्दा उठा। पीठ ने दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण, फसल अवशेष जलाने, वाहन प्रदूषण व खुले में कचरा जलाने जैसे मुद्दों पर प्रकाश डाला।

पंजाब को फटकार...हर समय राजनीति नहीं हो

पंजाब के एडवोकेट जनरल गुरमिंदर सिंह ने पीठ को बताया, बीते साल से पराली जलाने के मामलों में 40 फीसदी कमी आई है। इस पर पीठ ने कहा, आप राजनीति करना बंद करें। हर समय राजनीतिक लड़ाई नहीं हो सकती। हम नहीं जानते कि आप कैसे रोक सकते हैं, यह आपका काम है। चाहे कार्रवाई करें, जुर्माना लगाएं या प्रोत्साहन देकर बंद कराएं। सिंह ने जब कहा, जुर्माना लगाना मुश्किल है, तो पीठ ने कहा, जुर्माना कठिन है, पर दिल्ली के लोगों की सेहत बिगाड़ने में कोई दिक्कत नहीं। पीठ ने कहा, हम यह नहीं कह रहे हैं, पराली जलाना ही एकमात्र कारण है, पर महत्वपूर्ण जरूर है। मुख्य सचिव की समग्र निगरानी में स्थानीय थाना प्रभारी को जिम्मेदार बनाया जाए। अगली सुनवाई शुक्रवार को होगी।

सम-विषम फॉर्मूला महज दिखावा : पीठ ने दिल्ली सरकार को सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए कि नगर निगम का ठोस कचरा खुले में नहीं जलाया जाए। दिवाली के अगले दिन से दिल्ली में प्रस्तावित सम-विषम व्यवस्था को दिखावा बताते हुए कोर्ट ने पूछा, क्या पिछली बार यह सफल था?

एजी बोले-पराली के पीछे आर्थिक कारण धान की खेती खत्म करने का भी सुझाव :पंजाब के एजी गुरमिंदर ने माना, पराली जलाने से रोकने के लिए कदम जरूरी हैं। उन्होंने कहा, किसान आर्थिक कारणों से पराली जला रहे हैं। सुझाव है कि केंद्र आवश्यक सुविधाएं देने के लिए सब्सिडी दे। दरअसल, लागत के कारण विकल्पों का पालन नहीं होता। महंगी मशीनें किसानों को 25 फीसदी भुगतान पर दी जा सकती हैं, पर अधिकतर किसान तैयार नहीं हैं। 50 फीसदी राशि केंद्र को वहन करनी चाहिए। एजी ने सुझाव दिया, चरणबद्ध तरीके से धान की खेती को खत्म कर अन्य फसलों को बढ़ावा दिया जाए।

पीठ भी सहमत...वैकल्पिक फसलें अपनाएं

पीठ ने इस सुझाव का समर्थन करते हुए कहा, धान (जो पंजाब की मूल फसल नहीं है) के अलावा वैकल्पिक फसलों को अपनाना जरूरी है, ताकि पराली जलाने की समस्या दोबारा न हो। यह तभी हो सकता है, जब धान को एमएसपी न देकर अन्य फसलों को दिया जाए।

पंजाब की समस्या पर गंभीरता से विचार करे केंद्र : सुप्रीम कोर्ट

दिल्ली-एनसीआर में जहरीली हवा के चलते प्रदूषण की समस्या गंभीर होती जा रही है। मंगलवार को शीर्ष अदालत में सुनवाई के दौरान पीठ ने कई महत्वपूर्ण टिप्पणियां कीं। पीठ ने केंद्र सरकार को भी सलाह दी कि पंजाब में आपके सामने ऐसे हालात हैं कि धान की फसल के कारण जल स्तर में भारी गिरावट आई है। कुओं का इस्तेमाल बंद हो गया है। पीठ ने केंद्र सरकार से कहा, आप एक तरफ बाजरा को बढ़ावा दे रहे हैं और दूसरी तरफ धान को भूजल बर्बाद करने दे रहे हैं। पीठ ने केंद्र को सलाह दी कि इस बात पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है कि क्या इस तरह का धान उस समय में उगाया जाना चाहिए, जिसमें यह उगाया जाता है। 15 साल पहले यह समस्या नहीं थी क्योंकि ऐसी फसल नहीं होती थी। इस फसल ने पंजाब का जलस्तर नष्ट कर दिया है और दिल्ली के आसपास मौसम इस पर इसका असर पड़ा है। पीठ ने सरकार को पंजाब उपमृदा जल संरक्षण अधिनियम 2009 को सख्ती से लागू करने का भी निर्देश दिया। पीठ ने कहा, केंद्र सरकार पारंपरिक फसलों को उगाने को प्रोत्साहित करने की नीति अपना रही है। हम चाहते हैं कि सभी हितधारक उपरोक्त पहलुओं के संबंध में शीघ्रता से कार्य करें। पीठ ने कैबिनेट सचिव को इस मुद्दे पर सभी हितधारकों के साथ कल ही एक बैठक बुलाने का निर्देश दिया।

एमपी की आदिवासी बेल्ट की राजनीति से है संबंध

झाबुआ के कड़कनाथ के 2,000 रुपये तक बढ़े

चुनाव की घोषणा से पहले ही कई नेताओं झाबुआ के कड़कनाथ और अन्य देशी मुर्ग का स्टॉक कर लेते हैं। क्रॉस ब्रीड कड़कनाथ जो चुनाव घोषणा के पहले तक 900 रुपये में बिक रहा था, जो घोषणा के बाद 1100 रुपये में खुले बाजार में अब बिकने लगा है...

कहावत है कि राजनीति जो न करवाए वो कम है। मध्यप्रदेश में चुनाव का एलान होते ही झाबुआ में कड़कनाथ मुर्गों की डिमांड बढ़ने लगी है। झाबुआ का प्रसिद्ध यह मुर्गा आम दिनों में 800 से 950 रुपये प्रति नग बिकता है। लेकिन आदिवासी बहुल इलाके झाबुआ-आलीराजपुर में चल रही चुनावी दावतों के चलते इन मुर्गों के रेट बढ़ गए हैं। बाजार में अब कड़कनाथ 1500 से 2000 रुपये के बीच बिक रहा है। कड़कनाथ मुर्गा मूलतः मध्यप्रदेश के झाबुआ का ब्रीड है, इसलिए भारत सरकार ने इसे झाबुआ का कड़कनाथ नाम से जीआई टैग दिया भी हुआ है।

आखिर कड़कनाथ मुर्गे के दामों में अचानक उछाल क्यों आया है? इस सवाल के जवाब में स्थानीय कड़कनाथ विक्रेताओं का कहना है कि जब मध्यप्रदेश में विधानसभा चुनाव होते हैं, उस समय गुलाबी ठंड का मौसम होता है। इस दौरान बड़ी तादाद में बाहरी प्रदेशों और जिलों से प्रचार करने लोग इस आदिवासी क्षेत्र में आते हैं। तब वे झाबुआ आने पर कड़कनाथ खाने की इच्छा रखते हैं। अपने स्थानीय संपर्कों की मदद से वह अपना शौक पूरा करने की कोशिश करते हैं। इसलिए चुनावों में इसकी मांग बढ़ती है और आपूर्ति प्रभावित होती है। दाम लगभग दोगुने हो जाते हैं। व्यापारी बताते हैं कि आदिवासी जिलों की राजनीति में ग्रामीण मतदाताओं का अहम रोल होता है। वे ही प्रत्याशियों की हार जीत का फैसला करते है। क्योंकि शहरी वोट विभाजित हो जाते हैं, लेकिन ग्रामीणों द्वारा किया जाने वाला मतदान एक तरफा होता है। जो प्रत्याशी के राजनीतिक भविष्य को तय करता है। ग्रामीण को अपने पक्ष में करने के लिए उम्मीदवार सरपंचों और अन्य स्थानीय नेताओं की मदद लेते हैं। वे नेताओं और लोगों को कड़कनाथ की दावत का प्रभोलन भी देते हैं।

आदिवासी जिलों के ग्रामीण बेल्ट में है ये परंपरा

आमतौर पर आदिवासी जिलों के ग्रामीण इलाकों में यह कथित परंपरा विद्यमान है। इसके तहत आदिवासी जिलों के हजारों फलियों में सार्वजनिक बैठकों के बाद होने वाले भोजन में बकरों एवं मुर्गों का इस्तेमाल आमतौर पर किया जाता है। यदि बैठकें अपने हित या पक्ष में करवानी हैं, तो फिर प्रत्याशियों को ऐसी हर बैठक के लिए बकरे, मुर्गे, शराब के साथ-साथ फलिये के प्रभावशाली व्यक्ति को कुछ नकदी दिया जाना लाजमी है। अधिकांश फलियों में यह परंपरा विद्यमान है।

चुनाव साल में कुछ इस तरह तैयार करते हैं व्यापारी

चुनाव की घोषणा से पहले ही कई नेताओं झाबुआ के कड़कनाथ और अन्य देशी मुर्गे का स्टॉक कर लेते हैं। क्रॉस ब्रीड कड़कनाथ जो चुनाव घोषणा के पहले तक 900 रुपये में बिक रहा था, जो घोषणा के बाद 1100 रुपये में खुले बाजार में अब बिकने लगा है। वहीं देशी कडकनाथ जो 1000 रुपये तक में बिकता था। वह अब 1500 से 2000 रुपये तक पहुंच गया है। अब इसकी कीमतों में ओर तेजी आ जाएगी। स्थानीय व्यापारियों का कहना है कि विधानसभा चुनाव के साल में वोटिंग के चार-पांच महीने पहले से चूजे लाकर बड़ा करते हैं और प्रचार अभियान के दौरान अच्छा मुनाफा कमाते हैं।

एक्ट्रा आयरन का सोर्स है कड़कनाथ

कड़कनाथ मुर्गे का रंग इसलिए काला होता है,क्योंकि इसमें अतिरिक्त आयरन और मेलोनिन पाया जाता है। कड़कनाथ मुर्गे के सेवन से मानव शरीर की इम्यूनिटी बढ़ती है, इसलिए इसके सेवन की सलाह दी जाती है।

...सनातनी जीवन-पद्धति की सीख देता नवरात्रि उत्सव

सनातन धर्म स्त्री पुरुष में भेद नहीं करता है तथा शक्ति की दिव्यता एवं उसकी उपस्थिति को महत्व देता है। नवरात्र बुराई पर अच्छाई की जीत के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। लंका पर विजय प्राप्ति से पहले श्रीराम ने भी शक्ति को पूजा था।

नवरात्रि में देवी की उपासना न केवल भक्ति, शारीरिक शुद्धि एवं उत्सव है बल्कि नकारात्मक विचारों को दूर कर सकारात्मकता को स्वयं में समाहित करना भी है।

भारत में, नवरात्र उत्सव पूरे जोरों पर है, यह उल्लास, ऊर्जा, पूजा, उत्सव और सकारात्मकता का समय है। इन नौ दिनों में देवी की अराधना एवं व्रत उपवास न केवल शारीरिक शद्धि देते हैं बल्कि लोगों को आध्यात्मिक की ओर भी अग्रसर करते हैं। सनातन धर्म स्त्री पुरुष में भेद नहीं करता है तथा शक्ति की दिव्यता एवं उसकी उपस्थिति को महत्व देता है। नवरात्र बुराई पर अच्छाई की जीत के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। लंका पर विजय प्राप्ति से पहले श्रीराम ने भी शक्ति को पूजा था। नवरात्र में मां दुर्गा की काली, लक्ष्मी एवं सरस्वती के रूप में पूजी जाती है। शक्ति की पूजा का न केवल धार्मिक महत्व है बल्कि ऋतुओं एवं कृषि की दृष्टिकोण से भी महत्व है। शुद्धता के साथ किया गया नवरात्र व्रत का सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व भी है। यह त्यौहार न केवल उत्तर भारत में बल्कि देश के कोने-कोने में मनाया जाता है।

हिंदू धर्म दिव्य शक्ति और उसकी उपस्थिति के महत्व को समझता है। नवरात्र बुराई पर अच्छाई की जीत का जश्न मनाती है। नवरात्र का त्यौहार गर्मी और सर्दी से पहले मनाया जाता है। श्रीराम ने भी लंका प्रस्थान से पहले दुर्गा पूजा की और विजयी होकर लौटे। नवरात्र नौ दिनों को संदर्भित करती है, जिनमें से प्रत्येक का अपना महत्व है। यहां दुर्गा मां की पूजा काली, लक्ष्मी और सरस्वती के रूप में की जाती है।

जब भी तामसिक, राक्षसी और क्रूर लोग शक्तिशाली हो जाते हैं और सात्विक, धार्मिक मनुष्यों को परेशान करना शुरू कर देते हैं, तब देवी धर्म की पुनर्स्थापना के लिए अवतार लेती हैं। यह इस देवता का व्रत है। ऐसा माना

जाता है कि नवरात्रि के दौरान देवी तत्त्व सामान्य से हजारों गुना अधिक सक्रिय होता है। इस सिद्धांत से सबसे अधिक आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को नवरात्रि की अवधि के दौरान जितना संभव हो सके 'श्री दुर्गा देव्यै नमः' का जाप करना चाहिए।

पहले तीन दिनों तक, दुर्गा मां की पूजा मां काली के रूप में की जाती है, जो हमारी सभी अशुद्धियों को नष्ट कर देती है। अगले तीन दिनों तक, उन्हें माता लक्ष्मी के रूप में पूजा जाता है, जो प्रचुर धन प्रदान करती हैं। अंतिम तीन दिनों के दौरान, उन्हें माता सरस्वती के रूप में पूजा जाता है, जो लोगों को ज्ञान और बुद्धि का आशीर्वाद देती हैं। नवरात्र का त्यौहार एक शक्तिशाली राक्षस महिषासुर पर मां दुर्गा की जीत की याद दिलाता है। राक्षस महिषासुर कोई साधारण राक्षस नहीं था, क्योंकि उसे गहरी तपस्या के बाद भगवान शिव से आशीर्वाद मिला था। शिव जी के आशीर्वाद ने उन्हें अमरता प्रदान की और उन्हें मृत्यु से बचाया। इस वरदान को प्राप्त करने के परिणामस्वरूप, उसने पृथ्वी पर निर्दोष लोगों को मारकर विनाश का नृत्य शुरू किया। इस दुष्ट राक्षस को खत्म करने के लिए मां दुर्गा का जन्म हुआ।

पूरे भारत में, नवरात्रि उत्सव उत्साह और उमंग के साथ मनाया जाता है। देवी को आमतौर पर पूर्व में मां काली के रूप में पूजा जाता है, और विभिन्न पंडाल बनाए जाते हैं। पश्चिमी भारत में इस त्यौहार को गरबा और डांडिया के साथ मनाया जाता है। महाराष्ट्र में 'घटस्थापना' नामक एक सांस्कृतिक परंपरा का अभ्यास उन महिलाओं द्वारा किया जाता है जो अनुष्ठान करती हैं और सांस्कृतिक परंपराओं का पालन करती हैं। नवरात्रि दिव्य स्त्री ऊर्जा या शक्ति का उत्सव है, जिसे देवी दुर्गा के रूप में जाना जाता है। यह उन्हें सर्वोच्च देवी के रूप में सम्मानित करता है जो शक्ति और सुरक्षा का प्रतीक है। यह त्योहार राक्षस महिषासुर पर देवी दुर्गा की जीत का जश्न मनाता है, जो बुराई और अज्ञानता का प्रतिनिधित्व करता है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, दुर्गा ने महिषासुर से नौ दिनों और रातों तक युद्ध किया और अंततः दसवें दिन उसे हरा दिया, जिसे विजयदशमी या दशहरा के रूप में मनाया जाता है।

नवरात्रि के दौरान, नौ दिनों में देवी दुर्गा के नौ अलग-अलग रूपों या अभिव्यक्तियों की पूजा की जाती है। इन रूपों को नवदुर्गा के नाम से जाना जाता है और ये उनकी दिव्य शक्ति के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रत्येक दिन देवी के एक विशिष्ट रूप को समर्पित है, जो भक्तों को उनके विभिन्न गुणों का आह्वान करने की अनुमति देता है। नवरात्रि आम तौर पर ऋतु परिवर्तन के आसपास आती है, जो मानसून से शरद ऋतु में संक्रमण का प्रतीक है। भारत के कुछ क्षेत्रों में, यह फसल के मौसम से जुड़ा हुआ है और कृषि इनाम का जश्न मनाने के समय के रूप में देखा जाता है।

भक्त नवरात्रि के दौरान उपवास रखते हैं और शुद्धिकरण प्रथाओं में संलग्न होते हैं। उपवास को शरीर और मन को शुद्ध करने और आध्यात्मिक शुद्धता प्राप्त करने के साधन के रूप में देखा जाता है। नवरात्रि न केवल एक धार्मिक त्योहार है बल्कि भारत में एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्रम भी है। इसमें नृत्य प्रदर्शन, संगीत, सामुदायिक समारोह और गुजरात में गरबा और डांडिया रास जैसे जीवंत जुलूस शामिल हैं। भक्त इस अवधि का उपयोग अपनी आध्यात्मिक प्रथाओं को तेज करने, अपनी भक्ति को गहरा करने और नकारात्मक गुणों के खिलाफ अपनी आंतरिक लड़ाई पर विचार करने, देवी दुर्गा की शक्ति और मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए करते हैं।

माता दुर्गा आदि परा शक्ति, आदिम सार्वभौमिक माता और ब्रह्मांड की सबसे शक्तिशाली शक्ति की अभिव्यक्ति हैं। अधिकांश समय दुर्गा की शक्ति सभी शक्ति देवियों और शस्त्र देवों तक फैली रहती है। माता दुर्गा परम शक्ति का अवतार हैं और इतनी खतरनाक हैं कि वह संपूर्ण देवशक्ति बनकर विलीन हो जाती हैं और अधिकांश समय परोपकारी माता पार्वती के रूप में विद्यमान रहती हैं।

बाहरी शक्ति माया जो कि छाया शक्ति की प्रकृति की है, सभी लोगों द्वारा दुर्गा के रूप में पूजा की जाती है, जो इस सांसारिक दुनिया की निर्माण, संरक्षण और विनाश करने वाली है। यहां, दुर्गा देवी को भगवान की बाहरी शक्ति के रूप में संबोधित किया जाता है, जो भौतिक ब्रह्मांड के निर्माण, रखरखाव और विनाश का महत्वपूर्ण कारण है। आध्यात्मिक होने के कारण भगवान महाविष्णु को इस भौतिक मामले से कोई सरोकार नहीं है। इसीलिए, वह शंभू और उसकी पत्नी को जन्म देता है, जो उसके लिए कार्य करते हैं।

नवरात्रि में देवी पूजन एक परंपरा है जो सहस्राब्दियों से चली आ रही है, एक प्राचीन ज्ञान है जिसने पीढ़ियों को कायम रखा है, और जीवन का एक तरीका है जिसने अनगिनत आत्माओं को उनकी आध्यात्मिक यात्राओं पर मार्गदर्शन किया है। यह परम्परा न केवल लोगों को आध्यात्मिकता की ओर ले जाती है बल्कि एक विशेष जीवनशैली अपनाने को प्रेरित करती है। नवरात्रि में लोगों की जीवन शैली ऐसी हो जो रीति-रिवाज, आहार पद्धतियां, धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठान, पवित्र स्थान या यहां तक कि उनकी विचार प्रक्रिया का सार हो।

नवरात्रि समारोह लोगों को ऊर्जा और सकारात्मकता से भर देते हैं और बुराई पर अच्छाई में उनके विश्वास को मजबूत करते हैं। सनातन धर्म सत्तावाद पर आधारित कोई पंथ या संप्रदाय नहीं है, जहां एक व्यक्ति या एक संगठन के आदेशों को पवित्र माना जाता है। आध्यात्मिक मुक्ति पाने के लिए व्यक्ति को शक्ति की आवश्यकता होती है, जिसे सनातन संस्कृति का एक अनिवार्य हिस्सा माना जाता है। समग्र विकास प्राप्त करने के लिए, सनातन परंपरा मूल्यों को आत्मसात करने और शिव और शक्ति दोनों की ऊर्जा को शामिल करने पर जोर देती है। भारत में स्त्रियों का सम्मान और पूजा की जाती है।

प्रगतिशीलता एवं आधुनिकता की होड़ में संस्कार का पक्ष पीछे न छूट जाए, इसका प्रयास करना होगा। शिक्षा, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में समान भागीदारी, जागरूकता के प्रयास, तकनीकी ज्ञान, नौकरियों में समान अवसर सभी में समानता आवश्यक है। परिवार के निर्णयों में समान सहभागिता प्रकट होनी चाहिए। कुरीतियों से मुक्त समाज का वातावरण ऐसा हो कि स्त्री कहीं भी, किसी भी समय अपने को सुरक्षित अनुभव करे। कुदृष्टि रखने वालों पर कठोर कार्रवाई आवश्यक है। हमारी मान्यता है कि "भक्ति में ही शक्ति है।' नए अन्न के आगमन से पूर्व व्रत रखकर शरीर को शुद्ध करना औषधीय विज्ञान है। आंतरिक शुचिता शरीर के लिए आवश्यक है। आंतरिक स्वच्छता बढ़ाते हुए शरीर की प्रतिरोधक क्षमता का विकास हमें अनेक रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है, जिसके कारण आत्म शक्ति का विकास होता है। यह शक्ति ही हमें आंतरिक एवं बाह्य शत्रुओं से लड़ने की ताकत प्रदान करती है। लोकतंत्र में जन शक्ति ही वास्तविक शक्ति है। श्रीराम ने वनवासी समाज को साथ लेकर रावण पर विजय प्राप्त की थी। हमें भी पिछड़े समाज की सोई हुई शक्ति को जागृत करना होगा।

समाज को तोड़ने वाले विध्वंसक तत्वों को परास्त करना होगा। एकता एवं एकजुटता का भाव जागृत करते हुए सर्वत्र भारत माता के जय के उद्घोष को जगाना होगा। समरस, जागरूक सक्रिय समाज शक्ति ही देश की आधार शक्ति बनेगी। धर्म की अधर्म पर, सत्य की असत्य पर, मानवता की दानवता पर विजय का यह सिद्धांत ही हमारी संस्कृति का मूल तत्व है। "सत्यमेव जयते" के रूप में मुखरित होने वाला मंत्र ही हमारी प्रेरणा है। अपनी संस्कृति का गौरव एवं स्वाभिमान लेकर हम भारत की शक्ति का जागरण करते हुए विश्वकल्याण में रत हों, यही विजयदशमी का संदेश है।

दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदल देगा मां दुर्गा का यह मंत्र

जिन लोगों की आर्थिक स्थिति खराब रहती हैं और धन की कमी बनी रहती है। ऐसे में इन लोगों को मां दुर्गा का पूजन जरूर करना चाहिए। हांलाकि मां दुर्गा की पूजा-अर्चना में कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

मां दुर्गा को पंच देवों में से एक माना जाता है। बताया जाता है कि जो भी जातक आस्था पूर्वक मां दुर्गा की पूजा करते हैं। उनका दुर्भाग्य दूर होता है और भाग्य जाग उठता है। वहीं जो व्यक्ति विधि-विधान और मंत्रों सहित मां दुर्गा की पूजा करता है। उन्हें हर तरह का सुख प्राप्त होता है और व्यक्ति की मुसीबतें दूर होती है। बता दें कि कुछ लोगों की कुंडली में कुछ ऐसे ग्रह दोष होते हैं, जिसके कारण उनको कड़ी मेहनत के बाद भी मनमुताबिक सफलता नहीं मिल पाती है।

इन लोगों की आर्थिक स्थिति खराब रहती हैं और धन की कमी बनी रहती है। ऐसे में इन लोगों को मां दुर्गा का पूजन जरूर करना चाहिए। हांलाकि मां दुर्गा की पूजा-अर्चना में कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। दुर्गा पूजा करने वाले जातकों को अधर्म से बचने के साथ ही किसी तरह के गलत कार्य नहीं करने चाहिए। उन्हें बुरे विचारों से दूर रहना चाहिए। स्त्री का सम्मान करने वाले जातकों की पूजा मां दुर्गा फौरन स्वीकार करती हैं।

जो जातक मां दुर्गा की विधि-विधान और श्रद्धापूर्वक पूजा करता है। उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। वहीं ऊपर बताई गई बातों का ध्यान रखने से मां दुर्गा की पूजा करनी चाहिए। इन जातकों को शुक्रवार को कन्या पूजन और धन का दान करना चाहिए। वहीं सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि कर पूजाघर में घी का दीपक जलाएं।

इस मंत्र का करें जाप : मां दुर्गा की कृपा पाने के लिए उनकी पूजा के साथ ही 'ऊँ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः' मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिए। कुश या फिर चटाई के आसन पर बैठकर इस मंत्र का जाप करना शुभ होता है। इस मंत्र के जाप के लिए आप तुलसी या चंदन की माला का उपयोग करना चाहिए। ऐसे में आप सूर्योदय से पहले उठकर स्नान आदि कर पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। फिर इस मंत्र का जाप करना चाहिए। वहीं आप चाहें तो शाम को भी इस मंत्र का जाप कर सकते हैं। शाम के समय पश्चिम दिशा में मुख करके इस मंत्र का जाप करना चाहिए। इस मंत्र का कम से कम 40 दिन तक जाप करना चाहिए। इस तरह से पूजा करने पर आपको सोया हुआ भाग्य जाग जाएगा।

मिलेगा भाग्य का साथ : बता दें कि मां दुर्गा की पूरे मनोयोग से प्रार्थना करनी चाहिए। आप चाहें तो शुक्रवार के दिन से एक प्रयोग भी शुरू कर सकते हैं। इसके लिए शुक्रवार की सुबह स्नान आदि कर ताजी रोटी लेकर मां दुर्गा के मंदिर जाएं। फिर मां दुर्गा की प्रतिमा के सामने खड़े होकर वह रोटी अपने सिर से 21 बार वार लें। इस दौरान आपको 'ऊँ दुर्भाग्यनाशिनि दुं दुर्गायै नमः' मंत्र का जाप कम से कम 108 बार करना है। इसके बाद मां के सामने रोटी रखकर दीपक जलाएं और विधि-विधान से मां दुर्गा की पूजा करें। फिर यह रोटी किसी कुत्ते को खिला दें। बताया जाता है कि इस उपाय को करने से व्यक्ति का दुर्भाग्य खत्म होता है और किस्मत जाग उठती है।

समस्त क्षेत्रावासियों एवं देशवासियों
को दीपावली के पावन पर्व की
हार्दिक शुभकामनाएं

आनंद कुमार
एसआई एवं टेकनपुर थाना प्रभारी

सभी देशवासियों को
दीपावली की...
हार्दिक शुभकामनाएं

एस.के. पांडे
चौकी प्रभारी आरपीएफ, डबरा

अशोक कुमार पांडे
प्र. आ. आरपीएफ, डबरा

जोधपुर मिष्ठान्न भंडार डबरा की ओर से
समस्त डबरा वासियों को दीपावली की
बहुत बहुत शुभकामनाएं
शुभ दिपावली

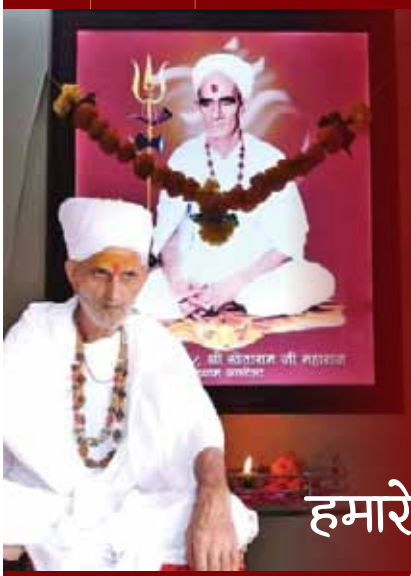

हमारे यहाँ शुद्ध एवं ताजी मिठाईयां
सदैव उपलब्ध रहती है

शुभकामनाएं कर्ता : प्रो. महेंद्र एवं समस्त परिवार

साख व्यवसाय में कार्यरत

दि स्टेट सिटीजन साख सहकारी संस्था मर्यादित, डबरा

हमारी संचालित जमा योजनाएं

- बचत अमानत खाता
- दैनिक अमानत खाता
- सावधि बचत अमानत खाता
- अनिवार्य अमानत खाता
- आवर्ती अमानत खाता
- अल्पावधि अमानत खाता
- मासिक आय योजना

राधेश्याम गुप्ता डायरेक्टर

शुभ दीपावली

हमारी संचालित ऋण योजनाएं

- प्राथमिक ऋण
- वाहन ऋण
- दो पहिया वाहन ऋण
- उपभोक्ता ऋण
- स्वर्ण आभूषण ऋण
- दैनिक जमा ऋण
- सावधि ऋण

पंकज जैन डायरेक्टर

आज ही संस्था में सदस्य बनकर जमा एवं ऋण योजनाओं का लाभ उठाएं।

रोहिरा कॉम्प्लेक्स, संत कंवर राम चौराहा, ठाकुर बाबा रोड, डबरा

सभी देशवासियों को दीपावली की...

हार्दिक शुभकामनाएं

शुभकामनाएं कर्ता : प्रो. नारायण दास गुप्ता

पूर्व पार्षद एवं चेयरमैन नगर पालिका डबरा, पूर्व लॉयन्स क्लब अध्यक्ष

विस चुनाव 2023 चित्रकूट के तुलसी पीठ में बोले पीएम मोदी

संस्कृत हमारी प्रगति व पहचान की भाषा

तुलसी पीठ में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए, प्रधान मंत्री ने कहा, 'मुझे आज कई राम मंदिरों में पूजा करने का सौभाग्य मिला। मुझे जगद्गुरु रामानंदाचार्य का भी आशीर्वाद मिला। चित्रकूट ने मुझे हमेशा प्रेरित किया है।

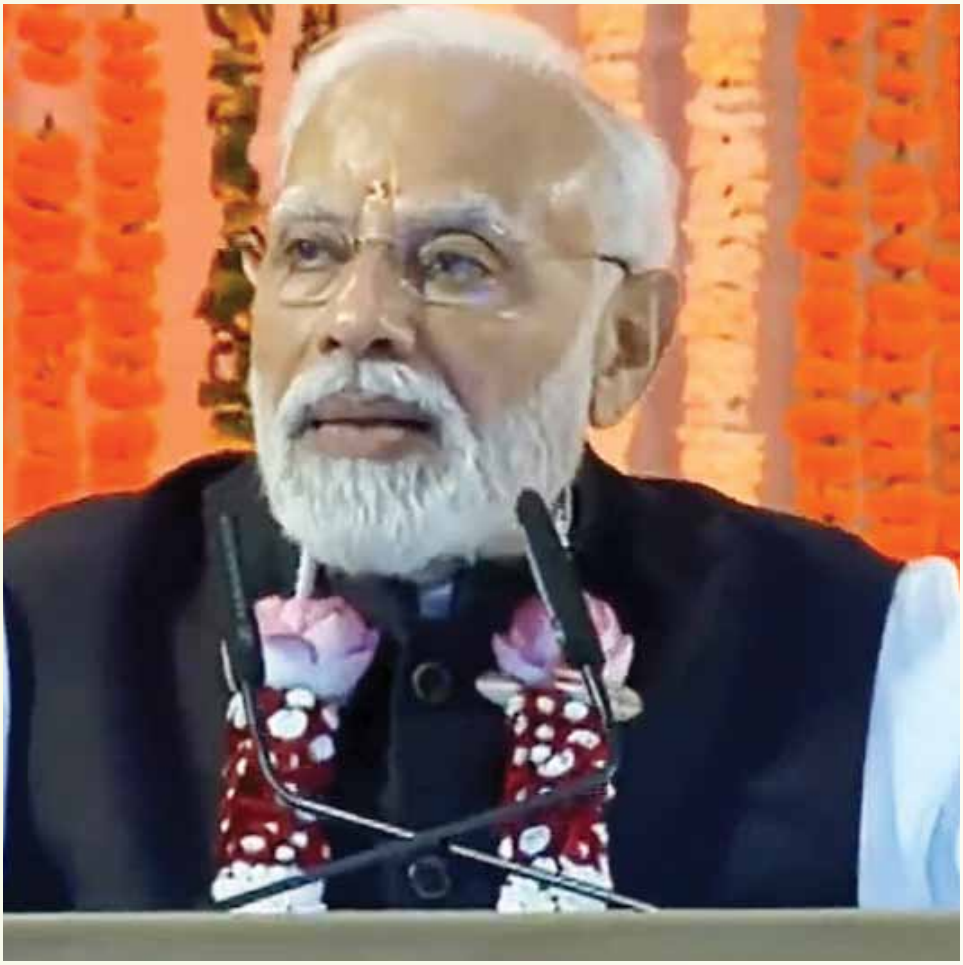

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को मध्य प्रदेश के सतना जिले के चित्रकूट में प्रसिद्ध रघुबीर मंदिर में पूजा-अर्चना की। पीएम मोदी दोपहर में श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के लिए चित्रकूट पहुंचे। प्रधानमंत्री ने तुलसी पीठ का भी दौरा किया। उन्होंने कांच मंदिर में पूजा की और दर्शन किए और तुलसी पीठ के जगद्गुरु रामानंदाचार्य से आशीर्वाद लिया। सार्वजनिक समारोह के दौरान, प्रधान मंत्री मोदी ने तुलसी पीठ में अष्टाध्यायी भाष्य, रामानंदाचार्य चरितम और भगवान श्री कृष्ण की राष्ट्रलीला नामक तीन पुस्तकों का विमोचन किया।

तुलसी पीठ में आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए, प्रधान मंत्री ने कहा, 'मुझे आज कई राम मंदिरों में पूजा करने का सौभाग्य मिला। मुझे जगद्गुरु रामानंदाचार्य का भी आशीर्वाद मिला। चित्रकूट ने मुझे हमेशा प्रेरित किया है।' प्रधानमंत्री ने कहा कि दुनिया में इन हजारों वर्षों में कितनी ही भाषाएं आईं और चली गईं। नई भाषाओं ने पुरानी भाषाओं की जगह ले ली। लेकिन हमारी संस्कृति आज भी उतनी ही अक्षुण्ण और अटल है। संस्कृत समय के साथ परिष्कृत तो हुई लेकिन प्रदूषित नहीं हुई।

मोदी ने कहा कि दूसरे देश के लोग मातृभाषा जाने तो ये लोग प्रशंसा करेंगे लेकिन संस्कृत भाषा जानने को ये पिछड़ेपन की निशानी मानते हैं। इस मानसिकता के लोग पिछले एक हजार साल से हारते आ रहे हैं और आगे भी कामयाब नहीं होंगे। इससे पहले नरेंद्र मोदी लेफ्टिनेंट श्री अरविंद भाई मफतलाल के शताब्दी जन्म वर्ष समारोह में भाग लिया। इस दौरान उन्होंने कहा कि मुझे खुशी है कि अरविंद भाई का परिवार उनकी परमार्थिक पूंजी को लगातार समृद्ध कर रहा है। मैं इसके लिए उनके परिवार के सभी सदस्यों को बधाई देता हूं।

प्रधानमंत्री ने कहा कि चित्रकूट के बारे में कहा गया है -कामद भे गिरि राम प्रसादा। अवलोकत अपहरत विषादा।। अर्थात चित्रकूट के पर्वत, कामदगिरि, भगवान राम के आशीर्वाद से सारे कष्टों और परेशानियों को हरने वाले हैं। उन्होंने कहा कि चित्रकूट की ये महिमा यहां के संतों और ऋषियों के माध्यम से ही अक्षुण्ण बनी हुई है। पूज्य रणछोड़दास जी ऐसे ही संत थे। उनके निष्काम कर्मयोग ने मुझे हमेशा प्रेरित किया है।

देशवासियों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

//अपील//

- निकाय द्वारा जारी कम्प्यूटरीकृत सम्पात्तिकर/जलकर एवं अन्य करों के बिल प्राप्त होने पर यथा समय बिल की राशि जमा कराकर अधिभार से बचें।
- जल ही जीवन है, जल का दुरुपयोग न करें।
- भवन स्वामी अपने-अपने भवनों में रूफ वाटर हार्वेस्टिंग संरचना बनाकर जल स्तर बढ़ाने में सहयोग प्रदान करें।
- नगर पालिका की भूमि एवं शासकीय भूमि पर अतिक्रमण न करें।
- नगर को सुन्दर एवं स्वच्छ बनाने में नगर पालिका का सहयोग करें, कचड़ा नियत स्थानों पर ही डालें
- जन्म-मृत्यु का पंजीयन, समय पर करायें, तथा निकाय से कम्प्यूटरीकृत जन्म/मृत्यु प्रमाण पत्र प्राप्त करें।

श्रीमती लक्ष्मी देवी
अध्यक्ष,नगर पालिका परिषद डबरा

सत्येन्द्र दुबे
उपाध्यक्ष,नगर पालिका परिषद डबरा

प्रदीप भदौरिया
मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पालिका परिषद डबरा

कार्यालय नगर पालिका परिषद, डबरा जिला-ग्वालियर (म.प्र.)

जानकारी हासिल करना जनता का मौलिक अधिकार नहीं...

अटॉर्नी जनरल ने कहा कि अपने आपराधिक रिकार्ड की जानकारी उम्मीदवार चुनावी हलफनामे में उपलब्ध कराता है। फिलहाल जनता को ऐसा कोई अधिकार नहीं दिया गया है कि राजनीतिक चांदी की जानकारी उन्हें उपलब्ध कराई जाए। राजनीतिक दलों को मिलने वाले चंदू को लेकर सुप्रीम कोर्ट में खास सुनवाई हो रही है। इस मामले में इलेक्टोरल बॉन्ड व्यवस्था को चुनौती दिए जाने पर सुनवाई हो रही है। अटॉर्नी जनरल अरे वेंकट रमन ने सुप्रीम कोर्ट में इस संबंध में अपना जवाब दाखिल कर दिया है। इस मामले पर केंद्र सरकार की वकील का कहना है कि किसी राजनीतिक दल को मिलने वाले चांदी की जानकारी हासिल करना नागरिकों का मौलिक अधिकार नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि चांदी की जानकारी लोगों को नहीं मिल पाती सिर्फ इस आधार पर इलेक्टोरल बॉन्ड की व्यवस्था को खारिज नहीं किया जा सकता है। बता दे कि इस मामले पर चीफ जस्टिस डी य चंद्रचूड़ की अध्यक्षता में पांच जजों की संविधान पीठ 31 अक्टूबर को सुनवाई शुरू करेगी। पांच जजों की संविधान पीठ की सुनवाई से पहले सुप्रीम कोर्ट ने अटॉर्नी जनरल से इस मामले पर राय मांगी थी। इस मामले पर अटॉर्नी जनरल ने कहा है कि राजनीतिक दलों को मिलने वाले चांदी के लिए बनाई गई इलेक्टोरल बांड की व्यवस्था एक नीतिगत

विषय है। सुप्रीम कोर्ट के दखल को लेकर यह भी कहा गया कि कोर्ट सिर्फ तभी दखल देता है जब नागरिकों के मौलिक या कानूनी अधिकारों का उल्लंघन होता है। हालांकि इलेक्टरल बॉन्ड की जानकारी पाना किसी भी स्थिति में जनता का अधिकार नहीं है। बल्कि संविधान के अनुच्छेद 19 (1) (c) के तहत संगठन बनाना और उसे चलाना मौलिक अधिकार है। संविधान के आदेश के तहत यह अधिकार राजनीतिक दलों को भी मिलता है। अटॉर्नी जनरल ने कहा कि अपने आपराधिक रिकार्ड की जानकारी उम्मीदवार चुनावी हलफनामे में उपलब्ध कराता है। फिलहाल जनता को ऐसा कोई अधिकार नहीं दिया गया है कि राजनीतिक चांदी की जानकारी उन्हें उपलब्ध कराई जाए। इस मामले में चुनाव आयोग भी अपनी राय पहले दे चुका है। इलेक्टरल बॉन्ड व्यवस्था को लेकर चुनाव आयोग ने कहा था कि इसमें पारदर्शिता नहीं है। चुनाव आयोग ने यह भी कहा था कि यह काले धन को बढ़ावा देने का जरिया हो सकता है।

मध्यप्रदेश विधानसभा निर्वाचन-2023 के लिए 3 दिसंबर को होने वाली मतगणना संबंधी तैयारियों का जायजा लिया

श्री राजन ने सीहोर, देवास, इंदौर में मतगणना स्थल एवं स्ट्रांग रूम का निरीक्षण किया...

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने शुक्रवार को सीहोर, देवास और इंदौर जिले में बनाए गए मतगणना स्थल का अवलोकन किया। उन्होंने 3 दिसंबर को होने वाली मतगणना को लेकर जिलों में की जा रही तैयारियों का जायजा लिया और कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

सीहोर के शासकीय महिला पॉलिटेक्निक कॉलेज में चारों विधानसभाओं की होगी मतगणनाः मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन शुक्रवार को सीहोर जिले की शासकीय महिला पॉलिटेक्निक कॉलेज पहुंचे। मध्यप्रदेश विधानसभा निर्वाचन 2023 अंतर्गत आगामी 3 दिसंबर को सीहोर जिले की चार विधानसभा क्षेत्रों के लिए होने वाली मतगणना के लिए की जा रही तैयारियों का अवलोकन किया। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजन को सीहोर कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री प्रवीण सिंह ने मतगणना के लिए की जा रही व्यवस्थाओं और तैयारियों के बारे में विस्तार से अवगत करवाया।

श्री राजन ने विधानसभावार बनाए गए मतगणना कक्षों में जाकर तैयारियों का जायजा लिया। साथ ही डाक मतपत्रों की गणना के लिए की जा रही तैयारियों, स्ट्रांग रूम की सुरक्षा व्यवस्था को भी देखा। श्री राजन ने मतगणना टेबिल, मतगणना कार्य में संलग्न अमले की संख्या, सुरक्षा व्यवस्था, डाक मतपत्रों की संख्या आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की। इसके साथ ही मतगणना स्थल परिसर में रूके हुए निर्वाचन अभ्यर्थियों के प्रतिनिधियों से चर्चा की तथा सीसीटीवी के माध्यम से कक्ष से ही स्ट्रांग रूम की मॉनीटरिंग संबंधी व्यवस्था को देखा।

मतगणना स्थल पर सभी व्यवस्थाएं सुचारू तरीके से रहे उपलब्ध : मध्यप्रदेश विधानसभा निर्वाचन-2023 की मतगणना 3 दिसम्बर को सुबह 8 बजे से पोस्टल बैलेट की गिनती के साथ शुरू होगी। सुबह 8.30 बजे से ईवीएम में दर्ज मतों की गणना प्रारंभ होगी। श्री राजन ने मतगणना के दिन विद्युत की सतत् आपूर्ति और किसी भी वजह से मतगणना प्रभावित न हो, यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। श्री राजन ने कहा कि मतगणना स्थल पर सभी व्यवस्थाएं सुचारू तरीके से उपलब्ध रहें। मतगणना स्थल के निरीक्षण के पश्चात कलेक्ट्रेट के कोषालय के स्ट्रांग रूम का अवलोकन कर डाक मतपत्र की सुरक्षा व्यवस्था के बारे में भी जानकारी प्राप्त की। उन्होंने ईवीएम के लिए बनाए गए वेयर हाउस का भी निरीक्षण किया तथा निर्वाचन के पश्चात ईवीएम के रखने के लिए की गई व्यवस्थाओं की जानकारी ली।

केंद्रीय विद्यालय बैंक नोट प्रेस देवास में जिले की सभी 5 विधानसभाओं की होगी मतगणनाः मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजन सीहोर जिले का निरीक्षण करने के बाद देवास जिले में मतगणना स्थल केंद्रीय विद्यालय, बैंक नोट प्रेस देवास में जिले की पांचों विधानसभा क्षेत्रों के लिए होने वाली मतगणना के लिए की गई तैयारियों का जायजा लिया।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजन ने विधानसभावार बनाए गए मतगणना कक्षों में जाकर तैयारियों का जायजा लिया। देवास कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्री ऋषव गुप्ता ने केंद्रीय विद्यालय बैंक नोट प्रेस देवास में मतगणना के लिए की जा रही तैयारियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी कि देवास व हाटपीपल्या विधानसभा क्षेत्रों की मतगणना केंद्रीय विद्यालय भू-तल पर स्थित अलग-अलग हॉल में की जाएगी। वहीं सोनकच्छ, खातेगांव व बागली विधानसभा क्षेत्रों की मतगणना प्रथम तल स्थित कक्षों में की जाएगी। इसके साथ ही श्री राजन ने डाक मतपत्रों की गणना के लिए की जा रही तैयारियों, स्ट्रांग रूम की सुरक्षा व्यवस्था को भी देखा। मतगणना टेबल, मतगणना कार्य में संलग्न अधिकारी/कर्मचारियों की संख्या, सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी प्राप्त की।

श्री राजन ने केंद्रीय विद्यालय बैंक नोट प्रेस देवास में बनाये गये कंट्रोल रूम का भी निरीक्षण किया। मतगणना स्थल परिसर में रूके हुए निर्वाचन अभ्यर्थियों के प्रतिनिधियों से चर्चा की तथा सीसीटीवी के माध्यम से कक्ष से ही स्ट्रांग रूम की मॉनीटरिंग संबंधी व्यवस्था को देखा।

इंदौर के नेहरू स्टेडियम में होगी मतगणना : मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजन ने इंदौर के नेहरू स्टेडियम में मतगणना स्थल पहुंचकर तैयारियों और सुरक्षा व्यवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त की। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी इंदौर डॉ. इलैयाराजा टी ने मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री राजन को मतगणना को लेकर की जा रही तैयारियों और सुरक्षा व्यवस्था के बारे में अवगत कराया। श्री राजन ने इंदौर के 9 विधानसभा क्षेत्रों के लिए होने वाली मतगणना हेतु की जा रही तैयारियों का निरीक्षण किया। विधानसभा क्षेत्रवार बनाए गए मतगणना कक्षों में जाकर तैयारियों का जायजा लिया। साथ ही डाक मतपत्रों की गणना के लिए की जा रही व्यवस्थाओं को भी देखा। उन्होंने मतगणना टेबलों, मतगणना कार्य में संलग्न अमले की संख्या, सुरक्षा व्यवस्था, डाक मतपत्रों की संख्या आदि के बारे में जानकारी ली। स्ट्रांग रूम की सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण किया। श्री राजन ने मतगणना स्थल पर स्ट्रांग रूम की सीसीटीवी के माध्यम से निगरानी के लिये बनायी गई व्यवस्था को देखा। मतगणना स्थल परिसर में स्ट्रांग रूम की निगरानी के लिये मौजूद अभ्यर्थियों के प्रतिनिधियों से चर्चा भी की। निरीक्षण के दौरान संभागायुक्त इंदौर श्री मालसिंह सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

2026 तक एआई को प्रशिक्षित करने का डेटा ख़त्म होगा...!

जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) अपनी लोकप्रियता के चरम पर पहुंच रही है, शोधकर्ताओं ने चेतावनी दी है कि उद्योग में प्रशिक्षण डेटा खत्म हो सकता है - वह ईंधन जो शक्तिशाली एआई सिस्टम चलाता है। यह एआई मॉडल, विशेष रूप से बड़े मॉडल के विकास को धीमा कर सकता है, और एआई क्रांति के प्रक्षेपवक्र को भी बदल सकता है। लेकिन वेब पर डेटा की मात्रा को देखते हुए, डेटा की संभावित कमी एक मुद्दा क्यों है? और क्या जोखिम से निपटने का कोई तरीका है? एआई के लिए उच्च गुणवत्ता वाला डेटा क्यों महत्वपूर्ण है? शक्तिशाली, सटीक और उच्च गुणवत्ता वाले एआई एल्गोरिदम को प्रशिक्षित करने के लिए हमें बहुत सारे डेटा की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, चैटजीपीटी को 570 गीगाबाइट टेक्स्ट डेटा या लगभग 300 अरब शब्दों पर प्रशिक्षित किया गया था।

इसी तरह, स्थिर प्रसार एल्गोरिथ्म (जो डीएएलएल-ई, लेंसा और मिडजर्नी जैसे कई एआई छवि-जनरेटिंग ऐप्स के पीछे है) को 5.8 अरब छवि-पाठ जोड़े वाले एलएआईएओएन-5बी डेटासेट पर प्रशिक्षित किया गया था। यदि किसी एल्गोरिदम को अपर्याप्त मात्रा में डेटा पर प्रशिक्षित किया जाता है, तो यह गलत या निम्न गुणवत्ता वाले आउटपुट उत्पन्न करेगा। प्रशिक्षण डेटा की गुणवत्ता भी महत्वपूर्ण है. निम्न-गुणवत्ता वाला डेटा जैसे कि सोशल मीडिया पोस्ट या धुंधली तस्वीरें प्राप्त करना आसान है, लेकिन उच्च प्रदर्शन वाले एआई मॉडल को प्रशिक्षित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म से लिया गया टेक्स्ट पक्षपातपूर्ण भ्रामक हो सकता है, या इसमें दुष्प्रचार या अवैध सामग्री शामिल हो सकती है जिसे मॉडल द्वारा दोहराया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, जब माइक्रोसॉफ्ट ने ट्विटर सामग्री का उपयोग करके अपने एआई बॉट को प्रशिक्षित करने की कोशिश की, तो उसने नस्लवादी और महिलाविरोधी आउटपुट उत्पन्न करना सीख लिया। यही कारण है कि एआई डेवलपर्स किताबों से पाठ, ऑनलाइन लेख, वैज्ञानिक पेपर, विकिपीडिया और कुछ फ़िल्टर की गई वेब सामग्री जैसी उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री की तलाश करते हैं। गूगल असिस्टेंट को अधिक संवादात्मक बनाने के लिए स्व-प्रकाशन साइट स्मैशवर्ड्स से लिए गए 11,000 रोमांस उपन्यासों पर प्रशिक्षित किया गया था। क्या हमारे पास पर्याप्त डेटा है? एआई उद्योग बड़े डेटासेट पर एआई सिस्टम का प्रशिक्षण कर रहा है, यही कारण है कि अब हमारे पास चैटजीपीटी या डीएएलएल-ई 3 जैसे उच्च प्रदर्शन वाले मॉडल हैं। साथ ही, शोध से पता चलता है कि ऑनलाइन डेटा स्टॉक एआई को प्रशिक्षित करने के लिए उपयोग किए गए डेटासेट की तुलना में बहुत धीमी गति से बढ़ रहे हैं।

पिछले साल प्रकाशित एक पेपर में, शोधकर्ताओं के एक समूह ने भविष्यवाणी की थी कि अगर मौजूदा एआई प्रशिक्षण रुझान जारी रहा तो हमारे पास 2026 से पहले उच्च गुणवत्ता वाला टेक्स्ट डेटा खत्म हो जाएगा। उन्होंने यह भी अनुमान लगाया कि निम्न-गुणवत्ता वाला डेटा 2030 और 2050 के बीच समाप्त हो जाएगा, और निम्न-गुणवत्ता वाला छवि डेटा 2030 और 2060 के बीच समाप्त हो जाएगा। लेखांकन और परामर्श समूह पीडब्ल्यूसी के अनुसार, एआई 2030 तक विश्व अर्थव्यवस्था में 15.7 खरब अमेरिकी डॉलर तक का योगदान दे सकता है। लेकिन प्रयोग करने योग्य डेटा ख़त्म होने से इसका विकास धीमा हो सकता है। क्या हमें चिंतित होना चाहिए? हालाँकि उपरोक्त बिंदु कुछ एआई प्रशंसकों को चिंतित कर सकते हैं, स्थिति उतनी बुरी नहीं हो सकती जितनी दिखती है।

भविष्य में एआई मॉडल कैसे विकसित होंगे, इसके बारे में कई चीजों के बारे में अभी कुछ कहना मुश्किल है, साथ ही डेटा की कमी के जोखिम को दूर करने के कुछ तरीके भी हैं। एआई डेवलपर्स के लिए एल्गोरिदम में सुधार करने का एक अवसर है ताकि वे अपने पास पहले से मौजूद डेटा का अधिक कुशलता से उपयोग कर सकें। संभावना है कि आने वाले वर्षों में वे कम डेटा और संभवतः कम कम्प्यूटेशनल शक्ति का उपयोग करके उच्च प्रदर्शन वाले एआई सिस्टम को प्रशिक्षित करने में सक्षम होंगे। इससे एआई के कार्बन फ़ुटप्रिंट को कम करने में भी मदद मिलेगी। एक अन्य विकल्प सिस्टम को प्रशिक्षित करने के लिए सिंथेटिक डेटा बनाने के लिए एआई का उपयोग करना है। दूसरे शब्दों में, डेवलपर्स अपने विशेष एआई मॉडल के अनुरूप क्यूरेट किए गए डेटा को आसानी से उत्पन्न कर सकते हैं।

कई परियोजनाएं पहले से ही सिंथेटिक सामग्री का उपयोग कर रही हैं, जो अक्सर मोस्टली एआई जैसी डेटा-जनरेटिंग सेवाओं से प्राप्त होती हैं। यह भविष्य में और अधिक सामान्य हो जाएगा। डेवलपर्स मुफ़्त ऑनलाइन स्थान के बाहर भी सामग्री खोज रहे हैं, जैसे कि बड़े प्रकाशकों और ऑफ़लाइन रिपॉजिटरी के पास मौजूद सामग्री। इंटरनेट से पहले प्रकाशित लाखों ग्रंथों के बारे में सोचें। डिजिटल रूप से उपलब्ध कराए जाने पर, वे एआई परियोजनाओं के लिए डेटा का एक नया स्रोत प्रदान कर सकते हैं। न्यूज़ कॉर्प, दुनिया के सबसे बड़े समाचार सामग्री मालिकों में से एक (जिसकी अधिकांश सामग्री पेवॉल के पीछे है) ने हाल ही में कहा था कि वह एआई डेवलपर्स के साथ सामग्री सौदों पर बातचीत कर रहा था।

भारत सरकार की बड़ी पहल... मेड इन इंडिया दवाईयां की गई लॉन्च

दुर्लभ बीमारियों के इलाज में आएंगी काम

भारत सरकार ने इसमें 13 दुर्लभ बीमारियों के लिए दवाइयों को बनाना शुरू कर दिया है। केंद्र सरकार वर्तमान में कुल आठ बीमारियों की दवाई पर काम कर रहा है। इन दवाईयों में से कुल चार दवाएं ऐसी हैं जो देश के बाजार में लॉन्च हो चुकी है। अन्य चार दवाइयां वर्तमान में रेगुलेटरी प्रोसेस में चल रही है।

भारत में कई ऐसे मरीज हैं जो दुर्लभ बीमारियों से ग्रसित है। आमतौर पर 1000 लोगों में से एक व्यक्ति को होने वाली बीमारी को दुर्लभ बीमारी माना जाता है। अगर भारत में 200 से अधिक बीमारियां होती हैं तो कुल सात प्रतिशत आबादी किसी न किसी दुर्लभ बीमारी से पीड़ित है।

इस तरह के मामलों में अधिकतर ऐसे मामले होते हैं जिसमें 80 प्रतिशत लोग जेनेटिक कारण से बीमारी की चपेट में आते है। रिपोर्ट की मानें तो देश में लगभग 10 करोड़ लोग ऐसे हैं जो किसी दुर्लभ बीमारी से पीड़ित है। इन बीमारियों से पीड़ित लोगों को अब राहत होगा।

भारत सरकार ने इसमें 13 दुर्लभ बीमारियों के लिए दवाइयों को बनाना शुरू कर दिया है। केंद्र सरकार वर्तमान में कुल आठ बीमारियों की दवाई पर काम कर रहा है। इन दवाईयों में से कुल चार दवाएं ऐसी हैं जो देश के बाजार में लॉन्च हो चुकी है। अन्य चार दवाइयां वर्तमान में रेगुलेटरी प्रोसेस में चल रही है। आगामी कुछ महीनो में ये दवाएं बाजार में आएंगी। बता दें कि जिन बीमारियों की चर्चा हो रही है उसमें gaucher diseases से लेकर spinal muscular atrophy जैसी बीमारियां भी शामिल है।

भारत में बनेगा इंजेक्शन

सरकार की पहल के बाद अब कई बीमारियों के टीके देश में ही बन सकेंगे। गौरतलब है कि एसएमए ऐसी बीमारी है जिसकी चर्चा लगातार होती रहती है। इस बीमारी को दूर करने के लिए जेनेटिक टीका कुल 16 करोड़ रुपये में आता है। इस टीके का नाम 'Zolgensma' है जो अब भारत में ही बन सकेगा। इस इंजेक्शन को बनाने के लिए काम किया जा रहा है। इस टीके के भारत में ही बनने से करोड़ों का इलाज लोगों को लाखों रुपये में मिल सकेगा।

इस टीके के अलावा भारत में ही अब Tyrosinemia का टीका बन सकेगा। ये ऐसी बीमारी है जो पैदाइश से ही बच्चे में होती है। इस बीमारी में बच्चे के लीवर पर असर होता है। इस बीमारी का इलाज कराने में सालाना छह करोड़ रुपये का खर्चा आता है। मगर इस बीमारी के लिए दवाई का इंतजाम अब भारत सरकार देश में करने में जुटी है। ये दवा भारत में बन रही है जिससे छह करोड़ की दवाई का खर्च महज 2.5 लाख रुपये में हो सकेगा। इस दवाई का खर्चा सीधे सौ गुणा कम हुआ है।

अगर Gaucher बीमारी की बात करें तो इसका इलाज करवाने में सालाना 3.5 करोड़ रुपये का खर्च आता है। इस बीमारी का इलाज करने के लिए हर दवाई विदेश से आती है। विदेश से आने के कारण इसका खर्चा काफी अधिक है। मगर भारत में जब इस दवाई का निर्माण होगा तो इसका खर्च सिर्फ तीन से छह लाख के बीच होगा। ये दवाई 60 गुणा तक कम खर्च पर उपलब्ध होगी।

केंद्र सरकार ने कर्मचारियों को दी खुशखबरी, DA में किया शानदार इजाफा

केंद्र सरकार द्वारा महंगाई भत्ता बढ़ाए जाने के बाद कर्मचारियों के वेतन में इजाफा होगा। वेतन में बड़ी मात्रा में बढ़ोतरी होगी। इसका लाभ उन कर्मचारियों को होगा जो 5वें और 6ठे वेतन आयोग के तहत सैलरी पाते है। इस संबंध में वित्त मंत्रालय ने भी बयान जारी किया है।

केंद्र सरकार ने वर्ष 2023 के बीतने से पहले कर्मचारियों को बड़ी राहत दी है। केंद्र सरकार ने कुछ केंद्र कर्मचारियों के लिए महंगाई भत्ते (डियरनेस अलाउंस) में बढ़ोतरी की घोषणा की है। महंगाई भत्ते में ये इजाफा 1 जुलाई 2023 से प्रभावी होगा। कर्मचारियों को तोहफा देते हुए केंद्र सरकार ने महंगाई भत्ते में 15 से 18 प्रतिशत का इजाफा किया है।

केंद्र सरकार द्वारा महंगाई भत्ता बढ़ाए जाने के बाद कर्मचारियों के वेतन में इजाफा होगा। वेतन में बड़ी मात्रा में बढ़ोतरी होगी। इसका लाभ उन कर्मचारियों को होगा जो 5वें और 6ठे वेतन आयोग के तहत सैलरी पाते है। इस संबंध में वित्त मंत्रालय ने भी बयान जारी किया है।

इस संबंध में वित्त मंत्रालय ने बयान जारी कर कहा कि कर्मचारियों के डीए में बढ़ोतरी छठे वेतन आयोग और 5वें वेतन आयोग के तहत हुई है। इस संबंध में मेमोरेंडम 16 नवंबर को जारी किया जा चुका है जिसमें कहा गया कि डिपार्टमेंट ऑफ पब्लिक इंटरप्राइजेज के कर्मचारियों के महंगाई भत्ते में इजाफा हुआ है। इस मेमो के मुताबिक छठे वेतन आयोग के पूर्व संशोधित ग्रेड पे वेतन पाने वाले पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइजेज के कर्मचारियों के लिए महंगाई भत्ता 212 प्रतिशत से बढ़कर 230 प्रतिशत हो गया है। महंगाई भत्ते में 18 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। ये बढ़ोतरी 1 जुलाई 2023 से लागू होगी जिसके तहत डीए बढ़ने से वेतन में सात हजार की बढ़ोतरी हो सकती है।

राजस्थान : महिला वोटरों ने कहा- हमारा वोट महिला सुरक्षा के मुद्दे पर जा रहा है

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राजस्थान में विधानसभा चुनाव के लिए जारी मतदान के बीच राज्य के मतदाताओं से रिकॉर्ड संख्या में वोट डालने का आग्रह किया। मोदी ने पहली बार मतदान करने वाले युवा मतदाताओं को शुभकामनाएं भी दीं।

राजस्थान में विधानसभा की 199 सीट पर चुनाव के लिए मतदान सुबह सात बजे शुरू हो गया और सत्तारुढ़ कांग्रेस एवं विपक्षी भाजपा के नेताओं ने चुनाव में अपनी-अपनी जीत का विश्वास जताया है। राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने भरोसा जताया है कि मतगणना के बाद ''कमल खिलेगा'' तो वहीं राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने विश्वास जताया कि उनकी पार्टी राज्य में फिर से सरकार बनाएगी। इसके अलावा कांग्रेस नेता सचिन पायलट ने भी वोट डालने से पहले विश्वास जताया कि विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की जीत होगी। भाजपा नेता सतीश पूनियां ने कहा कि लोग राजस्थान में 'डबल इंजन' सरकार बनाने के लिए वोट करेंगे। उन्होंने कहा कि 2014 में नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने से देश में जो बदलाव आना शुरू हुआ, वह जारी है और मोदी सबसे लोकप्रिय नेता हैं। वहीं केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने दावा किया कि राज्य में भाजपा की सरकार बनेगी। उन्होंने उम्मीद जताई कि कि मतदाता राजस्थान में इतिहास रचने के लिए मतदान करेंगे।

इस बीच, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राजस्थान में विधानसभा चुनाव के लिए शनिवार को जारी मतदान के बीच राज्य के मतदाताओं से रिकॉर्ड संख्या में वोट डालने का आग्रह किया। मोदी ने पहली बार मतदान करने वाले युवा मतदाताओं को शुभकामनाएं भी दीं। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, ''राजस्थान विधानसभा चुनाव के लिए आज वोट डाले जाएंगे। सभी मतदाताओं से मेरा निवेदन है कि वे अधिक से अधिक संख्या में अपने मताधिकार का प्रयोग कर वोटिंग का नया रिकॉर्ड बनाएं। इस अवसर पर पहली बार वोट देने जा रहे राज्य के सभी युवा साथियों को मेरी ढेरों शुभकामनाएं।''

दूसरी ओर, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी और पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने राजस्थान विधानसभा चुनाव के लिए मतदाताओं से बड़ी संख्या में मतदान करने और ''विकास की गारंटी'' को चुनने की अपील की। खरगे ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, 'बचत, राहत, बढ़त और सपनों की ऊंची उड़ान, कल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित जनता... चुनेगी केवल राजस्थान ! राजस्थान की जागरूक जनता को मालूम है कि उनका एक बहुमूल्य वोट उनकी ख़ुशहाली की गारंटी है।' उन्होंने कहा, 'महान वीरों की धरा व सामाजिक एकता के प्रतीक राजस्थान की जनता से अनुरोध है कि मतदान अवश्य करें। ये सोचें कि आपके सुधरते जीवन में कोई रुकावट न आए।'

हम आपको बता दें कि राज्य की 200 विधानसभा क्षेत्रों में से 199 पर मतदान शांतिपूर्ण तरीके से जारी है। करणपुर सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी के निधन के कारण चुनाव स्थगित कर दिया गया है। मतदान को लेकर मतदाताओं के बीच भी उत्साह देखते बन रहा है। सुबह-सुबह ही लोग मतदान केंद्रों पर पंक्तियों में नजर आये। अधिकतर महिलाओं ने कहा कि उनका वोट महिला सुरक्षा के मुद्दे पर गया है। अन्य कई महिलाओं ने भी कहा कि राजस्थान में महिला सुरक्षा सबसे बड़ा मुद्दा है।

जहां तक नेताओं की प्रतिक्रियाओं की बात है तो आपको बता दें कि राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने भरोसा जताया कि राजस्थान विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत होगी और तीन दिसंबर को मतगणना के बाद ''कमल खिलेगा।'' मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के ''अंडर करंट'' संबंधी बयान पर टिप्पणी करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने कहा, ''मैं उनसे सहमत हूं। वास्तव में 'अंडर करंट' है लेकिन भाजपा के पक्ष में है। तीन दिसंबर को कमल खिलेगा।'' राजे ने मतदाताओं, विशेषकर नये मतदाताओं से वोट डालने का आह्वान किया।

भाजपा की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष सीपी जोशी ने भी दावा किया कि विधानसभा चुनाव में भाजपा को ऐतिहासिक जनादेश मिलेगा। जोशी ने चित्तौड़गढ़ में कहा, ''कांग्रेस ने पांच साल के अपने शासन काल में लोगों को धोखा दिया और केवल भ्रष्टाचार किया। मतदाता आज मतदान में इसका जवाब देंगे।'' उन्होंने कहा, ''सत्ता में आने के बाद, कांग्रेस वादे भूल गई। उसने केवल भ्रष्टाचार किया है और लोगों को धोखा दिया है।'' इसी तरह भाजपा के सांसद व झोटवाड़ा सीट से विधानसभा चुनाव लड़ रहे राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कहा कि मतगणना के दिन सब कुछ साफ हो जाएगा। गहलोत के ''अंडर करंट'' वाले बयान को लेकर उन्होंने कहा, ''शायद उन्हें मतगणना के दिन करंट महसूस हो।''

दूसरी ओर, राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने दावा किया कि राज्य में सत्तारुढ़ कांग्रेस के खिलाफ कोई 'सत्ता विरोधी' लहर नहीं है। उन्होंने विश्वास जताया कि पार्टी राज्य में फिर से सरकार बनाएगी। गहलोत ने जोधपुर में कहा कि कांग्रेस का चुनाव प्रचार अभियान विकास के मुद्दों पर केंद्रित है, जबकि प्रधानमंत्री, केंद्रीय गृह मंत्री, भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों तथा उसके अन्य नेताओं ने अपने प्रचार में 'भड़काऊ' भाषा का इस्तेमाल किया। भाजपा नेताओं के चुनावी भाषणों की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, ''जनता समझ चुकी है। ऐसा लग रहा है कि कांग्रेस सरकार फिर से सत्ता में आएगी।'' भाजपा द्वारा 'लाल डायरी' और अन्य मुद्दों पर केवल अशोक गहलोत को ही निशाना बनाए जाने के सवाल पर, उन्होंने कहा कि भाजपा नेता इस बात से परेशान हैं कि वे खरीद-फरोख्त के तमाम प्रयासों के बावजूद राज्य की चुनी हुई सरकार नहीं गिरा सके। गहलोत ने कहा कि भाजपा नेताओं ने जिस भाषा का इस्तेमाल किया वह अस्वीकार्य है। उन्होंने कहा, ''वे भड़काऊ भाषा का इस्तेमाल कर रहे थे। हमने उन्हें स्थानीय मुद्दों और हमारी योजनाओं पर बात करने की चुनौती दी।'' उनसे पूछा गया कि अगर राज्य में कांग्रेस फिर से सरकार बनाती है तो क्या वह मुख्यमंत्री होंगे, उन्होंने कहा कि कांग्रेस में यह परंपरा है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी विधायकों की राय लेने के लिए पर्यवेक्षक भेजती है और फिर एक प्रस्ताव पारित किया जाता है, जिसमें सभी चीजें आलाकमान पर छोड़ दी जाती हैं। आलाकमान का निर्णय सभी को स्वीकार्य होता है।

वहीं सचिन पायलट ने कहा, 'मुझे विश्वास है कि कांग्रेस दोबारा सरकार बनाएगी।' उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने अपना चुनाव अभियान जनता के मुद्दों पर केंद्रित किया। उन्होंने कहा कि राज्य में भाजपा बेनकाब हो गई है।

भारत : तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था की ओर...

मजबूत आर्थिक विकास के लिए अनुकूल हैं हालात

बैंकों और कॉरपोरेट्स की स्वस्थ बैलेंस शीट, आपूर्ति शृंखला सामान्यीकरण, व्यावसायिक आशावाद, मजबूत उपभोक्ता भावना और मजबूत सरकारी पूंजीगत व्यय भारत में मजबूत आर्थिक विकास के लिए अनुकूल हैं। इन सबके बल पर भारत तीसरी अर्थव्यवस्था बनने की ओर तेजी से अग्रसर है।

भारत कई क्षेत्रों में जबर्दस्त प्रगति का साक्षी रहा है, जिसमें डिजिटलीकरण, अर्थव्यवस्था को औपचारिक बनाना, विनिर्माण के लिए निवेश आकर्षित करने की खातिर बेहतर नीतिगत माहौल और बुनियादी ढांचे पर खर्च में भारी वृद्धि शामिल है। नीतियों की निरंतरता के कारण भारत के सकारात्मक विकास के लिए आधार तैयार किए गए हैं। वित्त वर्ष-24 की पहली तिमाही में 7.8 फीसदी की वृद्धि के साथ भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बना हुआ है। इस वृद्धि को मजबूत खपत, बुनियादी ढांचे और रियल एस्टेट क्षेत्रों में चल रहे निवेश, सेवा निर्यात में निरंतर वृद्धि, एक संपन्न सेवा क्षेत्र, सकारात्मक उपभोक्ता और व्यावसायिक विकास का समर्थन हासिल है। रिजर्व बैंक के ताजा अनुमानों में वित्त वर्ष-2024 में भारत के लिए 6.5 फीसदी और वित्त वर्ष 2025 में 6.2 फीसदी की वास्तविक जीडीपी वृद्धि का अनुमान लगाया गया है। कई नीतिगत सुधार और समर्थन, सरकार द्वारा विशाल पूंजीगत व्यय पर ध्यान केंद्रित किए जाने, मजबूत कॉरपोरेट एवं बैंक बैलेंस-शीट ने (जिनमें एनपीए पर काबू पा लिया गया है) आने वाले लंबे समय के लिए निरंतर आर्थिक विकास के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया है।

वर्ष 2014 में वैश्विक जीडीपी के मामले में दसवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था रहा भारत अब पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। प्रति व्यक्ति आय के मामले में भी सुधार हुआ है और वर्ष 2014 के 147वें पायदान से ऊपर उठकर अब यह 127वें पायदान पर आ गया है। इस दौरान जीएसटी, आईबीसी, जनधन, आधार, यूपीआई और पीएलआई योजनाएं जैसे ऐतिहासिक सुधार हुए हैं। मुद्रास्फीति पर भी उल्लेखनीय नियंत्रण हुआ है। ऐसा एमएसपी में कम वृद्धि, सौभाग्य से कच्चे तेल/वस्तु की कीमतों में कमी और कोविड के दौरान विवेकपूर्ण उपायों से हुआ है। इसके अलावा, व्यावसायिक सुगमता सूचकांक में भारी उछाल के साथ कारोबारी धारणा में सुधार हुआ है। और अब भारत तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के अपने लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ रहा है।

बुनियादी ढांचों के विकास में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। भारत ने बड़े पैमाने पर सार्वजनिक बुनियादी ढांचे में अपना निवेश बढ़ाया है। पिछले नौ वर्षों में राजमार्गों में लगभग 60 फीसदी की वृद्धि हुई है और रेलवे के बुनियादी ढांचे में निवेश चार गुना से अधिक बढ़ गया है। बंदरगाहों की क्षमता में 83 फीसदी की वृद्धि हुई है। मेट्रो लाइन की लंबाई साढ़े तीन गुना बढ़ी है, जिससे और अधिक शहर मेट्रो रेल लाइन से जुड़ गए हैं। उड़ान योजना के तहत 73 नए हवाई अड्डों के संचालन का काम हुआ है। वित्तीय समावेशन और डिजिटाइजेशन के मोर्चे पर भी भारी सफलता मिली है। वर्ष 2014 के बाद से खोले गए 50 करोड़ जन-धन खातों की बदौलत वर्ष 2023 में 80 फीसदी से ज्यादा लोगों के बैंक खाते हैं। प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण वर्ष 2014 में 7,400 करोड़ रुपये था, जो वित्त वर्ष 2023 में बढ़कर सात लाख करोड़ रुपये हो गया है। सरकार ने सब्सिडी देने के लिए जन धन-आधार-मोबाइल-पैन का प्रभावी ढंग से उपयोग करके विलंब और बिचौलियों को खत्म कर दिया है। एकीकृत भुगतान इंटरफेस (यूपीआई) ने भी जबर्दस्त प्रगति की है। ऑटोमोबाइल की बिक्री में वृद्धि, बिजली की बढ़ती मांग, ई-वे बिल की मात्रा, पैसेंजर ट्रैफिक में वृद्धि, घरेलू क्षेत्र में बैंक ऋण के प्रवाह में उच्च वृद्धि और ग्रामीण मांग वृद्धि में सुधार बढ़ते उपभोग का संकेत देते हैं। बुनियादी ढांचा और रियल एस्टेट क्षेत्र फल-फूल रहे हैं, जो औद्योगिक उत्पादन सूचकांक में वृद्धि, सीमेंट, स्टील की खपत और बुनियादी ढांचे पर सरकारी खर्च में परिलक्षित होता है।

जीडीपी प्रतिशत के रूप में सकल स्थिर पूंजी निर्माण में भी वृद्धि हुई है। हालांकि समग्र अर्थव्यवस्था की तुलना में विनिर्माण क्षेत्र की कम वृद्धि, माल के निर्यात और आयात में संकुचन, और अर्थव्यवस्था में एफडीआई, वेंचर कैपिटल (वीसी) और प्राइवेट इक्विटी (पीई) फंड के निचले स्तर के साथ-साथ कच्चे तेल और थोक बिजली की कीमतों में वृद्धि से कुछ चिंताएं पैदा होती हैं।

जीएसटी संग्रह ने अब तक जीडीपी वृद्धि को पीछे छोड़ दिया है। चालू वित्त वर्ष की पहली छमाही में प्रत्यक्ष कर संग्रह मजबूत कॉरपोरेट प्रदर्शन का संकेत है। मजबूत मांग की स्थिति के बीच नए कारोबार में तेज वृद्धि के कारण सितंबर में सेवा क्षेत्र की वृद्धि 13 साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई, और समग्र व्यापार माहौल में सुधार के कारण नौकरियों की संख्या में वृद्धि जारी रही। नवीनतम परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआई) का परिणाम भारत के सेवा क्षेत्र की सकारात्मक खबर लेकर आया, सितंबर में व्यावसायिक गतिविधि और नए कार्य क्षेत्र में प्रवेश में 13 वर्षों में सबसे बड़ी वृद्धि देखी गई। नवीनतम आंकड़ों से पता चला है कि भारतीय सेवा प्रदाताओं के नए व्यवसाय में पर्याप्त वृद्धि हुई है, जो जून 2010 के बाद से दूसरी सबसे तेज वृद्धि है। कुल बिक्री में वृद्धि के अलावा, कंपनियों ने विदेशों से, विशेष रूप से एशिया, यूरोप, और उत्तरी अमेरिका के ग्राहकों से मांग में वृद्धि देखी है।

क्या डीआरडीओ भी निजीकरण की राह पर ?

आउटसोर्सिंग से जोखिम में पड़ सकती है राष्ट्रीय सुरक्षा

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की लैब को पहले ही निजी क्षेत्र के लिए खोल दिया गया है। हमारे देश के लोगों के पैसे से स्थापित की गई लैब की तमाम सुविधाओं का इस्तेमाल, प्राइवेट क्षेत्र करने लगा है। सरकार ने पूर्व मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार के विजय राघवन की अध्यक्षता में 9 सदस्यीय कमेटी गठित की है...

गौरवपूर्ण इतिहास वाले 220 वर्ष पुराने 41 आयुध कारखानों के कंपनी में तब्दील होने के बाद अब रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) भी निजीकरण की राह पर जा सकता है। अखिल भारतीय रक्षा कर्मचारी महासंघ 'एआईडीईएफ' के महासचिव सी. श्रीकुमार के मुताबिक, केंद्र सरकार की ऐसी मंशा दिखाई पड़ रही है कि आयुध कारखानों के 'निगमीकरण' और ईएमई में 'जीओसीओ' मॉडल लाने के बाद अब 'डीआरडीओ' पर नजर है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन की लैब को पहले ही निजी क्षेत्र के लिए खोल दिया गया है। हमारे देश के लोगों के पैसे से स्थापित की गई लैब की तमाम सुविधाओं का इस्तेमाल, प्राइवेट क्षेत्र करने लगा है। सरकार ने पूर्व मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार के विजय राघवन की अध्यक्षता में 9 सदस्यीय कमेटी गठित की है। इस कमेटी को डीआरडीओ की कायापलट करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। श्रीकुमार ने डीआरडीओ की हाईपावर कमेटी (प्रो. विजया राघवन कमेटी) को सौंपे ज्ञापन में कहा है कि

अखिल भारतीय रक्षा कर्मचारी महासंघ 'एआईडीईएफ' ने डीआरडीओ की हाई पावर कमेटी को ज्ञापन सौंपा है। इस ज्ञापन को 31 अक्तूबर को हैदराबाद में हुई एआईडीईएफ लीडरशिप की बैठक में तैयार किया गया था। एआईडीईएफ द्वारा इसे लेकर एक विशेष सर्कुलर भी जारी किया गया, जिसे डीआरडीओ के सभी कर्मियों, विशेषकर लैब स्टाफ तक पहुंचाया जा रहा है। एआईडीईएफ ने डीआरडीओ के उस निर्णय का भी विरोध किया है, जिसमें डीआरडीओ की हाईपावर कमेटी की बैठक को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए करने की बात कही गई है। इस बैठक में प्रत्येक फेडरेशन का एक प्रतिनिधि शामिल हो सकता है। श्रीकुमार के मुताबिक, हाई पावर कमेटी की बैठक फिजिकली होनी चाहिए और उसमें एआईडीईएफ के कम से कम पांच प्रतिनिधियों को शामिल किया जाए।

यह ज्ञापन पांच नवंबर को डीआरडीओ चेयरमैन को भी प्रेषित किया गया है। उसमें कहा गया है कि डीआरडीओ, एक महत्वपूर्ण स्ट्रैटेजिक डिफेंस रिसर्च एवं डेवलपमेंट इंडस्ट्री है। मौजूदा समय में डीआरडीओ को पूरी तरह से सरकार के साथ रहना चाहिए। डिफेंस की स्थायी संसदीय समिति ने डीआरडीओ का बजट बढ़ाने की सिफारिश की थी। डीआरडीओ को अपना रिसर्च प्रोग्राम ज्यादा से ज्यादा बढ़ाना चाहिए। इसके लिए डीआरडीओ में वर्कफोर्स से लेकर वैज्ञानिक तक के पद नियमित तौर पर भरे जाएं। डीआरडीओ में निजीकरण और आउटसोर्सिंग पॉलिसी, राष्ट्रीय सुरक्षा एवं रक्षा क्षेत्र की तैयारियों के हित में नहीं

है। डीआरडीओ के पास छोटी-बड़ी 52 प्रयोगशालाएं हैं। सरकार ने जिन 108 आइटम के आउटसोर्स की बात कही है, वे डीआरडीओ के तहत विकसित किए जा सकते हैं। कॉरपोरेट सेक्टर का, डीआरडीओ जैसे अहम स्ट्रैटेजिक डिफेंस रिसर्च आर्गेनाइजेशन में शामिल होना, खतरनाक है।

सरकार ने निर्णय लिया है कि डीआरडीओ द्वारा विकसित तकनीक को आयुद्ध कारखानों और डिफेंस पब्लिक सेक्टर के साथ साझा न किया जाए, लेकिन वह कॉरपोरेट सेक्टर को प्रदान कर दी जाए। सरकार ने 2022-23 और 2023-24 के लिए डीआरडीओ का 25 फीसदी बजट, प्राइवेट सेक्टर के लिए रखा है। एआईडीईएफ महासचिव ने अपने ज्ञापन में डीआरडीओ की भूमिका को लेकर विभिन्न सरकारों द्वारा गठित आयोगों का जिक्र भी किया है। इनमें प्रो. पी राव कमेटी (2007), प्रो. राम गोपाल राव कमेटी (2020) और प्रो. के विजया राघवन कमेटी (2023) शामिल है। इन कमेटियों ने क्या कहा और उस पर एआईडीईएफ का क्या सुझाव था, ज्ञापन में यह उल्लेख किया गया है। डीआरडीओ में मैनपावर की कमी को लेकर एआईडीईएफ पिछले 12 वर्षों से आवाज उठा रहा है, लेकिन कभी भी सरकार या डीआरडीओ मुख्यालय की तरफ से सकारात्मक जवाब नहीं मिल सका। एआईडीईएफ ने अपने सुझाव में उन बातों का जिक्र किया है कि डीआरडीओ को हाई टेलेंटेड वैज्ञानिक और स्टाफ कैसे मुहैया कराया जाए। श्रीकुमार के मुताबिक, डीआरडीओ को निजीकरण की तरफ न ले जाए, बल्कि उसे सरकारी हाथों में मजबूत करने की कवायद शुरू हो। श्रीकुमार के अनुसार, इसरो और एटोमिक एनर्जी की तरह नए लेबर कोड प्रभावी होने के बाद डीआरडीओ को भी इंडस्ट्री की परिभाषा से छूट प्रदान कर दी जाएगी। के विजय राघवन की अध्यक्षता में जो 9 सदस्यीय कमेटी गठित की गई है, वह प्रधानमंत्री के निर्देश पर काम करती है।

वर्क फोर्स खत्म करने की रणनीति...

डीआरडीओ को प्राइवेट कंपनी की तरफ ले जाने की कोशिश हो रही है। वर्क फोर्स को खत्म करने की रणनीति बन रही है। विदेश से माल ला रहे हैं। उसकी मदद से जो उपकरण तैयार करना है, उसकी तकनीक विकसित करने के लिए कहा गया है। डेवलपमेंट प्रोटोटाइप बनाना है। उसे आर्मी को टेस्ट के लिए देना है। ये सब काम तो दस साल पहले तक हमारे तकनीकी वर्कर करते रहे हैं। अब ये सब काम, धीरे-धीरे प्राइवेट क्षेत्र के पास जा रहा है। श्रीकुमार ने बताया कि तकनीकी एक्सपर्ट कम हो रहे हैं। बिना किसी निवेश के डीआरडीओ की लैब सुविधा को निजी क्षेत्र के लिए खोला जा रहा है। पहले इस संगठन के ढांचे में बदलाव होगा, उसके बाद उसे निगम बनाया जा सकता है। उसके बाद पूरी तरह से वह संगठन निजी हाथों में चला जाएगा।

सुप्रीम कोर्ट- कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न को गंभीरता से लें...

ताकि बच न पाएं दोषी, आरोपों का खंडन भी बहुत मुश्किल

पीठ ने 15 मई, 2019 के गौहाटी हाईकोर्ट के फैसले को रद्द कर दिया। हाईकोर्ट ने 2011 में एक अधीनस्थ महिला अधिकारी के यौन उत्पीड़न की शिकायत के कारण सशस्त्र सीमा बल में सेवानिवृत्त डीआईजी दिलीप पॉल की 50 फीसदी पेंशन रोकने के फैसले को रद्द कर दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि कार्यस्थल पर किसी भी रूप में यौन उत्पीड़न को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। उत्पीड़न करने वाले को कानून के चंगुल से बचने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। सीजेआई जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्र की पीठ ने कहा, हम ऐसा इसलिए कहते हैं, क्योंकि यह यौन उत्पीड़न के शिकार को अपमानित और निराश करता है, खासकर तब जब उत्पीड़क को सजा नहीं मिलती है या अपेक्षाकृत मामूली दंड के साथ छोड़ दिया जाता है। हालांकि, यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि इस प्रकृति का आरोप लगाना बहुत आसान है और खंडन करना बहुत मुश्किल है। पीठ ने कहा, जब झूठा आरोप लगाने की दलील दी जाती है तो अदालतों का कर्तव्य है कि वे सबूतों की गहन जांच करें। आरोप स्वीकारयोग्य है या नहीं, इसका फैसला करें। अनाज से भूसी को अलग करने के लिए हर सावधानी बरती जानी चाहिए।

न्याय प्रदान करने वाली प्रणाली मजाक न बन जाए : पीठ ने कहा, शिकायत की वास्तविकता की जांच इस तरह से की जानी चाहिए जिससे कि समाज के उत्थान और लोगों के समान अधिकारों के लिए बनाए गए ऐसे प्रशंसनीय कानून का दुरुपयोग न हो। ऐसा न हो कि न्याय प्रदान करने वाली प्रणाली एक मजाक बन जाए।

सेवानिवृत्त डीआईजी की पेंशन रोकने का हाईकोर्ट का फैसला किया रद्द : पीठ ने 15 मई, 2019 के गौहाटी हाईकोर्ट के फैसले को रद्द कर दिया। हाईकोर्ट ने 2011 में एक अधीनस्थ महिला अधिकारी के यौन उत्पीड़न की शिकायत के कारण सशस्त्र सीमा बल में सेवानिवृत्त डीआईजी दिलीप पॉल की 50 फीसदी पेंशन रोकने के फैसले को रद्द कर दिया था। पीठ ने कहा, हाईकोर्ट ने अपने फैसले में गंभीर त्रुटि की है। शीर्ष अदालत ने कहा है कि हाईकोर्ट का यह तर्क कि केंद्रीय शिकायत समिति का गठन पहली शिकायत के आधार पर किया गया था, इसकी जांच का दायरा इसकी सामग्री तक ही सीमित था, पूरी तरह से गलत है।

हाईकोर्ट ने फैसले में दिए बेतुके तर्क : पीठ ने यह भी कहा कि हाईकोर्ट के लिए यह कहना काफी बेतुका है कि शिकायतकर्ता को केंद्रीय शिकायत समिति के समक्ष दूसरी शिकायत करने से केवल इसलिए रोक दिया गया क्योंकि वह पहले ही आईजी, फ्रंटियर मुख्यालय, गुवाहाटी को एक शिकायत कर चुकी थी। इसने हाईकोर्ट के इस निष्कर्ष को भी खारिज कर दिया कि शिकायत समिति गवाहों से सवाल नहीं पूछ सकती थी।

यौन उत्पीड़न गहरी जड़ें जमा चुका मुद्दा : मामले का विश्लेषण करते हुए शीर्ष अदालत ने कहा कि यौन उत्पीड़न एक व्यापक और गहरी जड़ें जमा चुका मुद्दा है जिसने दुनिया भर के समाजों को त्रस्त कर दिया है। भारत में यह गंभीर चिंता का विषय रहा है और यौन उत्पीड़न से निपटने के लिए कानूनों का बनना इस समस्या के समाधान के प्रति राष्ट्र की प्रतिबद्धता का प्रमाण है। भारत में यौन उत्पीड़न सदियों से मौजूद है लेकिन 20वीं सदी के उत्तरार्ध में ही इसे कानूनी मान्यता मिलनी शुरू हुई।

छात्राओं को निशुल्क सैनिटरी पैड देने की नीति का मसौदा तैयार

संबंधित पक्षों से मंगवाए जा रहे विचार

केंद्र सरकार ने देशभर में स्कूली छात्राओं को निशुल्क सैनिटरी नैपकिन वितरण के लिए राष्ट्रीय नीति का मसौदा तैयार कर लिया है। सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका की सुनवाई के दौरान यह जानकारी दी। साथ ही बताया कि इसे संबंधित भागीदारों को भेजा गया है, उनकी टिप्पणियां मंगवाई जा रही हैं। एक याचिका की सुनवाई में सीजेआई जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली बेंच ने छात्राओं को सैनिटरी नैपकिन मुहैया करवाने के लिए बनी नीति के बारे में केंद्र से सवाल किया था। साथ ही इनके वितरण की प्रक्रिया में एकरूपता लाने के लिए भी कहा था। जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की सदस्यता वाली बेंच के समक्ष केंद्र सरकार ने अपना जवाब रखा। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने उन राज्यों को चेताया था, जिन्होंने छात्राओं के लिए माहवारी स्वच्छता प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय मॉडल बनाने की केंद्र की योजना पर अपने जवाब नहीं रखे थे। जवाब न देने पर उन्हें सख्त कानूनी कार्रवाई की चेतावनी दी गई थी। कोर्ट ने 10 अप्रैल को केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के सचिव को नोडल अधिकारी नियुक्त करते हुए राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों से संबंधित आंकड़े मंगवाए थे, ताकि केंद्र सेनेटरी नैपकिन वितरण पर राष्ट्रीय नीति बना सके।

छात्राओं की संख्या के अनुरूप शौचालय के लिए तैयार करें राष्ट्रीय मॉडल

सुप्रीम कोर्ट ने देशभर में छात्राओं की संख्या के अनुरूप स्कूलों में शौचालय उपलब्ध करवाने के लिए केंद्र सरकार को कहा है। इसके लिए उसे एक राष्ट्रीय मॉडल बनाने को कहा गया है। यह शौचालय सरकारी अनुदानित और रिहायशी स्कूलों में बनाए जाने हैं।

गंभीर बाधाओं का दिया गया था तर्क कांग्रेस नेता व सामाजिक कार्यकर्ता जया ठाकुर ने याचिका दायर कर बताया था कि गरीब परिवारों से आने वालीं 11 से 18 साल की स्कूली छात्राओं को शिक्षा पाने में गंभीर बाधाएं आ रही हैं। याचिका में कहा गया था, अक्सर उन्हें अपने माता-पिता से माहवारी स्वच्छता व पीरियड्स के बारे में सही जानकारियां नहीं मिल पाती। उनकी सेहत को इससे नुकसान होता है, पढ़ाई जारी रखना भी मुश्किल हो जाता है।

हवा में जहर से कैंसर की चपेट में आ रहे बच्चे...

वयस्कों की तुलना में अधिक तेजी से लेते हैं सांस

नेचर जर्नल में प्रकाशित अध्ययन में पीएम 2.5 स्तर के संपर्क और बच्चों में तीव्र लिम्फोब्लास्टिक ल्यूकेमिया के जोखिम के बीच संबंध बताया गया है। विश्लेषण में पाया गया है कि बच्चों को प्रदूषित हवा से ज्यादा खतरा होता है, क्योंकि वे वयस्कों की तुलना में अधिक तेजी से सांस लेते हैं और अधिक प्रदूषकों को अवशोषित करते हैं।

वायु प्रदूषण बच्चों के लिए लगातार घातक और जानलेवा बनता जा रहा है। 2012 से अब तक राष्ट्रीय कैंसर रजिस्ट्री कार्यक्रम के आंकड़ों के अनुसार, वायु प्रदूषण के कारण दिल्ली और महानगरों के आसपास कई इलाके सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। नवजात से लेकर 14 वर्ष की आयु के अनुपात में सभी आयु समूहों की तुलना में बचपन में कैंसर का खतरा 0.7 प्रतिशत से 3.7 प्रतिशत अधिक है। अध्ययन में यह दिखाने के लिए पर्याप्त सबूत हैं कि वायु प्रदूषण के संपर्क में आने से बच्चों में कैंसर होता है। नेचर जर्नल में प्रकाशित अध्ययन में पीएम 2.5 स्तर के संपर्क और बच्चों में तीव्र लिम्फोब्लास्टिक ल्यूकेमिया के जोखिम के बीच संबंध बताया गया है। विश्लेषण में पाया गया है कि बच्चों को प्रदूषित हवा से ज्यादा खतरा होता है, क्योंकि वे वयस्कों की तुलना में अधिक तेजी से सांस लेते हैं और अधिक प्रदूषकों को अवशोषित करते हैं।

देश के महानगरों की स्थिति गंभीर : नेशनल सेंटर फॉर डिसीज इन्फोर्मेटिक्स एंड रिसर्च (एनसीडीआईआर) और विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अध्ययन के मुताबिक, भारत के महानगरों में उच्च प्रदूषण के कारण बच्चों के लिए कैंसर जानलेवा बनता जा रहा है। उच्चतम आय वाले देशों की तुलना में भारत में कैंसर से जूझ रहे बच्चों का बच पाना बहुत मुश्किल होता है।

क्या कहते हैं आंकड़े

अध्ययन के अनुसार, दिल्ली में प्रति दस लाख पर 203.1 बच्चे सभी प्रकार के कैंसर से प्रभावित हैं, जबकि पूर्वोत्तर राज्यों में यह आंकड़ा केवल 12.2 प्रति दस लाख है। उत्तर भारत के अन्य शहरों में जहां प्रदूषण की दर कम है वहां 2012 और 2022 यह आंकड़ा मात्र 15. 6 प्रति 10 लाख है। जिन राज्यों की हवा खराब है वहां यह आंकड़ा आश्चर्यजनक तरीके से बहुत ऊपर है। पटियाला की कैंसर रजिस्ट्री में प्रति दस लाख बच्चों पर 121.2 मामले दर्ज किए गए। नवजात से लेकर 14 वर्ष की आयु के बीच प्रति दस लाख पर 84.2 लड़के कैंसर से प्रभावित होते हैं, जबकि मेघालय में यह आंकड़ा प्रति दस लाख पर केवल 7.3 है। लिम्फोमा के मामले में दिल्ली में लड़कों में यह संख्या 30.7 प्रति 10 लाख है, जो मेघालय में काफी कम 2.3 है।

भ्रूण पर भी असर

खराब और जहरीली हवा के कारण जन्म के समय कम वजन और बच्चों की मृत्यु तक होती है। विश्लेषण से पता चलता है कि भारत के बच्चों पर वायु प्रदूषण का प्रभाव दिल्ली या उत्तर भारत तक ही नहीं, बल्कि अन्य महानगरों के आसपास के इलाकों तक फैला हुआ है। वायु प्रदूषण भ्रूण से लेकर बच्चे के पूरे स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है।

बौनेपन के लिए भी जिम्मेदार

जर्मनी और फ्रांस के शोधकर्ताओं ने एक अध्ययन में दिखाया है कि वायु प्रदूषण का बच्चों के विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है और यह बौनेपन से भी जुड़ा हुआ है।

एनीमिया और सांस की तकलीफ भी

नेचर जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन से पता चला है कि भारत में 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में पीएम 2.5 एक्सपोजर में प्रत्येक 10 माइक्रोग्राम घन मीटर की वृद्धि एनीमिया, तीव्र श्वसन संक्रमण और एलबीडब्ल्यू का प्रसार 10 प्रतिशत, 11 प्रतिशत और 5 प्रतिशत बढ़ जाता है।

फेस्टिव सीजन... इन मेहंदी डिजाइंस से सजाएं हाथ, सुंदरता में लगेंगे चार चांद

आज हम आपको कुछ ऐसी मेहंदी डिजाइंस के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनको इस साल काफी ज्यादा पसंद किया गया है। हम आपको राउंड टिक्की मेहंदी से लेकर पीकॉक फेदर वाली डिजाइन वाली मेहंदी के बारे में बताने जा रहे हैं। कोई भी पर्व या त्योहार मेहंदी के बिना अधूरा माना जाता है। त्योहारों पर अक्सर महिलाएं और लड़कियां अपने हाथों को मेहंदी से सजाती हैं। त्योहार में लड़कियां जिस तरह से अपने पसंद के कपड़े और ज्वेलरी लेती हैं, तो उसी तरह वह मेहंदी भी लगवाती हैं।

कस्टमाइज मेहंदी

बता दें कि इस साल कस्टमाइज मेहंदी का ट्रेंड भी खूब चलन में है। इस तरह की मेहंदी में लोग किसी एक थीम को फॉवो करते नजर आए हैं। जैसे वेडिंग थीम या बेबी शावर थीम खूब ट्रेंड में रही है। तो वहीं कुछ लोगों ने अपने पार्टनर की फोटो को मेहंदी में बनवाया।

पीकॉक डिजाइन

मेहंदी डिजाइन में इस साल मोर के पंख और मोर वाली डिजाइन काफी ज्यादा चर्चा में रही। यह आपके हाथों में काफी खूबसूरत लगेगी। आप इस मेहंदी डिजाइन को फ्रंट और बैक साइड दोनों पर अप्लाई करवा सकते हैं।

क्रिस क्रॉस मेहंदी डिजाइन : इस तरह की मेहंदी डिजाइन हाथों में बहुत ज्यादा खूबसूरत लगती है। इस साल किसक्रॉस यानी की जाल दार मेहंदी डिजाइन काफी ज्यादा ट्रेंड में रही है। इसे त्योहारों से लेकर शादियों तक के मौकों पर आप लगा सकती है।

अरेबियन और मारवाड़ी फ्यूज़न : इस साल अरेबियन और मारवाड़ी का फ्यूज़न कॉन्बिनेशन भी काफी ज्यादा ट्रेंड में रहा है। इस तरह की डिजाइन में आपको ब्रेसलेट लुक मिलता है। इस तरह की मेहंदी डिजाइन में आपको डिफरेंट वैराइटीज एक ही डिजाइन में नजर आएंगी।

मंडला आर्ट मेहंदी

इस तरह की मेहंदी डिजाइन आपको हाथों पर खूब जचेंगी। इस डिजाइन में फाइन वर्क किया जाता है। त्योहारों से लेकर शादियों तक में लोगों ने इस डिजाइन को अपने हाथों में ट्राई किया है।

गोल टिक्की : बता दें कि इस बार किसी भी तीज त्योहार या शादी के फंक्शन में यह मेहंदी की डिजाइन काफी ज्यादा चर्चा में रही है। यह काफी जल्दी लग जाती है और यह हाथों में भी काफी ज्यादा खूबसूरत लगती है।

बजाज फिनसर्व

ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसी मेहंदी डिजाइंस के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनको इस साल काफी ज्यादा पसंद किया गया है। हम आपको राउंड टिक्की मेहंदी से लेकर पीकॉक फेदर वाली डिजाइन वाली मेहंदी के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनकी डिजाइंस खूब चर्चा में होती है।

भारत 2036 ओलंपिक की मेजबानी के प्रयासों में कोई कसर नहीं छोड़ेगा...

खेल सिर्फ चैम्पियन ही तैयार नहीं करते बल्कि विश्व को शांति, प्रगति और कल्याण की ओर भी अग्रसर करते हैं। इससे पहले आईओसी अध्यक्ष थॉमस बाख ने अपने संबोधन की शुरूआत हिन्दी में 'नमस्ते' के साथ करते हुए प्रधानमंत्री मोदी से कहा, आपका बहुत बहुत स्वागत है। उन्होंने कहा,भारत प्रेरणास्पद जगह है। पूरे ओलंपिक समुदाय को एशियाई खेलों में भारत के प्रदर्शन पर गर्व है। उन्होंने यह भी कहा कि कृत्रिम मेधा और ई स्पोर्टस ओलंपिक आंदोलन के लिये दो नये मौके हैं। उन्होंने कहा कि पेरिस ओलंपिक 2024 कृत्रिम मेधा से पूर्व के युग के आखिरी ओलंपिक होंगे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि भारत 2036 ओलंपिक का आयोजन देश में करने के लिये अपने प्रयासों में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेगा क्योंकि यह 140 करोड़ भारतीयों का सपना है। प्रधानमंत्री मोदी ने यहां अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति के सत्र का उद्घाटन करते हुए कहा, मैं आपके सामने 140 करोड़ भारतीयों की भावना रखना चाहूंगा। भारत अपनी धरती पर 2036 के ओलंपिक का आयोजन के प्रयासों में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेगा। उन्होंने कहा,यह 140 करोड़ भारतीयों का सपना है, उनकी आकांक्षा है।इस सपने को हम आपके सहयोग से पूरा करना चाहते हैं। इससे पहले भारत 2029 में होने वाले युवा ओलंपिक की मेजबानी का भी इच्छुक है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, मुझे विश्वास है कि भारत को आईओसी का निरंतर सहयोग मिलता रहेगा।भारत बड़े स्तर पर वैश्विक आयोजन की मेजबानी के लिये तैयार है। यह दुनिया ने जी20 की मेजबानी के दौरान देखा है। उन्होंने आगे कहा, अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति का 141वां सत्र भारत में होना बहुत ही खास है। 40 साल बाद भारत में आईओसी का सत्र होना हमारे लिये बहुत गौरव की बात है। उन्होंने कहा, बीते वर्षों में भारत ने हर प्रकार के वैश्विक खेल टूर्नामेंट आयोजित करने के अपने सामर्थ्य को साबित किया है। हमने हाल ही में शतरंज ओलंपियाड का आयोजन किया जिसमें विश्व के 186 देश शामिल हुए। हमने महिला फुटबॉल अंडर 17 विश्व कप, पुरूष हॉकी विश्व कप, निशानेबाजी विश्व कप की भी मेजबानी की।

उन्होंने कहा, भारत में हर वर्ष दुनिया की सबसे बड़ी क्रिकेट लीग में से एक (आईपीएल) का भी आयोजन करता है। इस समय भारत में क्रिकेट विश्व कप भी चल रहा है। उत्साह के इस माहौल में सब यह सुनकर भी खुश हैं कि आईओसी के कार्यकारी बोर्ड ने क्रिकेट को 2028 ओलंपिक में शामिल किये जाने का प्रस्ताव रखा है। उन्होंने कहा, हमें उम्मीद है कि इस बारे में जल्दी ही सकारात्मक खबर सुनने को मिलेगी। उन्होंने अहमदाबाद में विश्व कप में भारत की पाकिस्तान पर जीत का जिक्र करते हुए कहा,अब से कुछ मिनट पहले भी भारत ने अहमदाबाद में दुनिया के सबसे बड़े स्टेडियम में बहुत ही शानदार जीत दर्ज की है। मैं टीम भारत को और सभी भारतवासियों को इस ऐतिहासिक जीत की बधाई देता हूं। उन्होंने भारत की प्राचीन खेल परंपरा का उल्लेख करते हुए कहा, खेल भारत में हमारी संस्कृति का, हमारी जीवनशैली का अहम अंग रहा है। भारत के गांवों में खेलों के बिना हमारा हर उत्सव अधूरा है। हम भारतीय सिर्फ

खेलप्रेमी नहीं बल्कि हम खेलों को जीने वाले लोग हैं और यह हजारों वर्षों के हमारे इतिहास में परिलक्षित होता है। उन्होंने कहा, सिंधु घाटी की सभ्यता हो, हजारों साल पहले का वैदिक काल हो, हर कालखंड में खेलों को लेकर भारत की विरासत समृद्ध रही है। हमारे यहां हजारों साल पहले लिखे ग्रंथों में चौसठ विधाओं में पारंगत होने की बात कही जाती है जिनमें से अनेक विधाये खेलों से जुड़ी है जैसे घुड़सवारी, धनुर्विद्या, तैराकी, कुश्ती आदि। उन्होंने कहा, खेलों में कोई हारता नहीं है। खेल में बस विजेता और सीखने वाले होते हैं।

खेल की और भावना सार्वभौमिक है। खेल बस प्रतिस्पर्धा नहीं है, यह मानवता को अपने विस्तार का अवसर देता है। रिकॉर्ड कोई भी तोड़े, पूरी दुनिया उसका स्वागत करती है। प्रधानमंत्री ने कहा, खेल हमारे 'वसुधैव कुटुम्बकम' के भाव को भी सशक्त करते हैं। इसलिये हमारी सरकार हर स्तर पर खेल को बढावा देने के लिये काम कर रही है। खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स, खेलो इंडिया यूथ गेम्स, खेलो इंडिया विंटर गेम्स और जल्द आयोजित होने वाले खेलो इंडिया पैरा खेल इसके उदाहरण है। उन्होंने कहा कि खेल दुनिया को जोड़ने का एक और सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा, खेल सिर्फ पदक जीतने का नहीं, बल्कि दिलों को जीतने का माध्यम है। खेल सबका है और सबके लिये है।

खेल सिर्फ चैम्पियन ही तैयार नहीं करते बल्कि विश्व को शांति, प्रगति और कल्याण की ओर भी अग्रसर करते हैं। इससे पहले आईओसी अध्यक्ष थॉमस बाख ने अपने संबोधन की शुरूआत हिन्दी में 'नमस्ते' के साथ करते हुए प्रधानमंत्री मोदी से कहा, आपका बहुत बहुत स्वागत है। उन्होंने कहा,भारत प्रेरणास्पद जगह है। पूरे ओलंपिक समुदाय को एशियाई खेलों में भारत के प्रदर्शन पर गर्व है। उन्होंने यह भी कहा कि कृत्रिम मेधा और ई स्पोर्टस ओलंपिक आंदोलन के लिये दो नये मौके हैं। उन्होंने कहा कि पेरिस ओलंपिक 2024 कृत्रिम मेधा से पूर्व के युग के आखिरी ओलंपिक होंगे।

फिट रहने के लिए फॉलो करें डाइटीशियन के बताए ये नियम, बीमारियां रहेंगी कोसों दूर...

आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में अपने सेहत का ध्यान रख पाना किसी मुश्किल टास्क से कम नहीं है। वहीं खराब लाइफस्टाइल और अनहेल्दी खाने के कारण व्यक्ति को कई तरह की बीमारियां घेर लेती हैं। ऐसे में अगर आप छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखते हैं तो खुद को बीमारियों से दूर रख सकते हैं।

आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में अपने सेहत का ध्यान रख पाना किसी मुश्किल टास्क से कम नहीं है। वहीं खराब लाइफस्टाइल और अनहेल्दी खाने के कारण व्यक्ति को कई तरह की बीमारियां घेर लेती हैं। ऐसे में अगर आप छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखते हैं तो खुद को बीमारियों से दूर रख सकते हैं। बता दें कि सेलिब्रिटी डाइटिशियन रुजुता दिवेकर ने सोशल मीडिया के जरिए सेहतमंद रहने के 10 आसान नियम बताए हैं। अगर आप भी सेहतमंद रहना चाहते हैं तो इन नियमों का पालन कर सकते हैं।

आपने अक्सर देखा होगा कि जल्दबादी में लोग बैठकर खाना खाने का समय भी नहीं निकाल पाते हैं। ऐसे में रुजुता दिवेकर ने बताया कि खाना हमेशा बैठकर ही खाना चाहिए। खाना हमेशा तसल्ली के साथ बैठकर खाना चाहिए। जितना हो सके खाने को उतना चबा-चबा कर खाएं। इस तरह से खाना खाने से पाचन क्रिया अच्छी होने के साथ ही सभी पोषक तत्व शरीर में अच्छे से पहुंच पाते हैं।

खाना खाते समय खाने पर रखें ध्यान : खाना खाने के दौरान लोगों का पूरा ध्यान खाने पर ना होकर टीवी या मोबाइल पर होता है। लेकिन रुजुता के मुताबिक खाना खाने के दौरान आपका पूरा ध्यान खाने पर होना चाहिए। ऐसा करने से ना सिर्फ खाने का स्वाद बढ़ता है, बल्कि आप इसे आराम से चबा-चबाकर भी खा पाते हैं। इससे आपके शरीर में सभी जरूरी पोषक तत्व पहुंच पाते हैं।

ड्राई फ्रूट्स

आपको सेहतमंद बने रहने के लिए अपनी डाइट में ड्राई फ्रूट्स को जरूर शामिल करना चाहिए। रुजुता के हिसाब से रोजाना मुट्ठीभर ड्राई फ्रूट्स का सेवन करना चाहिए। वहीं सुबह के समय बादाम और अखरोट का सेवन करें। वहीं दोपहर के समय काजू और मूंगफली का सेवन करें।

हरी सब्जियां

सेलिब्रिटी डाइटिशियन रुजुता के अनुसार, हर व्यक्ति को अपनी डाइट में हरी सब्जियों को जरूर शामिल करना चाहिए। जिस मौसम में जो सब्जी आए, उसका सेवन जरूर करें। जैसे बारिश और गर्मी में भिंडी और परवल आदि खाएं। तो वहीं सर्दियों के मौसम में सरसों, मेथी और पालक जैसी पत्तेदार सब्जियां खानी चाहिए।

रोटी हैं सेहतमंद : बता दें कि सिर्फ गेहूं ही नहीं बल्कि आपको अपनी डाइट में ज्वार, बाजरा और रागी के आटे की रोटी भी शामिल करना चाहिए। इससे आपके शरीर को पूरा पोषण मिलता है और आप स्वस्थ बने रहते हैं।

घर पर जमाएं दही

रुजुता की मानें तो रोजाना नियमित रूप से दही का सेवन करना चाहिए। इसके लिए आप घर पर ही दही जमा सकती हैं। दही खाने के स्वाद को बढ़ाने के साथ ही आपके शरीर को प्रोटीन देने का काम करता है।

घी का सेवन

गाय के दूध से बने देसी घी को अपनी डाइट में जरूर शामिल करें। ब्रेकफास्ट, लंच व डिनर में से किसी भी समय के खाने के साथ आप एक बड़ा चम्मच घी जरूर लें। गाय का देसी घी हमारी सेहत के लिए अमृत समान होता है। देसी के इतने फायदे होते हैं कि इन्हें गिनना मुश्किल होता है।

वर्कआउट करें : अच्छी डाइट लेने के साथ ही जरूरी है कि आप अपनी डेली रूटीन में वर्कआउट को जरूर शामिल करें। रुजुता की मानें तो आपको रोजाना कम से कम 30 मिनट वर्कआउट जरूर करना चाहिए। साथ ही आपको दिन भर एक्टिव रहना चाहिए। अगर आप वर्कआउट नहीं कर पाती हैं, तो 30 मिनट के लिए वॉक जरूर करें।

अच्छी नींद है बेहद जरूरी

सेहतमंद बना रहने के लिए जरूरी है कि आपके सोने और जागने का समय फिक्स हो। इसलिए 7-8 घंटे की नींद जरूर लें। भरपूर नींद लेने से आपके शरीर को आराम मिलता है और आप कई तरह की बीमारियों से भी बचे रह सकते हैं।

स्क्रीन पर दें कम समय : मोबाइल, टीवी और लैपटॉप पर हर व्यक्ति जरूरत से ज्यादा समय बिताता है। लेकिन इससे सेहत संबंधी कई समस्याएं होती हैं। इसलिए इनका इस्तेमाल कम से कम समय के लिए करना चाहिए।

वेट लॉस से लेकर बीपी तक होगा कंट्रोल

स्वाद ही नहीं सेहत का भी खजाना है चीकू...

हर फल की अपनी खासियत और गुण होता है। ऐसे ही फलों में चीकू का नाम शुमार है। इस फल में एक अलग मिठास पाई जाती है। साथ ही इस फल में अनेक गुण पाए जाते हैं। जो आपके शरीर को हेल्दी रखने में मदद करती है। हर फल की अपनी खासियत और गुण होता है। ऐसे ही फलों में चीकू का नाम शुमार है। इस फल में एक अलग मिठास पाई जाती है। साथ ही इस फल में अनेक गुण पाए जाते हैं। जो आपके शरीर को हेल्दी रखने में मदद करती है। चीकू फल को सपोडिला या सपोटा नाम से भी जाना जाता है। चीकू में मैग्नीशियम, पोटैशियम, मैंगनीज, विटामिन बी, सी, ई और कैल्शियम, फाइबर, मिनरल और एंटीऑक्सीडेंट भरपूर मात्रा में मौजूद होते हैं। इस फल के सेवन से दिमाग शांत होता है और तनाव भी कम होता है। चीकू खाने से कई तरह के फायदे होते हैं। वहीं इसके पत्ते, जड़ और छाल को दवा के तौर पर भी इस्तेमाल किया जाता है। इस फल को खाने से कई बीमारियों को बढ़ने से रोका जा सकता है। यह बालों और स्किन के लिए भी फायदेमंद होता है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि चीकू सेहत के लिए कितना लाभकारी होता है।

इम्यूनिटी

चीकू में मौजूद विटामिन सी बॉडी की रेसिस्टेंट कैपेसिटी को बेहतर बनाने का काम करता है। जिससे हमारे शरीर को इंफेक्शन से लड़ने में मदद मिलती है और कमजोर इम्यूनिटी में भी सुधार होता है।

कब्ज

बता दें कि चीकू फाइबर से भरपूर होता है। इस फल को खाने से पेट संबंधी तमाम परेशानियों से आराम मिलता है। इसके सेवन से आप कब्ज से छुटकारा पा सकते हैं, क्योंकि यह फल आसानी से पच जाता है।

ब्लड प्रेशर

चीकू में मौजूद पोटेशियम ब्लड प्रेशर को कंट्रोल कर सकता है। चीकू को उबालकर इसके पानी को पीने से बीपी कंट्रोल में रहता है।

बालों के लिए फायदेमंद

इस फल में मौजूद विटामिन ए, ई और सी से बालों की ग्रोथ के लिए फायदेमंद होता है। इस फल में मौजूद पॉलीफेनोलिक कंपाउंड बालों में होने वाली रूसी को कम करने में मददगार है।

स्किन

चीकू में मौजूद मॉइस्चराइजिंग आपकी स्किन को रूखा होने से बचाती है और त्वचा को मुलायम बनाने का काम करती है। अगर आप रोजाना इस फल का सेवन करते हैं, तो यह झुर्रियों को भी कम करने में मदद करता है।

हड्डियां

चीकू में कैल्शियम और आयरन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जो हड्डियों के लिए काफी अच्छा माना जाता है। इसके अलावा चीकू में मौजूद मैगनीज और जिंक हड्डियों को होने वाले नुकसान से बचाता है।

सर्दी-जुकाम

सर्दी-जुकाम से राहत पाने में चीकू आपकी काफी मदद कर सकता है। सर्दी-जुकाम होने पर इस फल का सेवन करने से नाक की नली से कफ हटाकर यह सीने को आराम देता है।

आपकी रसोई में मौजूद है माइग्रेन के तेज दर्द का इलाज

आजकल अधिक लोगों में माइग्रेन की समस्या को भी देखा जा रहा है। जो आगे चलकर चिड़चिड़ेपन और गुस्से का कारण बनती है। माइग्रेन होने पर यह आपके जीवन के बाकी हिस्से को भी बुरी तरह से प्रभावित करता है। वर्तमान समय में सिरदर्द की परेशानी एक आम समस्या है। सिरदर्द के वैसे तो कई कारण हो सकते हैं। लेकिन लंबे समय तक तनाव में रहने या फिर तनावपूर्ण माहौल में काम करने जैसी स्थिति बनने पर वर्किंग प्रोफेशनल्स को सिरदर्द की समस्या होती है। हांलाकि आजकल अधिक लोगों में माइग्रेन की समस्या को भी देखा जा रहा है। जो आगे चलकर चिड़चिड़ेपन और गुस्से का कारण बनती है। माइग्रेन होने पर यह आपके जीवन के बाकी हिस्से को भी बुरी तरह से प्रभावित करता है। ऐसे में अगर आप भी इस समस्या से परेशान हैं, तो बता दें कि यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको माइग्रेन के दर्द से राहत पाने के कुछ घरेलू उपायों के बारे में बताने जा रहे हैं।

दो तरह का होता है माइग्रेन का दर्द

आपको बता दें कि माइग्रेन की स्थिति दो प्रकार की होती है। इसमें एक क्लासिक माइग्रेन और दूसरा नॉन क्लासिक माइग्रेन है। क्लासिक माइग्रेन की स्थिति में तेज दर्द होने से पहले कई लक्षण देखने को मिलते हैं। जैसे धुंधला दिखाई देना और हल्का सिरदर्द होना आदि। वहीं नॉन क्लासिक माइग्रेन की स्थिति में समय-समय पर सिर में तेज दर्द होता है।

लौंग का पाउडर : अगर आपको माइग्रेन के कारण कभी तेज सिरदर्द होता है, तो आपके लिए लौंग का पाउडर बहुत फायदेमंद है। लौंग के पाउडर में नमक मिलाकर उसे दूध के साथ पिएं। इससे आपको फौरन आराम मिलेगा।

अदरक : अदरक कई औषधीय गुणों से भरपूर होता है। अदरक के सेवन से आप माइग्रेन के दर्द में फौरन राहत पा सकते हैं। इसके लिए आप अदरक के रस का शहद के साथ सेवन करें। वहीं किसी भी रूप में अदरक का सेवन आपको फायदा पहुंचाएगा।

दालचीनी : माइग्रेन के दर्द में दालचीनी काफी ज्यादा फायदेमंद होती है। लेकिन कई लोग दर्द के दौरान दालचीनी को खाने की गलती करते हैं। दर्द होने पर आप दालचीनी को पानी के साथ पीसकर आधे घंटे तक माथे पर रखें। इससे आपको आराम मिलेगा।

गर्म तेल की मालिश : माइग्रेन के दर्द से आराम पाने के लिए सरसों या नारियल के तेल को गर्म कर सिर की मसाज करें। सिर के अलावा आप अपने हाथ-पैरों और कंधे की मालिश भी करवाएं। यह तनाव को कम करने के साथ माइग्रेन के दर्द में भी राहत देता है।

हार्मोनल असंतुलन की समस्या ठीक करने के लिए करें यह योगासन

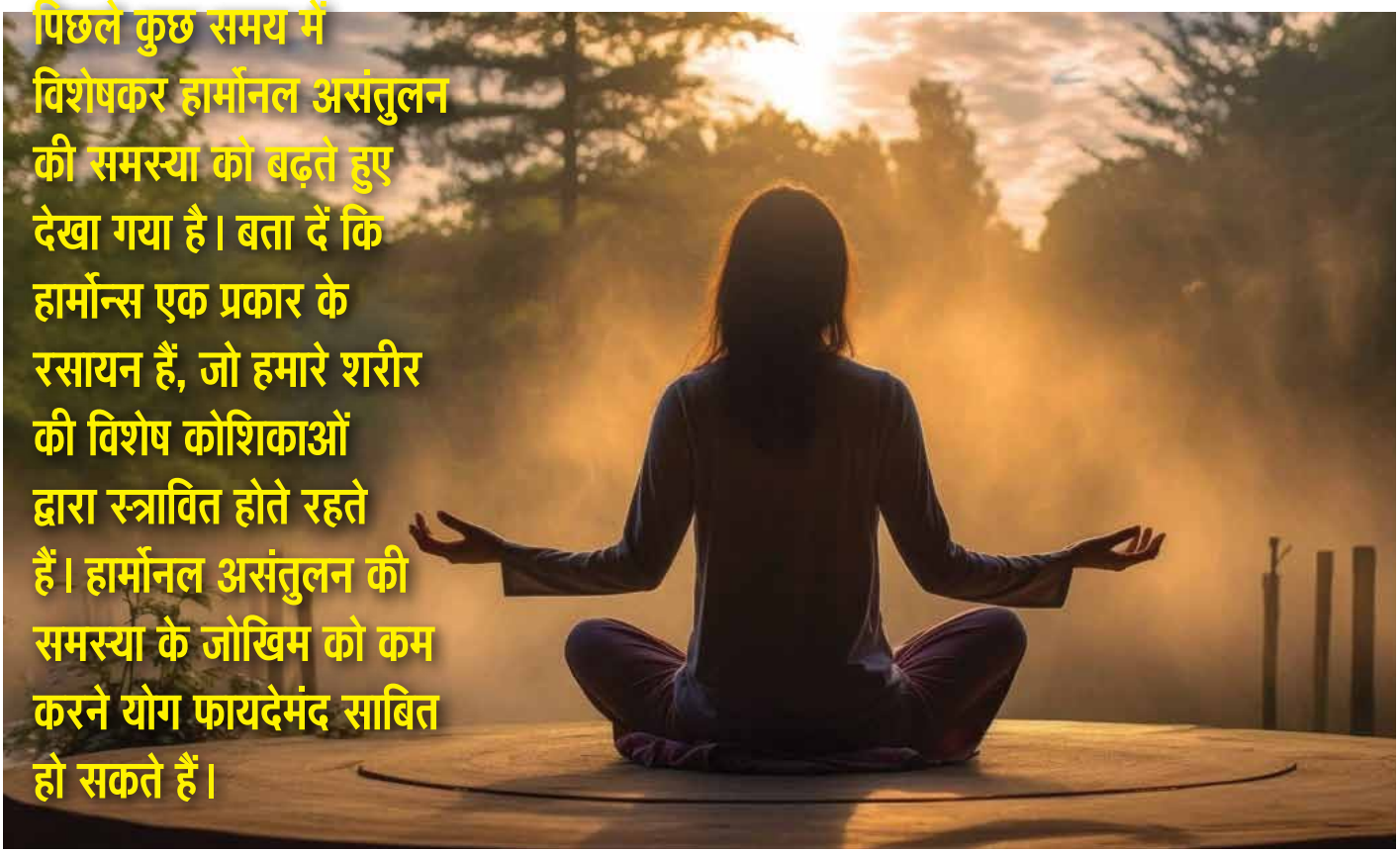

पिछले कुछ समय में विशेषकर हार्मोनल असंतुलन की समस्या को बढ़ते हुए देखा गया है। बता दें कि हार्मोन्स एक प्रकार के रसायन हैं, जो हमारे शरीर की विशेष कोशिकाओं द्वारा स्त्रावित होते रहते हैं। हार्मोनल असंतुलन की समस्या के जोखिम को कम करने योग फायदेमंद साबित हो सकते हैं।

शरीर के स्वस्थ रहने के लिए हार्मोन्स का संतुलन और पोषक तत्वों का बना रहना बेहद जरूरी माना गया है। इसमें होने वाली किसी भी प्रकार की समस्या हमारे शरीर के लिए कई तरह की दिक्कतों को बढ़ा देती हैं। पिछले कुछ समय में विशेषकर हार्मोनल असंतुलन की समस्या को बढ़ते हुए देखा गया है। बता दें कि हार्मोन्स एक प्रकार के रसायन हैं, जो हमारे शरीर की विशेष कोशिकाओं द्वारा स्त्रावित होते रहते हैं। हार्मोन्स का निर्माण आमतौर पर अंतःस्रावी ग्रंथियों के भीतर होता है।

यह शरीर के विभिन्न हिस्सों में रक्तप्रवाह के माध्यम से संदेश भेजने का काम करते हैं। वहीं हार्मोन्स असंतुलन शारीरिक कार्यप्रणाली को बाधित कर सकती है। हार्मोनल असंतुलन की स्थिति में हमारे शरीर में कई तरह के लक्षण नजर आते हैं। इस दौरान कंधों के बीच चर्बी का बढ़ना-कूबड़, अस्पष्टीकृत थकान, वजन बढ़ना,मांसपेशियों में कमज़ोरी और दर्द जैसी समस्याएं। हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक हार्मोन्स के असंतुलन से बचने के लिए आपको अपनी डेली रूटीन में नियमित रूप से योग-व्यायाम की आदत डालनी चाहिए।

भुजंगासन योग के लाभ

हार्मोनल असंतुलन की समस्या के जोखिम को कम करने के लिए भुजंगासन योग काफी फायदेमंद साबित हो सकता है। रोजाना इस योग का अभ्यास करने से थायराइड

फंक्शन और ओवरी की स्थिति में सुधार होता है। इस आसन को करने से हार्मोन्स की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है। इसके अलावा इस य़ोगासन को करने से कमर दर्द, पीठ दर्द में राहत देने के साथ पेट के अंगों को स्वस्थ रखने में भी सहायक माना जाता है।

शलभासन योग के फायदे

हार्मोनल इंबैलेंस की दिक्कतों को कम करने में शलभासन योग भी फायदेमंद होता है। इस योग को रोजाना अपनी डेली रूटीन में शामिल करने से हार्मोनल असंतुलन के कारण महिलाओं में होने वाली पीसीओएस जैसी दिक्कत को भी कम करने में सहायक होता है। शलभासन योग को करने से ना सिर्फ शारीरिक बल्कि मानसिक स्वास्थ्य भी होता है।

कैमल पोज से मिलता है लाभ

हार्मोनल इंबैलेंस की स्थिति में हेल्थ एक्सपर्ट्स कैमल पोज के नियमित अभ्यास की सलाह देते हैं। बता दें कि कैमेल पोज को उष्ट्रासन भी कहते हैं। हार्मोनल इम्बैलेंस की वजह से मासिक धर्म चक्र में अनियमितता आ जाती है। ऐसे में इस योग को करने से मासिक धर्म चक्र में होने वाली अनियमितता कम होती है और हमारे शरीर में रक्त संचार सही रहता है।

...खांसी-जुकाम होने पर इन फूड्स को अपनी डाइट में करें शामिल

सर्दी-खांसी होने पर कई तरह के परहेज करने चाहिए। इस दौरान ठंडा पानी और उन चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए। जिससे खांसी की समस्या और बढ़ जाए। ऐसे में जरा सी लापरवाही आपकी जुकाम-खांसी को और बढ़ा सकता है।

सर्दियों के मौसम में हम सभी को अपना खास ख्याल रखना पड़ता है। क्योंकि इस मौसम में कई तरह की बीमारियां होने का खतरा रहता है। लेकिन इसके बाद भी सर्दी के मौसम में लोगों को अक्सर खांसी-जुकाम जैसी समस्या हो जाती है। सर्दी-खांसी होने पर कई तरह के परहेज करने चाहिए। इस दौरान ठंडा पानी और उन चीजों का सेवन नहीं करना चाहिए। जिससे खांसी की समस्या और बढ़ जाए। ऐसे में जरा सी लापरवाही आपकी जुकाम-खांसी को और बढ़ा सकता है। बता दें कि असल में सर्दी खांसी जुकाम कोई गंभीर बीमारी नहीं है। हांलाकि इससे रोजमर्रा के काम जरूर प्रभावित होते हैं। इसलिए आज हम इस आर्टिकल के लिए आपको बताने जा रहे हैं कि खांसी-जुकाम होने पर किन हेल्दी फूड का सेवन कर सकते हैं। जिनके सेवन से आप सर्दी खांसी के लक्षणों से राहत पा सकते हैं।

अदरक

सर्दी के मौसम में खांसी-जुकाम होने पर अदरक का सेवन करना चाहिए। अदरक के सेवन से सर्दी के सभी लक्षणों से राहत मिलती है। बता दें कि अदरक गर्म होने के साथ इसमें एंटीइन्फ्लेमेटरी प्रॉपर्टीज से भरपूर होता है। यह जुकाम, बंद नाक, खांसी और गले के दर्द से राहत देने का काम करती है। खांसी-जुकाम से राहत पाने के लिए आप अदरक को पानी में चाय की तरह उबाल कर इसका सेवन कर सकते हैं। या फिर कच्ची अदरक का शहद के साथ भी सेवन कर सकते हैं।

चिकन सूप : सर्दी-खांसी की समस्या होने पर लोग चिकन सूप पीने की भी सलाह देते हैं। लेकिन इसके सेवन के पीछे का सही तरीका जरूर पता होना चाहिए। सर्दी और खांसी के लक्षणों से निजात पाने और बंद नाक को खोलने के लिए चिकन सूप अच्छा होता है। चिकन सूप में एंटीइन्फ्लेमेटरी प्रॉपर्टीज पाई जाती है। जो सर्दी के लक्षणों से राहत देने में मददगार होती है।

लहसुन

हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक सर्दी के लक्षणों को कम करने के लिए लहसुन का सेवन किए जाने की सलाह दी जाती है। सर्दी-खांसी में लहसुन काफी कारगर माना जाता है। सर्दी-खांसी की समस्या होने पर आप लहसुन का सूप के तौर पर या फिर खाने में मिलाकर इसका सेवन कर सकते हैं। इसके सेवन से फ्लू और इंफेक्शन का खतरा भी कम होता है।

जर्म फाइटिंग फूड्स

क्रैनबेरी, ग्रीन टी, लाल प्याज, केल, ब्रोकोली, ब्लूबेरी जैसे सभी फूड्स में एंटीऑक्सिडेंट क्वेरसेटिन पाया जाता है। जो हमारे शरीर की इम्यूनिटी को बढ़ाने का काम करता है और जर्म्स से भी लड़ने में मददगार होता है। ऐसे में सर्दियों के मौसम में खांसी की समस्या होने पर इन हेल्दी फूड्स का सेवन जरूर करना चाहिए। इससे आपको जल्द ही राहत मिलेगी।

पत्नी के श्राप के कारण नहीं होती है ब्रह्मा जी की पूजा

पुष्कर में है एकमात्र मंदिर

सनातन धर्म में ब्रह्मा, विष्णु और महेश का महत्व बहुत ज्यादा है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि भारत में ब्रह्मा जी का केवल एक ही मंदिर है। भारत में ब्रह्मा जी का एक मंदिर हैं। जिसके पीछे एक प्रचलित कहानी है।

सनातन धर्म में ब्रह्मा, विष्णु और महेश का महत्व बहुत ज्यादा है। जहां श्रीहरि विष्णु को जगत का पालनहार, भगवान शिव को संसार के संहारक और ब्रह्मा जी को संसार के रचनाकार के रूप में जाना जाता है। हमारे देश में विष्णु जी और शिव जी के कई मंदिर स्थित है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि भारत में ब्रह्मा जी का केवल एक ही मंदिर है। भारत में ब्रह्मा जी का एक मंदिर हैं। जिसके पीछे एक प्रचलित कहानी है। आइए जानते हैं संसार के रचनाकार ब्रह्मा जी का सिर्फ एक मंदिर क्यों है।

पद्म पुराण के मुताबिक एक बार वज्रनाश नामक राक्षस ने धरती पर उत्पात मचा रखा था। वज्रनाश के अत्याचार इतने ज्यादा बढ़ गए थे कि ब्रह्मा जी को तंग आकर उसका वध करना पड़ा। जब ब्रह्मा जी ने उस दैत्य का वध किया तो उनके हाथों से तीन जगहों पर कमल का पुष्प गिरा। वह कमल का पुष्प जिन तीन जगहों पर गिरा, वहां पर तीन झीलें बन गईं। जिसके बाद उस स्थान का नाम पुष्कर पड़ गया। वहीं संसार की भलाई के लिए ब्रह्मा जी ने इस स्थान पर यज्ञ करने का फैसला लिया।

जब ब्रह्मा जी यज्ञ करने के लिए पुष्कर पहुंचे तो उनकी पत्नी सावित्री समय पर नहीं पहुंच पाईं। यज्ञ पूरा होने के

लिए ब्रह्मा जी के साथ सावित्री जी का साथ में होना बहुत जरूरी था। ऐसे में जब सावित्री जी समय पर यज्ञ में नहीं पहुंची तो ब्रह्मा जी ने एक एक गुर्जर समुदाय की कन्या गायत्री से विवाह कर लिया। जिसके बाद मौके पर देवी सावित्री भी मौके पर पहुंच गए। जब सावित्री ने ब्रह्मा जी के बगल में गायत्री को बैठे देखा तो वह क्रोधित हो गईं।

फिर ब्रह्मा जी को सावित्री जी ने श्राप दिया कि वो एक देवता जरूर हैं लेकिन कोई भी उनकी पूजा नहीं करेगा। यह सुन मौके पर मौजूद देवगण अचंभित हो गए। सभी ने सावित्री से निवेदन किया कि वह अपना श्राप वापस ले लें। लेकिन सावित्री जी ने ऐसा करने से मना कर दिया। हांलाकि जब सावित्री का गुस्सा शांत हुआ तो उन्होंने कहा कि ब्रह्मा जी की पूजा पुष्कर में की जाएगा। वहीं जब कोई दूसरा व्यक्ति ब्रह्मा जी का मंदिर बनाएगा तो उस मंदिर का विनाश हो जाएगा।

इस काम में ब्रह्मा जी की विष्णु जी ने भी मदद की। जिसके कारण देवी सरस्वती ने भी जगत के पालनहार विष्णु को श्राप दे दिया कि उन्हें भी अपनी पत्नी से विरह का कष्ट सहना पड़ेगा। इसी वजह से भगवान विष्णु ने श्रीराम का अवतार लिया और 14 साल के वनवास के दौरान उन्हें पत्नी वियोग सहना पड़ा था। इसीलिए सिर्फ पुष्कर में ब्रह्मा जी का एक मंदिर है। मान्यता के मुताबिक पुष्कर में ब्रह्मा जी का यह मंदिर एक हजार दो सौ साल पहले बनवाया गया।

...भारत को एक सूत्र में पिरोने में सफल रही है सनातन संस्कृति

स नातन संस्कृति ने न केवल भारत को एकता के सूत्र में पिरोया है बल्कि पूरे विश्व को ही भारत के साथ जोड़ा है। अब तो भारत में 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के रूप में एक महत्वपूर्ण अध्याय लिखा जा रहा है। भारत ने जी-20 समूह के देशों की अपनी अध्यक्षता के दौरान कई अतुलनीय कार्य किए हैं।

भारतीय सनातन संस्कृति, सभ्यता और परम्पराएं विश्व में सबसे अधिक प्राचीन मानी जाती है। भारतीय संस्कृति को विश्व की अन्य संस्कृतियों की जननी भी माना गया है। भारत की संस्कृति और सभ्यता आदि काल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर अमर बनी हुई है। भारत में गीत संगीत, नाटक परम्परा, लोक परम्परा, धार्मिक संस्कार, अनुष्ठान, चित्रकारी और लेखन के क्षेत्र में एक बहुत बड़ा संग्रह मौजूद है जो मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में जाना जाता है। इसे संजोने, संवारने और निखारने का महती प्रयास हाल ही के समय में बहुत मजबूती के साथ किया जा रहा है। विशेष रूप से पिछले एक दशक में भारत की संस्कृति के प्रचार प्रसार के लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं जिससे न केवल विश्व के लोगों को देश के माटी की सौंधी खुशबू मिली है बल्कि पूरी दुनिया भारतीय संस्कृति को जानने एवं समझने का प्रयास भी कर रही है। भारत का अतीत वर्तमान से भी सुंदर एवं प्रभावशाली रहा है।

भारत ने राजनैतिक स्वतंत्रता 75 वर्ष पूर्व ही प्राप्त कर ली थी, परंतु भारत की सनातन संस्कृति आदि काल से चली आ रही है एवं लाखों वर्ष पुरानी है। भारत को 'सोने की चिड़िया' के रूप में जाना जाता रहा है और भारतीय सनातन संस्कृति का लोहा पूरे विश्व ने माना है। धर्म, दर्शन, विरासत, तीज, त्यौहार, जायका और अनेकता में एकता के दर्शन करने को पूरी दुनिया भारत की ओर आकर्षित होती रही है। भारत को देव भूमि भी कहा गया है, यह अर्पण की भूमि है, यह तर्पण की भूमि है और यह समर्पण की भूमि है। भारत आदि काल से ही एक जीता जागता राष्ट्र पुरुष है, यह मात्र एक जमीन का टुकड़ा नहीं है। भारत के कंकड़ कंकड़ में शंकर का वास बताया जाता है। हाल ही के कुछ वर्षों में भारत के आर्थिक विकास में विरासत पर भी पूरा ध्यान दिया जा रहा है और भारत में आर्थिक विकास के साथ ही सांस्कृतिक विकास पर भी पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। जिसके चलते अन्य देशों की तुलना में भारत की आर्थिक विकास दर मजबूत बनी हुई है। बल्कि अब तो अन्य कई देश, विकसित देशों सहित, भी अपने आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक समस्याओं के हल हेतु एवं अपने आर्थिक विकास को गति देने के उद्देश्य से भारतीय सनातन संस्कृति की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

हाल ही के समय में भारत की सांस्कृतिक विरासत को सहेजने, संवारने और उसकी संवृद्धि के लिए विशेष रूप से पिछले दशक के दौरान अथक प्रयास किए गए हैं। हजारों वर्षों की भारतीय सभ्यता और संस्कृति का आकर्षण ही कुछ ऐसा है कि कितने ही झंझावात क्यों न आए परंतु भारतीय सनातन संस्कृति अटूट रही। हालांकि कुछ देशों, जैसे ग्रीक, यूनान, ईरान आदि, की तो सभ्यताएं ही समूल नष्ट हो गईं। भारत में अभी हाल ही में आजादी के 75 वर्षों के बाद अमृत काल मनाया गया है। आजादी के अमृत महोत्सव की आधिकारिक यात्रा 12 मार्च 2021 को प्रारम्भ हुई। आजादी की 75वीं वर्षगांठ के लिए 75 सप्ताह की गिनती शुरू हुई थी जो उत्सवों के साथ निरंतर गतिमान रही। इस बीच उत्सवों की लम्बी श्रृंखला चली और 15 अगस्त 2023 तक यह यात्रा निर्बाध गति से चलती रही। आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान 166,000 से अधिक कार्यक्रम देश और दुनिया में आयोजित किए गए। जिसमें हर घर तिरंगा, वन्दे भारतम, कलांजलि जैसे कई बड़े कार्यक्रम भी शामिल रहे।

अमृत महोत्सव के पांच स्तम्भ हैं- स्वतंत्रता संग्राम@ 75, विचार@ 75, समाधान@ 75, कार्य@ 75, उपलब्धियां@ 75। जनभागीदारी से मनाया जा रहा आजादी का अमृत महोत्सव, देश की इन 75 वर्षों की उपलब्धियों को पूरी दुनिया के सामने रखने का एक प्रयास है और इसके साथ ही अगले 25 वर्षों के लिए संकल्पों की रूपरेखा भी रखी जा रही है।

रणदीप गर्लफ्रेंड लिन लैशराम संग अलग अंदाज में रचा रहे शादी...

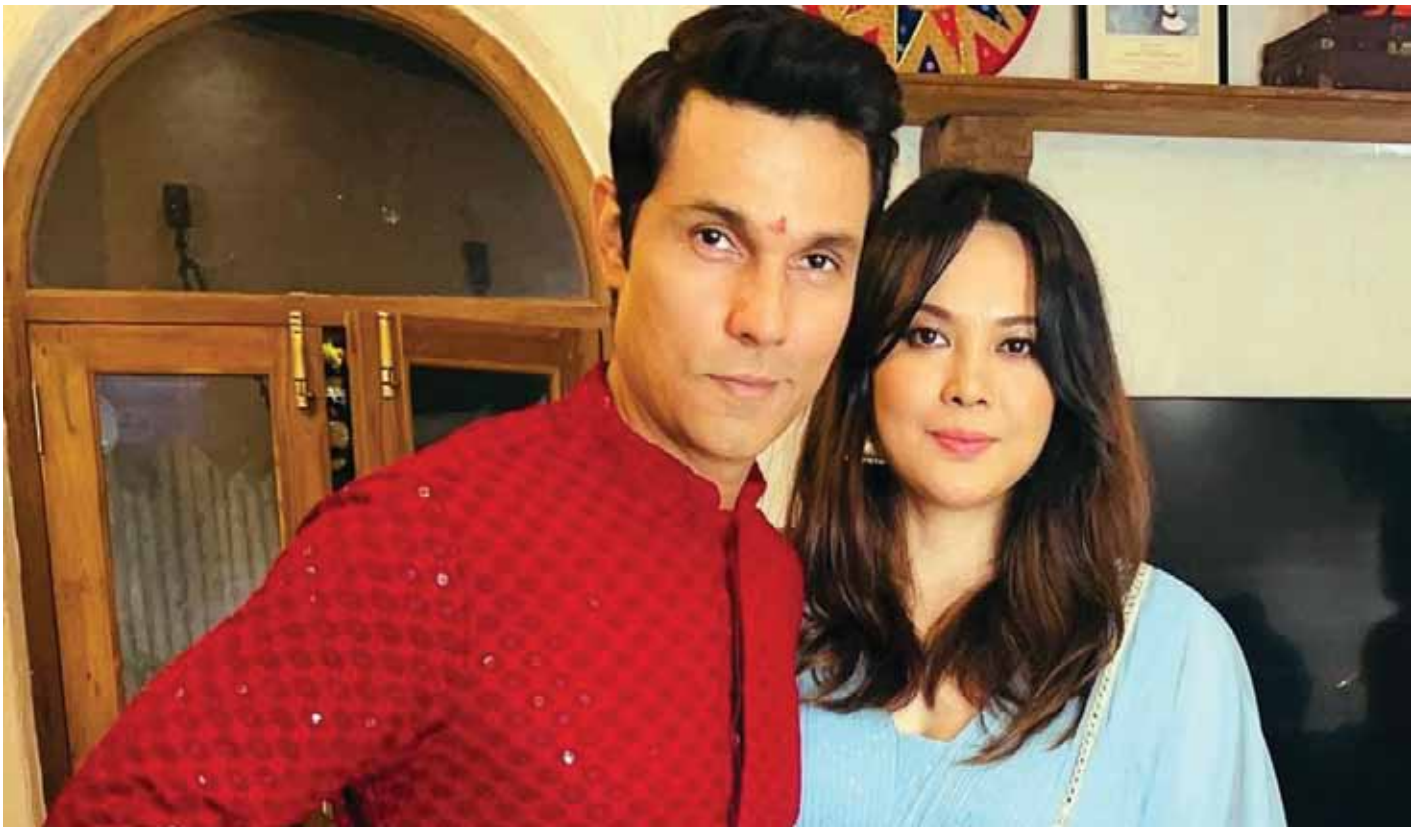

बॉलीवुड एक्टर रणदीप हुडा इसी महीने अपनी लॉन्ग टाइम गर्लफ्रेंड लिन लैशराम से शादी करने जा रहे हैं। अब रणदीप हुडा और लिन लैशराम की शादी की तारीख, मेहमान, वेन्यू से लेकर शादी की थीम तक की जानकारी सामने आ गई है।

बॉलीवुड एक्टर रणदीप हुडा इसी महीने अपनी लॉन्ग टाइम गर्लफ्रेंड लिन लैशराम से शादी करने जा रहे हैं। अब रणदीप हुडा और लिन लैशराम की शादी की तारीख, मेहमान, वेन्यू से लेकर शादी की थीम तक की जानकारी सामने आ गई है। एक्टर की शादी दिल्ली, उदयपुर, चंडीगढ़ या मुंबई में नहीं बल्कि मणिपुर में होगी। इसके पीछे एक खास वजह है। आइए आपको बताते हैं कि आखिर क्यों रणदीप हुडा ने शादी के लिए मणिपुर को चुना और उनकी शादी से जुड़ी कई अन्य जानकारियां।

रणदीप हुडा और लिन लैशराम की शादी की तारीख 29 नवंबर 2023 है। दोनों मणिपुरी अंदाज में ही शादी करेंगे। दरअसल, एक्टर की होने वाली पत्नी लिन मणिपुर से आती हैं। वहीं, रणदीप हुडा हरियाणा के रोहतक के रहने वाले हैं।

सूत्रों ने बताया कि यह जोड़ा मणिपुरी अंदाज में फेरे लेगा। कपड़ों से लेकर खाने तक सब कुछ नॉर्थ ईस्ट स्टाइल में होगा। इतना ही नहीं बल्कि शादी में मणिपुरी संस्कृति और परंपरा की खूब झलक देखने को मिलेगी। उसी अंदाज में नाच-गाना भी होगा।

रणदीप हुडा और लिन लैशराम की शादी की थीम

को लेकर कहा जा रहा है कि यह पूरी तरह से पौराणिक कथाओं से जुड़ी होगी। जैसे महाभारत में अर्जुन और चित्रांगदा का विवाह होता है। ठीक उसी तरह लिन भी अपने सपनों के राजकुमार से शादी करेंगी।

शनिवार और रविवार को रणदीप हुडा और लिन लैशराम शादी के लिए मणिपुर रवाना होंगे। शादी में सिर्फ करीबी दोस्तों और रिश्तेदारों को ही बुलाया गया है। शादी से पहले के फंक्शन भी होंगे जिसमें दोनों के परिवार वाले शामिल होने वाले हैं। कहा तो यह भी जा रहा है कि ग्रैंड शादी के बाद रणदीप हुडा मुंबई में अपने दोस्तों और को-स्टार्स के लिए एक ग्रैंड रिसेप्शन का आयोजन करने वाले हैं। शादी के रिसेप्शन की तारीख अभी सामने नहीं आई है लेकिन कहा जा रहा है कि यह दिसंबर में होने वाला है।

रणदीप हुडा अपनी होने वाली पत्नी से 10 साल बड़े हैं : मालूम हो कि रणदीप हुडा पिछले कई सालों से लिन को डेट कर रहे हैं। इस कपल के बीच 10 साल का अंतर है। एक्टर 47 साल के हैं और लिन 37 साल की हैं। वर्क फ्रंट की बात करें तो रणदीप हुडा जल्द ही स्वतंत्र वीर सावरकर में नजर आएंगे।

मणिपुरी शादी क्या है?

मणिपुरी शादियाँ दुल्हन के घर पर होती हैं। इस शादी में समारोह की शुरुआत दूल्हे और उसके परिवार के दुल्हन के घर पहुंचने और दुल्हन के परिवार की 3 बड़ी महिला सदस्यों द्वारा स्वागत करने से होती है। फिर दूल्हे के परिवार को केले के पत्तों से ढकी एक थाली में पान और सुपारी भेंट की जाती है। फिर विवाह मंडप या बैठने की व्यवस्था तुलसी के पौधे के चारों ओर की जाती है और यहां तक कि अनुष्ठानों का पालन भी तुलसी के पौधे के आसपास किया जाता है।

यामी गौतम ने अपना आगामी मोस्ट अवेटिड प्रोजेक्ट पूरा किया

करियर की 'सबसे महत्वपूर्ण फिल्म' बताया

यामी गौतम ने सोशल मीडिया पर अपनी अगली अनाम फिल्म के रैप-अप शेड्यूल से एक खुश तस्वीर साझा की...

यामी गौतम भारतीय सिनेमा की सबसे प्रतिभाशाली अभिनेत्रियों में से एक हैं और अपनी कला से हमें प्रभावित करने में कभी असफल नहीं होती हैं। अग्रणी अभिनेत्री ने 'लॉस्ट', 'ए थर्सडे', 'चोर निकल के भागा' और हाल ही में रिलीज़ हुई ओएमजी 2 में अपने आश्चर्यजनक प्रदर्शन से एक अभिनेत्री के रूप में अपनी सीमा साबित की है। ओएमजी 2 ने बॉक्स ऑफिस पर 150 करोड़ रुपये से अधिक की कमाई की।

यामी गौतम के प्रशंसक और दर्शक आगामी फिल्मों में उनकी आकर्षक स्क्रीन उपस्थिति देखने का इंतजार कर रहे थे। 16 नवंबर को यामी ने सोशल मीडिया पर अपनी अगली फिल्म की रिलीज की घोषणा की और इसे अपने करियर की सबसे महत्वाकांक्षी फिल्मों में से एक बताया।

सोशल मीडिया पर यामी गौतम ने अपनी अगली अनाम फिल्म के रैप-अप शेड्यूल की खुश तस्वीर साझा की और कैप्शन दिया, 'मेरे करियर की सबसे महत्वपूर्ण फिल्मों में से एक की शूटिंग पूरी हो गई! पूरे निर्देशन, प्रोडक्शन टीम और हमारी अद्भुत फिल्म को धन्यवाद।

उन्होंने कश्मीर के स्थानीय लोगों के प्रति भी आभार व्यक्त किया. उन्होंने लिखा, "कश्मीर के स्थानीय लोगों, सुरक्षा बलों और अधिकारियों को धन्यवाद, जिन्होंने पूरे शेड्यूल के दौरान हमारा इतना अच्छे से ख्याल रखा। तुलमुला में दिव्य माता खीर भवानी का आशीर्वाद लेने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। आशा है कि हम इस विशाल फिल्म के साथ अपने दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करने में सक्षम होंगे। जल्द ही घोषणा।'

हालांकि चरित्र का विवरण निश्चित रूप से गुप्त रखा गया है, लेकिन यामी को सिनेमाघरों में एक और शानदार प्रदर्शन के साथ दर्शकों का मनोरंजन करते देखना दिलचस्प होगा। इस बीच वर्कफ्रंट की बात करें तो यामी 'धूम धाम' में भी नजर आएंगी।

शुभमन गिल संग डीपफेक फोटो वायरल होने पर भड़का सारा का गुस्सा

क्रिकेट के दिग्गज सचिन तेंदुलकर की बेटी सारा तेंदुलकर क्रिकेट या बॉलीवुड से सीधे जुड़े बिना सोशल मीडिया पर सबसे चर्चित हस्तियों में से एक रही हैं। हालाँकि, भारतीय क्रिकेटर शुभमन गिल के साथ उनकी डेटिंग की अफवाहों ने हाल के दिनों में बड़े पैमाने पर चर्चा बटोरी है।

क्रिकेट के दिग्गज सचिन तेंदुलकर की बेटी सारा तेंदुलकर क्रिकेट या बॉलीवुड से सीधे जुड़े बिना सोशल मीडिया पर सबसे चर्चित हस्तियों में से एक रही हैं। हालाँकि, भारतीय क्रिकेटर शुभमन गिल के साथ उनकी डेटिंग की अफवाहों ने हाल के दिनों में बड़े पैमाने पर चर्चा बटोरी है। इसके अलावा, लोकप्रिय हस्तियों की डीपफेक तस्वीरें और वीडियो इन दिनों सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं, कभी-कभी सत्यापित हैंडल से भी। हाल ही में शुभमन गिल और सारा तेंदुलकर की एक तस्वीर इंटरनेट पर सामने आई, जिसने नेटिज़न्स को चौंका दिया कि इस तकनीक का किस हद तक दुरुपयोग किया जा सकता है। सारा की असली तस्वीर में उनके भाई अर्जुन तेंदुलकर हैं, जबकि तस्वीर से छेड़छाड़ की गई है और इसमें दिखाया जा रहा है कि सारा तेंदुलकर शुभमन गिल को गले लगा रही हैं। मॉर्फर्ड तस्वीरों और वीडियो या डीपफेक के मुद्दे ने हाल ही में ध्यान आकर्षित किया। इससे पहले रश्मिका मंदाना, कटरीना कैफ और काजोल का एक वीडियो ऑनलाइन वायरल हो गया।

अब, सारा तेंदुलकर आगे आई हैं और 'फर्जी रूप धारण करने' और 'लोगों को गुमराह करने' के इरादे से बनाए गए उन फर्जी खातों की आलोचना की है। उन्होंने इंस्टाग्राम पर स्टोरी सेक्शन में एक लंबा नोट लिखा और लिखा, ''सोशल मीडिया हम सभी के लिए अपने सुख, दुख और दैनिक गतिविधियों को साझा करने के लिए एक अद्भुत स्थान है। हालाँकि, प्रौद्योगिकी का दुरुपयोग देखना चिंताजनक है क्योंकि यह इंटरनेट की सच्चाई और प्रामाणिकता से दूर ले जाता है। मैंने अपनी कुछ डीपफेक तस्वीरें देखी हैं जो वास्तविकता से बहुत दूर हैं। उन्होंने कहा 'एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर कुछ खाते स्पष्ट रूप से उसका प्रतिरूपण करने और लोगों को गुमराह करने के इरादे से बनाए गए हैं। मेरा एक्स पर कोई खाता नहीं है और मुझे उम्मीद है कि एक्स ऐसे खातों को देखेगा और उन्हें निलंबित कर देगा।

शुभमन गिल के साथ सारा की डीपफेक तस्वीरें अक्सर सोशल मीडिया पर देखी जाती हैं और जो हाल ही में सुर्खियों में आई वह इस साल सितंबर में उनके भाई अर्जुन के 24वें जन्मदिन के मौके की थी।

प्रभास करेंगे अनुष्का से शादी?

परिवार को रिश्ता हुआ मंजूर है, जल्द बजेगी घर में शहनाई...

प्रभास इंडस्ट्री के सबसे योग्य कुंवारे लोगों में से एक हैं और उनके प्रशंसक, दोस्त और परिवार चाहते हैं कि वह आखिरकार घर बसा लें। प्रभास का नाम उनकी बाहुबली की सह-कलाकार अनुष्का शेट्टी के साथ वर्षों से जोड़ा जाता रहा है। जब उन्होंने राजामौली के साथ काम करना शुरू किया तो उनके रिश्ते की अफवाहें सुर्खियां बनीं। और आज तक प्रशंसकों को लगता है कि वे एक-दूसरे के लिए ही बने हैं। और अब ऐसा लगता है कि प्रभास, अनुष्का और उनके परिवार भी ऐसा ही महसूस करते हैं, और वे चाहते हैं कि वे अपने रिश्ते को दूसरे स्तर पर ले जाएं।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, प्रभास और अनुष्का शेट्टी दोनों के परिवार के लोग चाहते हैं कि वे एक साथ रहें और अपने रिश्ते को और भी गहरा बनाएं। सालार स्टार के एक करीबी सूत्र ने एंटरटेनमेंट पोर्टल को बताया कि उनका परिवार उनके बारे में चिंतित है, और वे अनुष्का शेट्टी के उनके साथी बनने से खुश हैं, क्योंकि उन्हें भी लगता है कि वे एक साथ अच्छे लगते हैं। हालाँकि, अनुष्का और प्रभास दोनों तैयार नहीं हैं, और वे सिर्फ दोस्त बनकर खुश हैं। एक मनोरंजन पोर्टल के करीबी सूत्र का कहना है, 'वह इस समय सिंगल हैं और वह अनुष्का को डेट नहीं कर रहे हैं। वे बहुत करीबी दोस्त हैं और उनके परिवार के सदस्य चाहते हैं कि यह कुछ और बढ़े। लेकिन वे फिलहाल तैयार नहीं हैं।' उसके लिए। वे इस समय करीबी दोस्त हैं, और हमें यकीन नहीं है कि यह बाद में प्यार में बदल जाएगा, लेकिन वे फिलहाल इस पर विचार नहीं कर रहे हैं।'

प्रशंसक जीवन भर के इस दृश्य का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। प्रभास को हाल ही में उनकी आदिपुरुष सह-कलाकार कृति सेनन के साथ जोड़ा गया था, और बाद में अभिनेत्री ने इसका खंडन किया और इसे आधारहीन अटकलें बताया। हालाँकि, जब हम अनुष्का और प्रभास के बारे में बात करते हैं, तो उन्होंने एक लंबा सफर तय किया है, और उद्योग के कई अंदरूनी सूत्रों का मानना है कि वे सिर्फ दोस्तों से कहीं अधिक हैं। हम तो बस इतना ही कह सकते हैं कि आग के बिना धुंआ नहीं होता।

तेलुगु स्टार प्रभास के अपनी बाहुबली की सह-कलाकार अनुष्का शेट्टी के साथ डेटिंग को लेकर लगातार अटकलें लगाई जा रही हैं। हालाँकि, दोनों ने कहा है कि वे सिर्फ अच्छे दोस्त हैं और इससे ज्यादा कुछ नहीं। हाल ही में, जब प्रभास ने अपना 43वां जन्मदिन मनाया, तो ऐसी खबरें सामने आईं कि उनका परिवार उन्हें घर बसाने पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। कथित तौर पर, अनुष्का के साथ अपने रिश्ते को अगले स्तर पर ले जाने पर विचार करने के लिए उनके परिवार की ओर से कुछ हद तक दबाव है। घर बसाने के विचार के प्रति खुले होने के बावजूद, प्रभास कथित तौर पर किसी से नहीं मिले हैं जिससे वह शादी करना चाहते हैं।

प्रभास-अनुष्का की वैवाहिक संभावनाओं को लेकर चर्चा

खैर, फिल्म बाहुबली में अपनी भूमिका के लिए प्रसिद्ध प्रभास की वैवाहिक संभावनाओं को लेकर मनोरंजन उद्योग में काफी चर्चा है। अभी कुछ दिन पहले, अनुष्का शेट्टी के साथ प्रभास की कुछ मंत्रमुग्ध कर देने वाली एआई-जनित छवियां इंटरनेट पर व्यापक रूप से प्रसारित होने लगीं। तस्वीरों में दो अभिनेताओं को दूल्हा और दुल्हन के रूप में सजे हुए, पारंपरिक रूप से सजाए गए मंडप के भीतर शान से बैठे हुए दिखाया गया है। 43 वर्षीय अभिनेता फिलहाल निर्देशक मारुति की फिल्म की शूटिंग में व्यस्त हैं। इसके अलावा वह नाग अश्विन की फिल्म कल्कि 2898 AD में भी नजर आएंगे। अभिनेता प्रशांत नील द्वारा निर्देशित फिल्म सालार : पार्ट 1 - सीजफायर में नजर आएंगे। यह फिल्म अब 22 दिसंबर को क्रिसमस के मौके पर रिलीज होने जा रही है। होम्बले फिल्म्स स्टारर सबसे बहुप्रतीक्षित एक्शन फिल्म है और निर्माताओं ने हाल ही में प्रभास के जन्मदिन पर एक नया पोस्टर जारी किया है।

डबरा... विजयदशमी के पावन पर्व पर सनातन संस्कृति के अनुरूप विधि -विधान और मंत्र उच्चारण के साथ गिजोरा थाना प्रभारी सुमित सुमन ने अपने अधिनिस्त पुलिस कर्मियों के साथ किया शास्त्रों गार में पूजन।

'ओम त्रयंबकं यजामहे सुगंधिम पुष्टि-वर्धनम्
उर्वारुकमिव बंधनान मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥'

अर्थ : 'हम तीन आंखों वाले भगवान की पूजा करते हैं जो सुगंधित हैं और जो सभी प्राणियों का पोषण और पोषण करते हैं। जैसे पका हुआ खीरा अपने बंधन से मुक्त हो जाता है, वैसे ही वह हमें अमरता के लिए मृत्यु से मुक्त कर दे।'